रस्किन बॉण्ड

# रंग-बिरंगी कहानियाँ

रस्किन बॉण्ड

# रंग-बिरंगी कहानियाँ

# रंग-बिरंगी कहानियाँ

रस्किन बॉण्ड

प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
ISO 9001:2008 प्रकाशक

# विषय-क्रम

भूमिका

1. महापलायन
2. मछली पकड़ने का झंझट
3. सुसाना के सात पति
4. परियों का पहाड़
5. वह कौन थी?
6. बिन चेहरे का आदमी
7. गरुड़ की आँखें
8. कड़वी गूजबेरी
9. जावा से पलायन
10. अँधेरी दुनिया की हसीन लड़की
11. मौत का सौदागर
12. अमराई में फाँसी
13. बिल्ली की आँखें
14. बिन्या चली गई
15. प्रेम और क्रिकेट
16. हमें किसी-न-किसी को प्यार करना चाहिए
17. दादाजी और शुतुरमुर्ग की लड़ाई
18. टेढ़े-मेढ़े रास्तों से सबक
19. चाचा केन के साथ समुद्री यात्रा
20. मेरा विफल ऑमलेट और अन्य बरबादिया
21. खून का प्यासा अदभुत प्राणी
22. एक क्रिस्टल बॉल में : मसूरी का एक रहस्य
23. अच्छा काम किया
24. भूचाल

# भूमिका

"और क्या आप अब भी लिख रहे हैं?" इस एक सवाल से मुझे हमेशा चिड़चिड़ाहट होती है।

यह ऐसा ही है जैसे मुझसे कोई पूछे कि क्या मैं अभी भी जिंदा हूँ; क्योंकि यदि मैं लेखन न करूँ तो संभवत: जीवित ही न रहूँ। मैं शायद एक सब्जी बन जाऊँगा, मानसिक रूप से अक्षम न हो जाऊँ या फिर गरीबी रेखा के नीचे ही न आ जाऊँ! नि:संदेह मैं आध्यात्मिक रूप से मृत हो जाऊँगा, क्योंकि शब्द ही मेरा जीवन-खून है। मेरा मतलब लिखित शब्द से है। मेरे बोले हुए शब्द बहुत कम हैं, लेकिन लिखे हुए शब्द ढेर सारे हैं; और यही सच है।

मैं यह पेज लिख रहा हूँ, इस वक्त मेरे कमरे की दीवारों की मरम्मत हो रही है, जोर-जोर से हथौड़े मारे जा रहे हैं और प्लास्टर गिरने की आवाजें आ रही हैं। चारों तरफ धूल-ही-धूल है। सारा कमरा अस्त-व्यस्त है। बहुत ही क्षोभ की अवस्था है। पर यह सब मुझे लिखने से नहीं रोक पाता है। मैं एक विवश लेखक हूँ। एक विवश लेखक कहीं पर भी लिख सकता है—एक ट्रेन पर या प्लेटफॉर्म की बेंच पर, शोर-शराबेवाले होटल के लाउंज में, रास्ते के किनारे बने चाय-स्टॉल या फिर स्कूल के खेल के मैदान में।

लो, अब वैष्णवी की रबर बॉल आ गई। वैष्णवी ढाई साल की है, जबकि उसके बड़े भाई-बहन स्कूल गए हुए हैं। वह चाहती है कि मैं उसके साथ खेलूँ। मैंने कहा, 'बाद में। वह मेरे ऊपर बॉल फेंक देती है, जो मेरे कॉफी-कप से टकराते-टकराते बची। उसकी माँ उसको उठाकर किचन में ले जाती है, जहाँ वह खुशी-खुशी चम्मचें गिनने में व्यस्त हो जाती है और मैं लेखन में।

युवा पाठक बुद्धिमान हैं, जो मुझे समय-समय पर पेन की भेंट देते रहते हैं। उन्हें पता है कि मैं अभी भी लिख रहा हूँ और पेन का इस्तेमाल करता हूँ, हालाँकि बॉल पेन या रोलर बॉल पेन का मैं एक फूहड़ आदमी हूँ और फाउंटेन पेन पर आकर रुक जाता हूँ। और हमेशा ही मेरी उँगलियों और कमीज की बाँहों में स्याही लग ही जाती है, और क्यों न हो! आखिर प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता अमिताभ बच्चन एक विशेष खूबसूरत बॉल प्वाइंट पेन की सिफारिश करते हैं और अमूमन मुझे वही दिया जाता है।

मैं एक पुराने फैशन का आदमी हूँ और एक लड़के की उम्र में भी पुराने फैशन का था। मुझे पुराना संगीत, पुरानी किताबें और पुरानी जगहें पसंद हैं। वास्तव में, मैं इतने पुराने फैशन का हूँ कि यह एक अचंभा है कि मैं सत्तर (70) साल तक जी गया हूँ।

मैं कार नहीं चला सकता और अपने दोस्तों तथा साथियों की ड्राइविंग पर भरोसा करता

हूँ। यहाँ तक कि बुरे-से-बुरा ड्राइवर मुझे एक आदर्श सवारी मानते हैं, क्योंकि मुझे पता ही नहीं कि वे मेरे जीवन को खतरे में डाल रहे हैं या नहीं। दरअसल ड्राइवरों को मापने का मेरा पैमाना यह है कि वह दूसरे ड्राइवरों से कितनी गालियाँ खाता है? अगर दिन भर में उसे कम-से-कम छह बार माँ या बहन की गाली दी जाती है तो मुझे यह शक होने लगता है कि उसकी ड्राइविंग में काफी कुछ गड़बड़ है। अगर वह उन पर भी गालियों की पलटवार करता है तो मैं उससे गाड़ी रोकने को कहता हूँ और झट से, इससे पहले कि वे हम पर हमला कर दें, मैं गाड़ी से उतर जाता हूँ।

मैं इंडिया गेट पर या मॉउल टाउन की झील में नौका चला सकता हूँ, पर प्लेन नहीं उड़ा सकता। जब मैं 5 वर्ष का था तो जामनगर के युवराज मुझे और मेरी माताजी को एक टाइगर मॉथ में, जो एक पुराने जमाने का खुले आकाश का हवाई जहाज था, ले गए। मुझे बहुत डर लग रहा था, खासकर उस समय जब उन्होंने आसमान में कलाबाजी करने का फैसला लिया। मैं यह कहने में खुशी महसूस कर रहा हूँ कि मैंने उनके ऊपर उलटी कर दी थी।

अगले पचास सालों तक मैं हवाई जहाज से कतराता रहा। उसकी जगह मैं ट्रेन, ऊँट या खच्चर से सफर करना पसंद करता था। नसों को कड़ा करने और रक्त-संचार बढ़ाने के लिए खच्चर की सवारी से अच्छी कोई चीज नहीं। और अब भी मैं बहुत बेमन से अपने को हवाई यात्रा के लिए तैयार करता हूँ। मेरी उम्र के अन्य लोगों को हवाई जहाज की यात्रा के अंतर्निहित खतरों से कोई परेशानी नहीं है। मेरी बगल में बैठी एक महिला अगाथा क्रिस्टी का उपन्यास 'डेथ इन दि एयर पढ़ने में मशगूल थी। जबकि एक अन्य फ्लाइट में मेरे साथ बैठा हुआ एक अन्य यात्री एक युवा प्रकाशक एक ऐसी किताब की पांडुलिपि पढ़ रहा था, जो उसी रूट पर पहले हुई एक हाइजैकिंग के बारे में थी, जिस पर हम अभी जा रहे थे।

घर के समान कोई जगह नहीं है, चाहे मैं पड़ोसवाली जगह में ही क्यों न रह रहा हूँ।

मेरे खयाल से जीवन में सबसे कठिन चीज है असफलता से पार पाना। उसको पीछे रखकर वह काम करना, जिसे आप कर रहे हैं और उसे अच्छी तरह करना या अंजाम देना।

जब मैं पीछे मुड़कर बीते वर्षों की ओर देखता हूँ और उन किताबों के बारे में सोचता हूँ, जो कभी छपीं नहीं, वह लंबा समय या तमाम साल जिसमें मुझे कोई पहचान तो कम मिली या कोई सम्मान और पुरस्कार नहीं मिला तो मुझे आश्चर्य होता है कि मैं उन सब कामों (लेखन) को छोड़कर और कोई काम क्यों नहीं करने लगा—कोई बोरिंग लेकिन सुरक्षित काम।

मैं जोखिम उठाने के पक्ष में नहीं हूँ, पर मैंने एक बड़ा जोखिम उठाया, अपने जीवन का जोखिम और इस बात पर डटा रहा कि काम करूँगा—जिसे मैं अच्छी तरह कर सकता हूँ —और जो मैं सबसे ज्यादा करना पसंद करता था। और उसके साथ ही मुझे कुछ खुशी आई। और मन की उस प्रसन्न अवस्था में मैं उन सब छोटे-छोटे फेलिवर या एकमियों से डील कर सकता था, निपट सत्य था, जो मेरे रास्ते में आई थी। मैं उन सबको फेलियर के

बजाय रोड-ब्लॉक की तरह देखता था। उन रोड-ब्लॉक या अवरोधों से आप पीछे नहीं हटते, पर उनके दाएँ/बाएँ घूमकर आगे निकल जाते हैं या आगे निकल जाने के लिए और कोई रास्ता ढूँढ़ते हैं।

फिर आप जिग-जैग या टेढ़े-मेढ़े रास्ते पर चलना सीख जाते हैं—एक अलग रास्ते पर चल पड़ते हैं—चाहे वह लंबा ही क्यों न हो? कुछ अलग करने का अभ्यास करते हैं। यदि उपन्यास नहीं चल पाता है तो बच्चों के लिए कहानियाँ लिखिए। यदि आपकी कविता कोई पसंद नहीं करता तो आप गद्य लिखिए। अपने लिए लिखना शुरू कीजिए। यदि डिकेंस नहीं हो सकते तो लैंब बनिए। दुनिया में हर किस्म के लेखकों के लिए जगह है, हर तरह के हुनर के लिए स्थान है।

अन्य लोगों से अलग कीजिए। अपनी कल्पना का इस्तेमाल करिए। पाठकों के लिए आपकी बेजोड़ कल्पना से पाठकों को अभ्यस्त होने में समय लगेगा, पर जब एक बार वे उसके अभ्यस्त हो जाएँगे, तो उन्हें उसकी और चाहत होगी।

जीवन में कभी कोई नई शुरुआत नहीं होती, पर हमेशा नई-नई दिशाएँ होती हैं।

**—रस्किन बॉण्ड**

# महापलायन

"चौदह वर्षीय लड़के के लिए यह एक बहुत सूना जाड़ा था।" मैंने अपनी छुट्टी के कुछ सप्ताह अपनी माता और सौतेले पिता के साथ देहरादून में बिताए थे। फिर वे दिल्ली चले गए और मैं अकेला अपने भरोसे पर रह गया। बेशक यहाँ मेरी जरूरतों को पूरा करने के लिए नौकर-चाकर थे, पर मेरा साथ देने के लिए कोई नहीं था। मैं सुबह-सवेरे घर से निकल जाता और पहाड़ियों पर ऊपर किसी रास्ते पर चला जाता; और लंच के लिए घर लौट आता, थोड़ा-बहुत पढ़ता और फिर टहलने चला जाता तथा डिनर-टाइम पर घर वापस आ जाता। कभी-कभी मैं अपने दादा-दादी के घर चला जाता; पर वहाँ सबकुछ बदल गया था, क्योंकि उस घर में अब जो लोग रहते थे, उन्हें मैं जानता नहीं था।

तीन महीने के जाड़े के अवकाश के बाद मैं शिमला में अपने बोर्डिंग स्कूल में वापस जाने को आतुर था।

ऐसा नहीं था कि स्कूल में मेरे अनेक दोस्त थे। मुझे एक मित्र की जरूरत थी; पर पक्षी का शिकार करनेवाले शैतान आठवीं कक्षा के तमाम शैतान लड़कों में से एक अच्छा दोस्त ढूँढ़ पाना कठिन था। वे लोग अपनी डेस्क पर नाम खोद देते थे और क्लास-टीचर की सीट पर च्युइंगम चिपका देते थे। यदि मैं अन्य बच्चों के साथ पला-बढ़ा होता तो शायद मैं भी अन्य स्कूली बच्चों की शरारतों का विकास कर पाता; पर मेरी माता से मेरे पिता के अलग हो जाने के बाद मैं अपने पिता के अकेलेपन को बाँटता था और क्योंकि मेरे अन्य कोई पारिवारिक बंधन नहीं थे, इसलिए मैं समय से पहले ही वयस्क हो गया था।

आठवीं क्लास में एक महीने के बाद एक नया चेहरा उमर का नोट किया, और वह भी इसलिए कि वह बहुत शांत था, लगभग चुप, कम बोलनेवाला। वह क्लास के अन्य बच्चों की तरह सर्कस के माक्स ब्रदर्स की नकल उतारने में शरीक नहीं होता था। उसे क्लास में फैली हुई अराजकता से एक प्रकार की नफरत थी; न ही वह उसमें हिस्सा लेने का प्रयास करता था। उसने मुझे एक बार अपनी ओर देखते हुए पकड़ लिया और हलका सा मुसकराया। क्या मुझे कक्षा में एक और वयस्क मिल गया था? कोई ऐसा (शख्स), जो अपनी उम्र से बड़ा था। इसके पहले कि हम एक-दूसरे से बातचीत करते, उमर और मुझमें एक प्रकार का समझौता हो गया। हम जब कभी भी कक्षा में, गलियारों में या फिर डाइनिंग रूम डॉरमिट्री में मिलते तो एक-दूसरे को देखकर सिर हिलाते। हम लोग एक 'हाउस में नहीं थे। 'हाउस-सिस्टम में अपने ही प्रकार के भेदभाव की प्रथा थी, जिसके अनुसार एक हाउस का सदस्य दूसरे हाउस के सदस्यों से भाईचारे का संबंध नहीं रख सकता था। इन पब्लिक स्कूलों को अच्छी तरह पता था कि कैसे आपको अलग-अलग कंपार्टमेंटों में जकड़कर रखा जाए। हालाँकि ये बाधाएँ खत्म हो गईं। जब मैं और उमर

दोनों ही स्कूल कोल्टस की हॉकी टीम में चुने गए—उमर फुल-बैक के रूप में और मैं गोल कीपर।

खामोश उमर अब कभी-कभी बातचीत करने लगा था। हॉकी के मैदान में हमारा साथ अच्छा था। एक गोली और फुल-बैक के बीच अच्छी समझदारी होनी जरूरी है। हम दोनों एक ही वेवलेंथ पर थे। मैं उसकी अगली मूव को पहले से जान जाता था और वह मेरी चालों से वाकिफ था। वर्षों बाद मैं जब कॉनरैड की 'द सीक्रेट शेयरर पढ़ रहा था, तब मुझे उमर का खयाल आया।

हमारी दोस्ती तब परवान चढ़ी जब हम स्कूल, डाइनिंग रूम और क्लास से बाहर निकलकर आए। हमारी हॉकी टीम सफर करके अगली पर्वत-शृंखला सनावर गई, जहाँ हमें अपने चिर-प्रतिद्वंद्वी लॉरेंस रॉयल मिलिटरी स्कूल के साथ कुछ मैच खेलने थे। वह मेरे पिताजी का पुराना स्कूल था और मैं वहाँ के चप्पे- चप्पे को देखना चाहता था; उनके क्लास-रूम में झाँककर देखना चाहता था।

अपने सनावर दौरे के दौरान मैं और उमर काफी समय एक-दूसरे के साथसाथ रहे। हम लोग बिना किसी विघ्न-बाधा के स्कूल-ग्राउंड में मजे से अपने अवकाश के क्षणों में घूमते थे, जहाँ हम मेहमान थे, न कि छात्र। हमने अपने जीवन का इतिहास और अपने विश्वासों को बाँटा। उमर के पिता नहीं थे। क्या मुझे पहले ही इसका पूर्वाभास था। किसी आदिवासी हमले में वह सीमाप्रांत में मारे गए थे, क्योंकि वह पेशावर के भी आगे किसी ऐसी जगह से आए थे, जहाँ कोई नियम-कानून लागू नहीं होता था। उसके एक धनी चाचा उसकी पढ़ाई का खर्चा उठा रहे थे।

हम घूमते-घामते स्कूल के चैपेल में पहुँच गए। वहाँ मैंने अपने पिता का नाम—ए.ए. बॉण्ड—स्कूल के ऑनर बोर्ड पर लिखा पाया। वे पुराने विद्यार्थी, जिन्होंने दो विश्व युद्धों में लड़ते हुए अपनी जान गँवाई थी।

"उनके आद्याक्षर का क्या अर्थ था, यानी पूरा नाम क्या था? उमर ने पूछा।"

"ऑब्रे अलेक्जेंडर।"

"असाधारण नाम, जैसाकि तुम्हारा है। तुम्हारे माता-पिता तुम्हें रस्टी क्यों कहते हैं?"

"मुझे पता नहीं!" फिर मैंने उसे उस पुस्तक के बारे में बताया, जो मैं लिख रहा था। यह मेरी पहली पुस्तक थी और उसका नाम था 'नौ महीने (स्कूल के एक सत्र की अवधि, न कि गर्भावस्था के नौ महीने)। उसमे स्कूल की कुछ घटनाओं का विवरण था और हमारे कुछ अध्यापकों का मजाक उड़ाया गया था। इस समय से पहले अपरिपक्व साहित्यिक प्रोजेक्ट से हमने तीन पतली-पतली अभ्यास-पुस्तिकाएँ भर दी थीं। मैंने उमर को उसे पढने़ दिया। वह मेरा पहला पाठक और आलोचक रहा होगा।

"यह बड़ी दिलचस्प है।" उसने कहा, "पर यदि यह किसी के हाथ लग गई तो तुम मुसीबत में पड़ जाओगे, खासकर अगर मि. फिशर के हाथ पड़ गई।"

मुझे मानना पड़ेगा कि वह एक महान साहित्यिक कृति नहीं थी और मैं हॉकी-फुटबॉल खेलने में ज्यादा सक्षम नहीं था। हमने कुछ बहुत अच्छे गोल बचाए और सनावर के खिलाफ अपने मैच जीत लिये। हम शिमला लौटकर आए तो कुछ दिनों के लिए हम स्कूल के हीरो बन गए और अपनी चुप्पी खो बैठे थे। अन्य लड़कों से भी हम घुल-मिलकर बात करने लगे थे। और फिर एक दिन हमारे हाउस मास्टर मि. फिशर के हाथ मेरी महान साहित्यिक कृति 'नौ महीने लग गई, और वे उसे अपने साथ ले गए। जैसा उन्होंने बाद में बताया कि उन्होंने उसे आद्योपांत पढ़ा। चूकि उन दिनों कॉरपोरल सजा का रिवाज था। बेंत से मेरी छह बार धुनाई हुई और मेरी पांडुलिपि फाड़कर मि. फिशर की रददी की टोकरी के हवाले कर दी गई। मेरी कोशिशों के फलस्वरूप मुझे दिखाने के लिए मेरे नितंबों पर पड़े बड़े-बड़े गुलाबी निशान थे, जिसे जो लोग देखना चाहते थे उन्हें गर्व से दिखाया गया। मैं फिर दो दिन के लिए हीरो बन गया था।

"क्या तुम भी चले जाओगे, जब ब्रिटिश भारत छोड़कर जाएँगे?" उमर ने एक दिन पूछा।

"मैं ऐसा नहीं सोचता।" मैंने कहा, "और फिर, मेरा कोई है भी तो नहीं इंग्लैंड में और न ही मेरे अभिभावक, ज़ि. हैरिसन का कोई इरादा वापस जाने का दिखाई देता।"

"हर कोई कह रहा है कि भारतीय नेता और अंग्रेज सरकार हमारे देश को दो हिस्सों में बाँटने वाले हैं। शिमला भारत में होगा और पेशावर पाकिस्तान में!"

"अरे, ऐसा नहीं होगा।" मैंने लापरवाही से कहा, "इतने बड़े देश को वे कैसे काट सकते हैं! पर जिस वक्त हम इस विषय पर बातचीत कर रहे थे, नेहरू, जिन्ना और अन्य लोग अपने औजारों को एक मेजर सर्जरी के लिए तैयार कर रहे थे।

इसके पहले कि उनका फैसला हमारे जीवन को प्रभावित करे, हमने अपनी आजादी एक भूमिगत सुरंग में पा ली, जो हमने तीसरे फ्लैट के नीचे ढूँढ़ निकाली थी।

दरअसल वह सुरंग एक पुरानी काम में न आनेवाली खराब गंदे नाले का हिस्सा थी। जब मैंने और उमर ने उसकी खोजबीन शुरू की तो हमें पता नहीं था कि वह कितनी लंबी है। पेट के बल उसमें लगभग 20 फीट रेंगने के बाद हमने अपने आपको बिलकुल घने अँधेरे में पाया। उमर के पास एक छोटी सी पेंसिल टॉर्च थी, जिसके सहारे हम धीरे-धीरे आगे बढ़ते रहे। थोड़ी देर चलने के बाद हमें सुरंग के अंत में रोशनी की चमक दिखी। धूल में सने हुए, सीलन से महकते हुए और खुरदुरे-से हम हरे-भरे घास के एक टीले पर पहुँच गए, जो कि स्कूल की चारदीवारी से थोड़ी दूर पर था।

वे चारदीवारियाँ, जो बुजुर्गों ने बनाई हैं, उनके पार जाना हमेशा ही रोमांचकारी होता है। यहाँ हम एक बिलकुल अनजान क्षेत्र में थे। बिना पासपोर्ट के यात्रा करना—यह एक अंतिम स्वतंत्रता होगी। पर और अधिक पासपोर्ट आ रहे थे और ज्यादा चारदीवारियाँ भी।

लॉर्ड माउंटबेटन, वायसराय और होनेवाले गवर्नर जनरल हमारे स्थापना दिवस पर आए

और पुरस्कार बाँटे। मैंने भी किसी-न-किसी चीज के लिए इनाम जीता था—मंच पर उस लंबे, खूबसूरत पिन-स्ट्राइप सूट पहने हुए आदमी से अपनी किताब पाई। बिशप कॉटन उन दिनों भारत का अग्रणी स्कूल था और उसे पूर्व का 'एटन कहते थे। उसके समारोह में वायसराय और गवर्नर आते थे। उसके बहुत सारे पूर्व विद्यार्थी लड़के सिविल सर्विसेज और सेना में ऊँचे-ऊँचे पदों पर थे। पर एक पूर्व विद्यार्थी के बारे में सब लोग चुप्पी साधे रहते थे— वह था जनरल डायर, जिसने जलियाँवाला बाग, अमृतसर में नरसंहार का आदेश दिया था और इस प्रकार से उसने ब्रिटेन व भारत के बीच में जो विश्वास पैदा हुआ था, उसे नष्ट कर दिया था।

अब माउंटबेटन ने उन ऐतिहासिक क्षणों के बारे में चर्चा की, जो हमारे चारों ओर घट रहे थे—द्वितीय विश्व युद्ध अभी-अभी समाप्त हुआ था। राष्ट्र संघ ने विश्व में शांति और सामंजस्य के साथ रहने का वादा किया और भारत व ब्रिटेन बराबर के साथी होंगे तथा भारत एक महान राष्ट्र होगा।

कुछ हफ्ते बाद ही बंगाल और पंजाब का विभाजन हो गया। सारे उत्तर भारत में दंगे फैल गए और नई खिंची हुई विभाजन-रेखा के दोनों तरफ से बड़ी संख्या में लोगों का पलायन शुरू हो गया—पाकिस्तान-भारत के दोनों तरफ तमाम घर जला दिए गए तथा हजारों लोगों की जानें चली गईं।

कॉमन-रूम के रेडियो तथा कभी-कभार आनेवाले अखबारों से हमें खबरें मिलती रहती थीं, पर मैं और उमर अपनी सुरंग में इन सब घटनाओं से अछूते थे। लूट-मार, हत्याओं और बदले की भावनाओं से दूर एक अलग दुनिया में सुरंग के बाहर पहाड़ी पर हरी ताजी घास आ गई थी, जिस पर अभी तक कोई चला नहीं था और जिस पर डेजी व तितलिया आ गए थे। हमें वहाँ जो आवाजें सुनाई पड़ रही थीं वे कठफोड़वा की ठक-ठक और हिमालयन बारबेर की दूर से बराबर आती हुई आवाज। यहाँ हमको कौन छू सकता था। "और जब सारे युद्ध समाप्त हो जाएँगे," मैंने कहा, "तब भी तितलियाँ सुंदर लगेंगी।

"क्या तुमने इसे कभी पढ़ा था?"

"नहीं, बस यह मेरे मन में खुद-ब-खुद आ गया।"

"तुम तो अभी भी एक लेखक हो।"

"नहीं", मैं इंडिया के लिए हॉकी या आर्सेनल के लिए फुटबॉल खेलना चाहता हूँ। केवल जीतनेवाली टीमों के लिए।

"तुम हमेशा तो जीत सकते नहीं। बेहतर होगा कि आप लेखक बनें।" जब मानसून आया तो सुरंग में पानी भर गया और नाला कचरे-मिटटी से भर गया। हमें लॉरेंस ओलिवियर की 'हैमलेट देखने के लिए सिनेमा जाने की अनुमति मिल गई; यह एक ऐसी फिल्म थी, जिससे न तो हमारा मनोबल बढ़ा और नहीं अपराह्न की उदासी छँटी। पर यह उस साल की हमारी आखिरी पिक्चर थी, क्योंकि उसके बाद ही अचानक शिमला के लोवर बाजार में जातीय दंगे भड़क उठे। यह अभी भी एक ऐसी जगह थी जैसाकि किपलिंग ने बयान

किया था— 'एक आदमी, जो वहाँ के रास्ते जानता है, वह भारत की ग्रीष्म राजधानी की पुलिस को छका सकता है, पुलिस की अवहेलना कर सकता है। और हम लोग स्कूल की चारदीवारी में अनिश्चित काल के लिए कैद हो गए।

एक दिन सुबह चैपेल में प्रार्थना के बाद हेड-मास्टर ने घोषणा की कि वे मुसलिम लड़के जिनका घर अब जो पाकिस्तान है—वहाँ हैं, उन्हें स्कूल खाली करना पड़ेगा और वे सशस्त्र सेना के साथ बॉर्डर के उस पार अपने घरों में भेज दिए जाएँगे।

अब सुरंग से भागने का कोई रास्ता नहीं था। हम बाजार भी नहीं जा सकते थे। पानी भरा खेल का मैदान अब खाली पड़ा था। उमर और मैं एक सीलीसी बेंच पर बैठे कुछ अस्पष्ट भविष्य के बारे में बातें कर रहे थे; पर हमसे कोई समस्या नहीं सुलझ सकी। माउंटबेटन, नेहरू और जिन्ना सारी समस्याओं का हल ढूँढ़ रहे थे।

जल्द ही उमर को जाना पड़ा। उसके साथ लाहौर, पिंडी और पेशावर के पचास लड़के और गए। हिंदू, ईसाई और पारसी लड़कों ने उनका सामान प्रतीक्षा करती ट्रकों में लदवाने में मदद की। कुछ लड़कों का सब्र का बाँध टूट गया और वे रोने लगे। यहाँ तक कि हमारे स्कूल का कैप्टन—एक पठान लड़का, जो अपने कठोर और अभद्र स्वभाव के लिए जाना जाता था। उमर ने जाते-जाते खुशी से हाथ हिलाया और मैंने भी हाथ हिलाकर उसे विदाई दी। हमने कसम खाई कि किसी दिन हम फिर मिलेंगे।

ट्रकों का काफिला लगभग सुरक्षा से पहुँच गया। केवल एक ही आदमी था—वह स्कूल का रसोइया था—वह कालिका में नीचे तराई का क्षेत्र था, वहाँ वह सीमा के बाहर चला गया था और उसको भीड़ ने घेर लिया था। इसके बाद वह फिर कभी नहीं देखा गया।

स्कूल-वर्ष के अंत में जब हम स्कूल छोड़कर छुट्टियों के लिए बाहर जाने वाले थे, तब उमर का पत्र आया। उसने अपने नए स्कूल के बारे में कुछ लिखा था और किसी प्रकार से हम लोगों का साथ तथा खेलों को याद कर रहा था, जो हमारी स्वतंत्रता की सुरंग थी, उसे भी याद कर रहा था।

करीब 17-18 साल के बाद मुझे उमर की खबर मिली, पर एक बिलकुल दूसरे प्रसंग में। भारत और पाकिस्तान में युद्ध चल रहा था। और अंबाला में जो शिमला से ज्यादा दूर नहीं था। एक हवाई हमले में एक पाकिस्तानी हवाई-जहाज को मार गिराया गया था। उस हवाई जहाज क्रैश के क्रू मेंबर मर गए थे। बाद में मुझे पता चला कि उनमें से एक उमर था।

क्या उसको उन खेल के मैदानों की झलक मिली, जिसमें हम बचपन में खेला करते थे। शायद उसे अपने स्कूल के दिनों की यादें ताजा हो आई होंगी जब वह पहाड़ों की तली में से गुजर रहा था। शायद उसे वह सुरंग याद आई होगी जिसमें से हम गुजरकर अपनी आजादी पाते थे। पर आसमान में तो ऐसी कोई सुरंग नहीं है।

# मछली पकड़ने का झंझट

"उस घर का नाम 'अंडरक्लिफ था", क्योंकि वह घर एक क्लिफ यानी खड़ी चटटान के नीचे था। वह आदमी जो चला गया था, घर का मालिक रॉबर्ट एस्टले था, और जो आदमी उस घर में रह रहा था—परिवार का पुराना रख- रखाव करनेवाला कर्मचारी यानी प्रेम बहादुर था। एस्टले को गए हुए कई वर्ष बीत गए थे। अभी भी जब वह 35-38 की उम्र का था, अनक्याहा था और उसने निश्चय किया कि वह एडवेंचर, रोमांस और दूर-दराज की जगहों का भ्रमण करेगा और उसने अपने घर की चाबियाँ प्रेम बहादुर, जिसने उसके परिवार की सेवा पिछले 30 वर्षों से की थी—को सौंप अपनी यात्राओं पर चल पड़ा। किसी ने उसको श्रीलंका में देखा था। सुना गया कि वह बर्मा में मोगोक के रूबी माइंस (लाल की खानों) के आस-पास है। फिर एकदम से वह जावा में प्रकट हो गया। वहाँ वह सूंडा स्ट्रेट से रास्ता चाह रहा था।

पर प्रेम बहादुर अभी भी वहीं था। एक आउट हाउस में रह रहा था। प्रतिदिन वह अंडरक्लिफ का घर खोलता था। हर कमरे के फर्नीचर से धूल झाड़ता था। वह देखता था कि बिस्तर की चादरें तथा गिलाफ सब साफ-सुथरे हैं, और एस्ले के ड्रेसिंग गाउन तथा स्लिपर (चप्पलों) को ठीक से रख देता था।

पुराने दिनों में जब भी एस्टले बाहर से यात्रा करके या जंगलों से घूमघाम कर आता था तो चाहे जो भी समय हो, वह नहा-धोकर ड्रेसिंग गाउन पहनता और चप्पल भी। प्रेम बहादुर अब भी उन्हें तैयार रखता। उसको विश्वास था कि रॉबर्ट एक दिन अवश्य लौटेगा।

"प्रेम, मेरे पुराने दोस्त, मेरे लिए हर चीज तैयार रखना।" मैं साल बाद या दो साल बाद या हो सकता है और लंबे समय के बाद वापस आऊँगा। मैं तुमसे वादा करता हूँ। हर महीने की पहली तारीख को तुम हमारे वकील मि. कपूर के पास जाना, वह तुम्हें तुम्हारी तनख्वाह देंगे और मरम्मत वगैरह के लिए तुम्हें रुपए देंगे। मैं चाहता हूँ कि तुम घर को टिप-टॉप रखो।

"साहब, क्या आप अपनी पत्नी लेकर आएँगे?

"हे भगवान, नहीं। तुम्हारे मन में यह खयाल कहाँ से आया?

"मैंने सोचा, शायद—क्योंकि आप चाहते हैं कि घर तैयार रहे। "मेरे लिए तैयार रखना, प्रेम। मैं नहीं चाहता कि जब मैं घर वापस आऊँ तो जगह-जगह से घर ढह रहा हो, टूट-फूट हो रही हो।

अत: प्रेम घर का रख-रखाव करता था—यद्यपि एस्टेले की कोई खबर नहीं थी। उसको

क्या हो गया होगा। यह रहस्य जब भी लोग मॉल पर मिलते, उनके बीच बातचीत का मुद्दा बन जाता, और बाजार में भी दुकानदारों को उसकी कमी खलती, क्योंकि वह बहुत खुले हाथ से खर्च करता था।

उसके रिश्तेदार अब भी यह विश्वास करते थे कि वह जीवित है। कुछ महीने पहले ही उसका एक भाई आया था, जिसके कनाडा में फार्म (खेत) थे और जो भारत में ज्यादा नहीं रुका था। उसने वकील के पास और धन जमा किया और प्रेम से कहा कि वह पहले की तरह ही घर का रख-रखाव करता रहे। तनख्वाह से प्रेम की जो थोड़ी-बहुत जरूरतें थीं, वे पूरी हो जाती थीं। इसके अलावा उसे इस बात का पूरा विश्वास था कि रॉबर्ट एक दिन लौटकर जरूर आएगा।

प्रेम बहादुर की जगह और कोई होता तो शायद वह घर और लॉन मैदान की इतनी देख-रेख नहीं करता, पर प्रेम बहादुर ऐसा नहीं कर सकता था। उसके मन में अनुपस्थित मालिक के प्रति बहुत आदर था। प्रेम काफी उम्रदराज था— अब उसकी उम्र लगभग 60 साल की थी और वह अब बहुत ताकतवर नहीं था। अब वह प्लूरिसी तथा छाती के अन्य रोगों से ग्रस्त था पर वह रॉबर्ट को एक लड़के की तरह फिर एक आदमी की तरह याद करता था। वे दोनों तमाम बार शिकार और मछली पकड़ने के लिए इकटठे गए थे। वे लोग कई बार खुले आसमान में तारों के नीचे सोए थे, बर्फीले पहाड़ी झरनों के पानी से नहाए थे और उसी खाने-पकाने के बरतन में खाए थे।

एक बार की बात है, जब वे बरसात में एक छोटी सी नदी पार कर रहे थे तो अचानक एक तंग घाटी से होती हुई तेज बाढ़ आ गई और वे उसमें बह गए थे। पानी की एक दीवार अचानक ऊपर से गरजती हुई बिना किसी पूर्व चेतावनी के आ गई थी। दोनों जने मिलकर किसी तरह एक सुरक्षित किनारे पर पहुँच पाए। हिल-स्टेशन में वापस पहुँचकर एस्टले सबसे कहता था कि प्रेम ने उसकी जान बचाई, जबकि प्रेम सबसे पुरजोर से कहता था कि रॉबर्ट की वजह से उसकी जान बच गई।

इस साल मानसून जल्दी आ गया था और देर से खत्म हुआ। मानसून लगभग पूरे सितंबर चला और प्रेम बहादुर की खाँसी काफी बढ़ गई और साँस भी फूलने लगी थी।

वह चारपाई पर पड़ा बाहर बगीचे में देख रहा था। गार्डन का रख-रखाव अब ठीक से नहीं हो पा रहा था। एक जगह का ठाहलिया झाड़-झंखाड़ की तरह उगे हुए थे। सर्प-लिली और आपस में मिले-जुले उगे हुए थे। अंततोगत्वा सूरज निकल आया। हवा का रुख दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पश्चिम हो गया था और उसने बादल को उड़ा दिया था।

प्रेम बहादुर अपनी चारपाई बाहर ले आया था। बगीचे में और धूप में लेटा हुआ था। अपने छोटे हुक्के से कश ले रहा था। जब उसने गेट पर रॉबर्ट एस्टले को देखा।

उसने उठना चाहा, पर उसके पैरों ने उसका साथ नहीं दिया। हुक्का उसके हाथ से फिसलकर गिर पड़ा।

एस्टले बगीचे के पथ पर होता हुआ उस वृद्ध रखवाले के पास आया। उस पर मुसकराता

हुआ। प्रेम बहादुर ने जब उसको अंतिम बार देखा था, उससे वह थोड़ा भी बड़ा या उम्रवाला नहीं दिख रहा था।

"तो आप आखिर आ ही गए। प्रेम बोला।

"मैंने तुमसे कहा था कि मैं वापस आऊँगा।

"बहुत साल हो गए, पर आप में कोई बदलाव नहीं आया।

"नहीं तुमसे, बुजुर्ग (बड़े) आदमी।

"मैं बूढ़ा हो गया हूँ, बीमार और कमजोर।

"अब तुम ठीक हो जाओगे, इसीलिए मैं आया हूँ।

"मैं घर खोल देता हूँ। प्रेम ने कहा और इस बार वह आसानी से उठ गया।

"इसकी कोई जरूरत नहीं है। एस्टले ने कहा।

"पर सबकुछ आपके लिए तैयार है।

"मैं जानता हूँ। मैंने सुना है, तुमने सबकुछ बहुत अच्छी तरह रखा है।

आओ, एक बार इसे आखिरी बार देख लें। हम यहाँ ठहर नहीं सकते, तुम जानते हो।

प्रेम चकरा गया था। उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था। पर उसने सामने का दरवाजा खोला और रॉबर्ट ने ड्रेसिंग गाउन और स्लिपर्स देखे और धीरे से अपना हाथ वृद्ध आदमी (प्रेम) के कंधे पर रख दिया।

जब वे नीचे उतरकर सूरज की रोशनी में आए तो प्रेम अपने आपको देखकर चौंक गया—अपनी कृशकाय काया चारपाई पर फैली हुई देखकर। हुक्का वहीं जमीन पर पड़ा था, जहाँ पर वह गिर पड़ा था। प्रेम ने एस्टले की ओर चौंककर अचंभे से देखा।

"पर वहाँ पर कौन लेटा हुआ है?

"वह आप ही हैं। अब केवल खोल रह गया है—ऊपर का छिलका। असली आप तो यहाँ मेरे साथ खड़े हैं।

"आप मेरे लिए आए हैं।

"मैं तब तक नहीं आ सकता था, जब तक तुम तैयार न हो। जहाँ तक मेरा सवाल है, अपना खोल तो मैं बहुत पहले ही छोड़ चुका हूँ। पर तुम यहाँ अभी ठहरना चाहते थे—घर की देख-रेख के लिए। क्या अब तुम तैयार हो?

"और घर?

"अन्य लोग उसमें रहेंगे। कुछ भी हमेशा के लिए नहीं होता है, हर चीज दुबारा शुरू होती है। पर आ जाओ, अब फिशिंग में जाने का समय हो गया है। एस्टले ने प्रेम को बाँह से पकड़ लिया और वे देवदार की छाया में चल पड़े और आखिर में वह जगह छोड़कर दूसरी जगह के लिए निकल पड़े।

# सुसाना के सात पति

"स्थानीय लोगों में यह कब्र 'सात बार विवाहिता के नाम से जानी जाती थी।"
आपको माफ कर दिया जाएगा, यदि आप सोचते हैं कि यह क्लूबीयर्ड की कब्र है; ऐसा विश्वास है कि उसने अपनी कई पत्नियों को मार दिया था, क्योंकि उन्हें एक बंद कमरे के बारे में कुछ जरूरत से ज्यादा जिज्ञासा थी, पर यह कब्र सुसाना-मारिया यीटस की थी, और उसके हेड-स्टोन पर जो लिखा था, खुदा था (जो अधिकांशत: लैटिन में था) वह यह कि उसकी मृत्यु से उन लोगों को बहुत दु:ख हुआ था। जिन्हें उसकी दानशीलता से काफी लाभ हुआ था, जैसे कि कई स्कूल, अनाथालय और सड़क के उस पारवाला चर्च। आस-पास किसी और कब्र का चिह्न नहीं था।

जब मैंने पहली बार उस खँडहर को देखा, जो कभी दो मंजिला खूबसूरत महलनुमा इमारत रही होगी, तब मैं अपनी युवावस्था में था। एकांत और शांत थे, उसके कभी अच्छे रहे रास्तों पर झाड़-झंखाड़ उग आए थे और फूलों की क्यारियों में कँटीले झाड़ उग आए थे। वह दो मंजिला घर जी.टी. रोड के सामने था। अब वह घर भुतहा हो गया था और वहाँ कोई नहीं रहता, वहाँ जाने से लोग कतराते थे। उसमें बुरी आत्माओं का वास था, ऐसी व्याति थी।

गेट के बाहर, ग्रांड-ट्रंक रोड पर, हजारों वाहन भागते रहते थे। कारें, बसें, ट्रकें, ट्रैक्टर और बैलगाडियाँ—पर कुछ ही लोग उस पुराने मैंशन या मकबरे को देख पाते थे, क्योंकि वह मेन रोड से पीछे थे और आम, नीम व पीपल के पेड़ से छिपा हुआ था। एक बहुत बड़ा और पुराना पीपल का पेड़ उस घर के खँडहर को ऐसे चारों तरफ से दबोचे और संभवत: उसके कई पति दिल्ली रिज के पीछे बने राजपुर रोड के कब्रिस्तान में दफना दिए गए थे, जैसाकि कहा जाता है, उसने अपने एक प्रेमी की गला दबाकर हत्या कर दी थी।

एक ऐसी महिला, जिसकी विचित्र आदत यह थी कि अपने पतियों को, जब वह उनसे थक जाती थी, तो उन्हें मरवा देती थी। ऐसा कहा जाता था कि उसकी खराब या बुरी आत्मा उस निर्जन बगीचे में घूमती रहती है। मैंने मकबरे का निरीक्षण किया, खँडहरों को ध्यान से देखा। झाड़-झंखाड़ और बढ़ी हुई गुलाब की झाड़ियों में से गुजरा; पर मेरा उस रहस्यमयी औरत की आत्मा से कहीं सामना नहीं हुआ। शायद मैं उस समय बहुत शुद्ध और नादान था और बुरी आत्माओं के निशाने पर नहीं था। लेकिन यदि उसके बारे में कही गई कहानियों पर विश्वास किया जाए तो वह बुरी आत्मा अवश्य रही होगी।

उस महल के खँडहर के तहखाने में कभी कोई नहीं गया होगा। ऐसा कहा जाता है कि वहाँ पर कोबरा साँप का परिवार रहता है, जो गड़े हुए खजाने की रक्षा करते हैं। क्या वह वाकई में बहुत धनवान महिला थी और क्या वहाँ पर अब भी खजाना गड़ा हुआ था? मैंने यह सवाल नौशाद से पूछा, जो एक फर्नीचर बनाने वाला था और वहीं पास में रहता था।

उसके बाप ने इस मकान और पुरानी दिल्ली के अन्य कई बड़े मकानों के फर्नीचर बनाए थे।

लेडी सुसाना, जैसा वह कहलाती थी, को उसके धन की वजह से बहुत चाहने वाले थे, नौशाद ने कुछ याद करते हुए बताया। वह कोई कंजूस भी नहीं थी। वह बहुत खुले हाथ से खर्च करती थी और अपने महलनुमा घर में राजसी ठाट के साथ रहती थी। उसके पास तमाम घोड़े और बग्घियाँ थीं। आप वहाँ पर अस्तबल देख रहे हैं न, खँडहरों के पीछे। अब वह चमगादड़ों और सियार का बसेरा है। हर शाम को वह रोशनआरा गार्डेंस में सैर करने जाती थी। वह हर किसी की आँखों का तारा थी, क्योंकि वह सुंदर भी थी और धनवान भी। हाँ, हर आदमी उसका कृपापात्र बनना चाहता था और वह उनमें से जो सबसे उत्तम था, उसे पसंद कर सकती थी। उसमे से कई अपना भाग्य आजमानेवाले थे, और वह उनको निरुत्साहित नहीं करती थी। कुछ लोग थोड़े समय के लिए उसके कृपा-पात्र बन भी जाते थे, पर वह जल्द ही उनसे थक जाती थी। उसका कोई भी पति उसके धन को ज्यादा समय तक नहीं भोग सका।

आज इस खँडहर में कोई भी नहीं रहता, जहाँ पर कभी तमाम हँसी-खुशी का माहौल था। वह एक जमींदारिन लेडी थी। उसके पास तमाम जमीन थी और अपनी संपत्ति की वह काफी कुशलता व मजबूती से देख-रेख करती थी। अगर किराया समय पर आ गया तो बहुत दयालु बन जाती और अगर किसी ने किराया नहीं दिया तो उसकी खैर नहीं।

"खैर, अब इस बात को पचास साल हो गए, जब उसे दफनाया गया था; पर अब भी लोग उसके बारे में डर-डरकर बात करते हैं। उसकी आत्मा बेचैन है और ऐसा कहते हैं कि वह अपने भाग्य महल को अब भी कभी-कभी देखने आती है। उसे लोगों ने गेट से अंदर जाते देखा है। कभी-कभी वह गार्डेन में घुड़सवारी करती दिखाई पड़ी तो कभी अपनी फिन में रायपुर रोड जाती हुई देखी गई।

"और उसके पतियों का क्या हुआ? मैंने पूछा।

"उनमें से ज्यादातर की रहस्यमय मौत हो गई। यहाँ तक कि डॉक्टर लोग भी चकरा गए। टॉमकिन साहब बहुत शराब पीते थे। लेडी उनसे परेशान हो गई। एक पियक्कड़ पति बोझ के समान होता है, ऐसा वह कहती थी। वह शराब पीपी कर अपने आप मर जाते; पर वह एक अधीर औरत थी और उनकी जगह दूसरा पति लाना चाहती थी। आप वे धतूरा की झाडियाँ देख रहे हैं, जो जंगली पौधों की तरह मैदान में उग रही हैं। वे यहाँ पर हमेशा से रही हैं।

"बेलाडोना? मैंने सुझाया।

"हाँ, साहब। उसे व्हिस्की-सोडा में मिलाकर पिला दिया गया। और वह चिर निद्रा में विलीन हो गए।

"वह अपने तरीकों में काफी मानवीय थी।

"हाँ, वह काफी दयालु थी, सर। वह किसी को तकलीफ में रहते हुए नहीं देख सकती थी। एक साहब, जिनका नाम मैं नही जानता हूँ। वह घर के पीछे जो तालाब है, जिसमें कमल खिलते थे, उसमें डूबकर मर गए। पर उसने इस बात की तसल्ली कर ली थी कि गिरने के पहले वह अधमरे हो जाएँ। वे कहते हैं, उसके बड़े-बड़े ताकतवर हाथ थे।

"उसने उनसे शादी करने की जहमत क्यों उठाई? वह केवल अपने पुरुष मित्र रखती।

"उन दिनों ऐसा रिवाज नहीं था, साहब! हमारी संभ्रांत सोसाइटी इसको कभी सहन नहीं करती। न ही भारत में और न ही पाश्चात्य देशों में इसकी इजाजत थी।

"वह शायद अपने समय से पहले पैदा हो गई थी। मैंने टिप्पणी की। "सही बात है, सर! और याद रखें, उसमें से ज्यादातर धन की तलाश में आए थे, हमें उन पर ज्यादा दया नहीं आनी चाहिए।

"उसने भी कोई धन गँवाया नहीं।

"वह बिना किसी दया के थी। खासकर उसे जब यह पता चल जाता कि लोग किसलिए वहाँ आए थे। साँपों के बचने की संभावना थी। "बाकी के पति इस दुनिया से कैसे विदा हुए?

"वेल, कर्नल साहब अपनी बंदूक (राइफल) साफ करते समय मारे गए। यद्यपि लोग कहते हैं कि बिना साहब के जाने उसने बंदूक में गोली भर दी थी। अब उसकी व्यति ऐसी हो गई थी कि यदि वह निर्दोष हो तो भी लोग उस पर संदेह करते थे। पर वह इन सब परेशानियों से बच भी जाती थी। यदि आप धनवान हैं, तो यह आसान हो जाता है।

"और चौथा पति?

"अरे, उसकी तो प्राकृतिक मृत्यु हुई थी। उस साल हैजा महामारी की तरह फैला हुआ था और वह उसी से मर गए, पर कहते हैं कि यदि ज्यादा मात्रा में संखिया दिया जाए तो भी यही लक्षण होता है। खैर, डेथ-सर्टीफिकेट पर हैजा ही लिखा था। और जिस डॉक्टर ने उस पर दस्तखत किया था, वह उसका अगला पति था।

"एक डॉक्टर होने की वजह से वह अपने खाने-पीने के बारे में काफी सचेत रहता था। वह करीब एक साल रहा।

"क्या हुआ?

"उसे एक कोबरा सर्प ने डस लिया था।

"वेल, यह तो उसकी बदकिस्मती हुई, है न?

"नहीं हुजूर, वह कोबरा तो उसके बेडरूम में था। वह उसके पलंग के पाये के चारों और लिपटा हुआ था। और जब उसने रात में सोने के लिए कपड़े उतारे तो उसने डस लिया। वह मर चुके थे, जब सुसाना उसके कमरे में एक घंटे बाद आई। वह साँपों के साथ भी एक

तरह की दोस्ती बनाई हुई थी। वह उनको कभी नुकसान नहीं पहुँचाती थी, और वे उन्हें कभी काटते नहीं थे।

"और उन दिनों सर्प-दंश की कोई विरोधी दवा या उपचार नहीं था। इस तरह से डॉक्टर चला गया। अब छठा पति कौन था?

"एक खूबसूरत आदमी नील की खेती करनेवाला। जब नील की खेती खत्म हुई तो वह दीवालिया हो गया था। वह महिला की मदद से अपनी खोई हुई संपत्ति वापस पाना चाहता था; पर हमारी सुसाना मेम अपनी धन-संपत्ति किसी के साथ बाँटना नहीं चाहती थीं।

"उसने नील की खेती करनेवाले को कैसे हटाया?

"ऐसा कहा जाता है कि उसने उसको बहुत शराब पिलाई और जब वह बेहोश हो गया तो उसके कान में सीसा पिघलाकर डाल दिया और फिर वह अपनी अंतिम यात्रा पर चल पड़ा।

"एक बिना दर्द की मौत, मुझे बताया गया।

"एक भयानक दाम उसको अदा करना पड़ा, क्योंकि अब उसे उसकी कोई जरूरत नहीं थी।

हम लोग शाम की ठंडी हवा का लुत्फ़ उठाते हुए धूल भरे रास्ते पर चलते रहे और थोड़ी देर पर रोशनआरा गार्डेन पहुँच गए, जो उन दिनों की दिल्ली का बहुत प्रिय, फैशनेबल और आकर्षक मिलने-जुलने की जगह थी। "तुमने मुझे बताया कि कैसे उसके छह पतियों ने मृत्यु पाई। मेरा खयाल था कि तुमने उसके सात पति बताए थे।

"अरे हाँ, वह बहादुर युवा मजिस्ट्रेट, वह यहीं पर शहीद हो गया था। वे लोग अँधेरे के बाद पार्क के अंदर घोड़ागाड़ी में सैर कर रहे थे। जब कुछ बदमाशों ने उनके ऊपर आक्रमण कर दिया उसकी रक्षा करने में उस बहादुर युवा आदमी को तलवार का वार लग गया, जिससे उसकी मौत हो गई।

"इसमें तो महिला का कोई हाथ नहीं था, नौशाद।

"नहीं, मेरे दोस्त। आपको याद नहीं वह मजिस्ट्रेट था और जो हमलावर थे। उनके किसी रिश्तेदार को उसने सजा सुनाई थी और वे लोग उसका बदला लेने की ताक में थे। पर यह बड़ी विचित्र बात है कि उनमें से दो लोगों को लेडी सुसाना के यहाँ कुछ दिनों बाद नौकरी पर रख लिया गया। अब आप इससे अपना निष्कर्ष निकाल सकते हैं।

"और क्या, और लोग भी थे?

"पति तो नहीं थे, पर बस एक साहसी आदमी था—एक भाग्यशाली सैनिक, जो आया था। लोग कहते हैं, उसे उसका खजाना मिल गया था। वह खजाने के साथ ही उस खँडहर में दफन है। उसकी हड्डियाँ सोने, चाँदी और हीरे-जवाहरात के साथ यहाँ-वहाँ बिखरी पड़ी

हैं। अभी भी नाग उसकी रखवाली कर रहे हैं। पर यह अभी तक रहस्य है कि कैसे वह खत्म हो गया और अभी भी यह रहस्य बना हुआ है।

"सुसाना का क्या हाल हुआ?

"जैसा आप जानते ही हैं, सुसाना काफी लंबी उम्र तक जीवित रही। यदि उसने अपने गुनाहों की सजा पाई तो कम-से-कम इस जीवन में तो नहीं। जैसा आपको पता है, उसके कोई बच्चे नहीं थे; पर उसने एक अनाथालय खोला और गरीब लोगों को, स्कूलों को, संस्थाओं को, विधवाओं के लिए केंद्र को, खूब दिल खोल कर धन दिया। वह शांति से अपनी मौत मर गई।

"एक खुशमिजाज विधवा, मैंने टिप्पणी की, "दि ब्लैक विर्डो स्पाइडर या काली विधवा मकड़ी।

आप सुसाना की कब्र की तलाश में मत जाइए। कुछ साल पहले अपने महल के खँडहर के साथ वह भी गायब हो गई। उसकी जगह पर एक नई चमचमाती हुई हाउसिंग स्टेट बन गई है। पर उसके बनने से पहले कई कांट्रैक्टर और कारीगर वहाँ सर्पदंश से मर गए थे। वहाँ के निवासी शिकायत करते हैं कि अपने बीच कभी-कभी वे एक खराब भूत को पाते हैं, जो कि सड़क पर जा रही गाडियों को, खासकर जो एक अकेले आदमी द्वारा चलाई जा रही है, उन्हें रुकवाने की कोशिश करती है। एक-दो गाडियाँ ड्राइवर समेत रहस्यमय तरीके से गायब भी हो गई हैं। आप किसी भी आदमी से, जो इस ओल्ड रिज रोड पर रहा है, पूछिए तो बताएगा कि यह सच है।

कभी-कभी झुटपुटे के बाद आपको एक पुराने जमाने की घोड़ागाड़ी में एक गोरी मेम यदि रोशनआरा गार्डन के अंदर से जाती दिखाई दे जाए तो उस पर ध्यान न दें। आपसे यदि कोई सुंदर महिला लेस के परदे के अंदर से कुछ पूछती दिखाई पड़ जाए तो उसके सवाल का जवाब देने के लिए मत रुकिए। वह अभी भी एक अदद योग्य पति की तलाश में है।

# परियों का पहाड़

"वे छोटी-छोटी हरी रोशनी, जो मैं परी-टिब्बा पर देखा करता था।" उसका कोई न-कोई वैज्ञानिक कारण तो होना ही चाहिए, ऐसा मैं विश्वास करता था। अँधेरे के बाद हम कई ऐसी चीजें देखते हैं या आवाजें सुनते हैं जो कि रहस्यमय या निराधम लगती है। पर दिन की साफ रोशनी में हम पाते हैं कि उस जादू के रहस्य का कोई-न-कोई कारण था।

पर मैं कभी-कभी जब देर रात में शहर से, जंगल के किनारे बने अपने कॉटेज पर पैदल वापस आता था तो वह रोशनी दिखती थी कि वह इतनी तेजी से चलती थी कि लोगों द्वारा ले जा रही मशाल या लालटेन तो हो नहीं सकती थी। और चूँकि परी-टिब्बा पर कोई सड़क नहीं थी तो वे किसी ठेले या साइकिल की रोशनी भी नहीं हो सकती थी। किसी ने मुझे बताया कि वहाँ पहाड़ी पर फॉस्फोरस था, इसलिए देर रात में वह जगमग करता था। संभवत: मुझे इस बात का खयाल नहीं था।

उन छोटे-छोटे लोगों से मेरा आमना-सामना दिन की रोशनी में हुआ। एक दिन सवेरे अप्रैल के शुरू में मैंने एक प्रेरणा पर निश्चय किया कि मैं परी टिब्बा की चोटी पर चढ़ूँगा और अपने आप देखूँगा कि वहाँ पर क्या है? हिमालय की तराई में यह वसंत का मौसम था। पेड़ों में, फूलों में, घास में, जंगली फूलों में और यहाँ तक कि मेरी नसों में एक तरह के रस का प्रवाह हो रहा था। मैंने ओक के जंगल का रास्ता लिया, जो पहाड़ के नीचे बह रही एक छोटी सी नदी के पास निकलता था और फिर उसके ऊपर परी टिब्बा परियों के पर्वत की खड़ी चढ़ाई। ऊबड़-खाबड़ रास्तों से ऊपर जाने के लिए हाथ-पैर से रेंगते हुए काफी मशक्कत करनी पड़ी। रास्ता नदी पर जाकर खत्म हो जाता था। उसके बाद मुझे घास-फूस और झाड़ियों, झाड़-झंखाड़ को पकड़-पकड़कर ऊपर चढ़ाई करनी पड़ी। फिसलनवाला रास्ता तथा रास्ते में चीड़ की पेड़ की पड़ी हुई सुइयाँ ऊपर चढऩा बहुत मुश्किल पैदा कर रही थी। पर अंत में मैं ऊपर पहुँच ही गया— एक घास से भरा समतल पठार, जिसके चारों ओर चीड़ के पेड़ तथा कुछ जंगली लोकाट के पेड़ थे, जिसमें सफेद फूल आ रहे थे।

यह बड़ी ही सुंदर जगह थी और क्योंकि मुझे गरमी लग रही थी और पसीना आ रहा था मैंने अपने ज्यादातर कपड़े उतार दिए और लोकाट के पेड़ के नीचे विश्राम करने लगा। ऊपर चढऩा काफी थका देनेवाला था। एक ताजा हवा के झोंके ने फिर से मेरे अंदर जान फूँक दी। चीड़ के पेड़ों से आती हवा से एक गुनगुनाहट की आवाज पैदा हो रही थी, और हरी-घास पर छोटे-छोटे बटरकप के फूल खिल रहे थे। वातावरण में झींगुर और घास के कीड़ों की आवाजें आ रही थी।

कुछ समय बाद मैं उठा और चारों तरफ के दृश्य का अवलोकन किया, उत्तर की ओर लैंजडर था। जिसके कॉटेज के लाल-मुर्चा लगी छतें नजर आ रही थी। दक्षिण की तरफ

एक चौड़ी घाटी में चाँदी की तरह चमकती एक नदी की धारा बहकर गंगा की तरफ जा रही थी। पश्चिम में रोलिंग पहाडियाँ, थोड़े से यहाँ-वहाँ जंगल और एक छोटी सी घाटी थी। पर्वतों से घिरी घाटी मेरी उपस्थिति में डिस्टर्ब होकर एक हिरन चिल्लाते हुए इधर से उधर खुली जगह में होता हुआ भागकर गया और सामने की ढलान पर चला गया। लंबी पूँछवाले नीले मैगपाइज का एक झुंड उड़कर एक पेड़ से दूसरे ओक के पेड़ पर जाकर बैठ गया।

मैं अकेला था, हवा और आसमान के साथ अकेला। शायद कई महीने या कई साल हो गए होंगे, जब यहाँ से कोई मानव गुजरा होगा। मुलायम घनी घास सबसे अधिक मन लुभा रही थी, आकर्षित कर रही थी। धूप से गरम हरी घास पर मैं लेट गया। मेरे शरीर के भार से उनमें जो छोटे-छोटे क्लवा और कैटमिंट के पौधे से उसमें एक सुगंध हवा में फैल गई। एक छोटी सी चिडिया लेडीबर्ड मेरे शरीर पर चढ़कर मेरे शरीर का मुआयना करने लगी। सफेद तितलियों का एक झुंड मेरे चारों तरफ फडफ़ड़ाकर उड़ने लगा।

मैं सो गया। मुझे कुछ पता नहीं मैं कितनी देर सोया, पर जब मैं उठा तो मेरे पैरों और जाँघों पर एक असामान्य अनुभव हो रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे गुलाब की पंखुडियों से मुझे कोई सहला रहा हो।

अब मेरी सारी सुस्ती गायब हो गई थी और मैंने जब आँखें खोलीं तो पाया कि एक छोटी सी लड़की—या वह एक औरत थी? लगभग दो इंच ऊँची मेरी छाती पर पालथी मारकर बैठी थी और मुझे बहुत ध्यान से देख रही थी। उसके बाल लंबी चोटियों के रूप में लटक रहे थे। उसका रंग मधु की तरह था। उसके छोटे-छोटे बाल बाँजफल की तरह थे। उसके हाथ में बटर कप का एक फूल था, जो इसके हाथ से बड़ा था तथा जिससे वह मेरे शरीर को सहला रही थी। मेरे सारे शरीर में झुनझुनी हो आई। मेरे अंग-अंग में एक कोमोत्तेज़क लहर दौड़ रही थी।

एक छोटा सा लड़का—आदमी? बिलकुल नंगा लड़का अब परी लड़की के साथ हो लिया उन्होंने अपने हाथ पकड़े और मेरी आँखों में मुसकराकर देखने लगे। उनके दाँत मोती की तरह थे, उनके होंठ खूबानी के फूल की तरह मुलायम थे। क्या वे प्रकृति की आत्माएँ थीं या फूलों की परियाँ, जिनके बारे में मैं अकसर स्वप्न देखा करता था। मैंने अपना सिर उठाया और देखा कि ऐसे तमाम छोटेछोटे लोग मेरे ऊपर चढ़े हुए मेरे पैर, जाँघों, कमर और हाथ को देख रहे थे, अनुभव कर रहे थे। नाजुक परवाह करनेवाले मृदुल और सहलाते हुए प्राणी। वे मुझे प्यार करना चाहते थे।

वे मुझे ओस, पराग या और किसी मुलायम इत्र से नहला रहे थे। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं। भौतिक सुख की लहर मेरे ऊपर दौड़ पड़ी। मुझे इस तरह की किसी चीज का पहले पता नहीं था। मेरे अवयव अब पनीले हो गए थे। मेरे ऊपर आसमान घूम रहा था और मैं संभवत: बेहोश हो गया था।

जब मैं जागा, लगभग एक घंटे बाद वे छोटे-छोटे लोग चले गए थे। मधुलता (हनीसफल) की खुशबू सारे वातावरण में व्याप्त थी। एक गडग़ड़ाहट ने मुझे ऊपर देखने

को विवश किया। ऊपर काले-काले बादल छाए थे बारिश होने की धमकी दे रहे थे। क्या बादलों की गडग़ड़ाहट से डरकर वे शिलाओं के नीचे या पेड़ की जड़ों में चले गए थे? क्या वे किसी अजनबी के साथ खेल- कूद कर थक गए थे? अवश्य ही वे कुछ नटखट थे, क्योंकि जब मैंने अपने कपड़े ढूँढऩा चाहे और चारों ओर नजर घुमाकर देखा तो मेरे सारे कपड़े गायब थे।

मैं एकदम घबड़ा गया। मैं इधर-उधर भागा-दौड़ा पेड़ों और झडिय़ों के पीछे देखा; पर सब व्यर्थ कपड़े कहीं नजर नहीं आए। परियों के साथ कपड़े भी गायब हो गए थे—हाँ, यदि वास्तव में वे परियाँ थीं।

बारिश शुरू हो गई थी। बड़ी-बड़ी बूँदे शिलाओं से टकराकर दूर-दूर छिटक रही थीं। बर्फ गिरने लगी थी और थोड़ी देर पर सारी पहाड़ी ढलान बर्फ से ढक गई थी। कहीं भी कोई सिर छुपाने की जगह नहीं थी। नंगा ही मैं नदी की धारा की ओर नीचे दौड़ने लगा। मुझे देखने के लिए कोई नहीं था—केवल एक पहाड़ी बकरी दूसरी दिशा में दौड़ती जा रही थी। तेज हवा के झोंके से बारिश और बर्फ के थपेड़े मेरे मुँह और सारे शरीर पर लग रहे थे। हाँफते-काँपते मैंने एक लटकी हुई बड़ी चटटान के नीचे शरण ली। जब तक कि तूफान चला नहीं गया। अब तक लगभग शाम हो गई थी, और मैं अपने कॉटेज तक बिना किसी से मिले लौटा, केवल कुछ लंगूरों के, जो मुझे देखकर चौंककर आपस में बोलने लगे थे।

मेरा काँपना नहीं रुका, अतएव मैं एकदम से बिस्तर में घुसकर सोने गया। मुझे बिना किसी सपने के गहरी नींद आई और अगली सुबह जब मैं उठा तो मुझे तेज बुखार था। बुखार 104.0f था। मैंने कुछ गोलियाँ खाईं और फिर बिस्तर पर लेट गया।

फिर मैं दोपहर में देर तक लेटा रहा। मेरी तंद्रा तभी टूटी, जब पोस्टमैन ने खट-खट किया। मैंने पत्रों को बिना खोले (जो असामान्य था) मेज पर रख दिया और फिर बिस्तर पर लेट गया।

मुझे लगभग एक हफ्ते बुखार रहा, जिससे मैं काफी कमजोर हो गया और अधमरा हो गया। चाहते हुए भी मैं अब परी टिब्बा पर चढ़ नहीं सकता था; पर मैं खिड़की के पास अपनी कुरसी पर अधलेटा उस सूने पहाड़ के ऊपर से बादलों को आते-जाते देखता रहता था। देखने में वह सूना लगता था, पर आश्चर्यजनक रूप से उसमें बस्ती थी। जब अँधेरा हो जाता था तो मैं प्रतीक्षा करता था कि हरी-परी रोशनियाँ मुझे दिखेंगी; पर मुझे ऐसा लगता था कि अब शायद ही वे मुझे दिखाई दें।

अतएव मैं अपनी डेस्क टाइपराइटर 'न्यूजपेपर आर्टिकल्स और पत्राचार पर लौट आया। यह बड़े अकेलेपन का समय था। मेरे जीवन में मेरा विवाह सफल नहीं हुआ; मेरी पत्नी जो ऊँची सोसाइटी में रहना पसंद करती थी। उसे एक असफल लेखक के साथ जंगल में कॉटेज में रहना नागवार था। वह मुंबई में अपने ज्यादा सफल कैरियर के पीछे भाग रही थी। धन कमाने की मेरी इच्छा हमेशा आधे दिल से ही रही है; जबकि मेरी पत्नी को हमेशा अधिक-से-अधिक धन चाहिए था। उसने मुझे छोड़ दिया था—छोड़ दिया था मेरी किताबों और मेरे सपनों के साथ।

परी टिब्बा पर वह अजीब हार सा अनुभव? आखिर क्या था? या मेरी अतिशय सक्रिय कल्पना ने उन वायु की आत्माओं का सृजन किया था, वह ऊपरी वायु के सिद्धांत? क्या वे सब जमीन के अंदर रहनेवाले थे, जो पहाड़ों के पेट में काफी भीतर रहते थे। मुझे पता था कि यदि मुझे अपनी अक्ल ठिकाने पर रखनी है तो मुझे रोजमर्रा के मामूली कामों में व्यस्त होना पड़ेगा। जैसे कि शहर जाकर ग्रोसरी (राशन-पानी) लाना, लीकिंग छत को ठीक करवाना, बिजली का बिल जमा करवाना था। बैंक में जाकर चेक जमा कराना, जो कभी-कभी भूलेभट के आ जाते थे। तमाम मामूली चीजें जो जीवन को बहुत सुस्त और शुष्क बनाती हैं। सच तो यह है कि जिसे हम जीवन कहते हैं, वह जीवन है ही नहीं। जीवन के रुटीन और निश्चित रास्ते जीवन के अभिशाप हैं और हम इन छोटीमोटी चीजों से भागने या दूर जाने के लिए कुछ भी कर सकते हैं। चाहे वह कुछ घंटों के लिए अपने को शराब में डुबोना हो या ड्रग्स (नशीले पदार्थ का सेवन) या वर्जित सेक्स या फिर गोल्फ—हममें से कुछ लोग परियों के साथ अंडर ग्राउंड (धरातल) में चले जाना चाहेंगे, जहाँ उन छोटे-छोटे लोगों ने पृथ्वी के गर्भ में शरण ली हुई है, जिससे वे आदमियों के मारक तरीकों से बच सके, क्योंकि वे इतने ही नाजुक और नष्टवान हैं जैसे कि फूल और तितलियाँ। जितनी सुंदर चीजें होती हैं, वे आसानी से नष्ट हो जाती हैं।

घने होते हुए अँधेरे में अपनी खिड़की के पास बैठा अपने बिखरे हुए खयालों को विचारों को कलमबद्ध कर रहा हूँ—जब मैं उन्हें (परियों से) आते हुए देखता हूँ, आपस में हाथ पकड़े हुए, कुहासे के बादलों पर चलते हुए चमकते हुए इंद्रधनुष के रंगों में डूबा, क्योंकि उनके पास से परी टिब्बा से मेरी खिड़की तक एक इंद्रधनुष का पुल बन गया है।

मैं जाने के लिए तैयार हूँ। प्यार करने के लिए और प्यार किए जाने के लिए उनकी गुप्त माँद में या ऊपरी वायु में—इस दुनिया जिसमें हम मेहनत करते हैं, के दम घोंटू वातारण और कैद से दूर।

परियो आओ और मुझे ले जाओ। मुझे उसी तरह से प्यार करने के लिए जैसे उस ग्रीष्म के दिन किया था।

# वह कौन थी?

"मौसम बहुत ठंडा था और जैसे चंद्रमा हिमालय की चोटियों के ऊपर से आया, मैंने देखा कि जहाँ-तहाँ हिल स्टेशन की सड़क पर बर्फ जमी हुई थी।" मैं बहुत ही खुश रहता, यदि मैं बिस्तर में एक किताब और हॉट-वाटर (गरम पानी) की बोतल लेकर सो सकता। पर मैंने कपाड़िया से कह रखा था कि मैं उनकी पार्टी में आऊँगा और यह बहुत अशिष्ट बात होती, यदि मैं बिस्तर पर घर में ही पड़ा रहता। मैंने दो स्वेटर पहने एक पुराना फुटबॉल का स्कार्फ लगाया और ऊपर से कोट पहना तथा चाँदनी रात में सड़क पर चल पड़ा।

कपाड़िया का घर लगभग एक मील से कुछ अधिक दूर था और अभी मैं आधे ही रास्ते पर पहुँचा था कि मैंने देखा कि बीच सड़क पर एक लड़की खड़ी थी।

वह सोलह-सत्रह साल की रही होगी। वह कुछ पुराने फैशन की लग रही थी। लंबे बाल, जो कमर तक आ रहे थे और एक सलमे सितारेवाली ड्रेस पहने हुई थी, जिससे मुझे अपनी दादी के अलबम में लगे हुए फोटो की याद आ गई। जब मैं नजदीक गया तो देखा कि उसकी बड़ी सुंदर आँखें और मोहक मुसकान थी।

"गुडइवनिंग। मैंने कहा।" बाहर निकलने के लिए यह बड़ी ठंडी रात है। "क्या पार्टी में जा रहे हैं?" उसने पूछा।

"बिलकुल सही!" और आपके सुंदर ड्रेस से मैं अंदाजा लगा सकता हूँ कि आप भी वहीं जा रही हैं। आ जाइए, हम लगभग वहाँ पहुँच ही गए हैं। वह मेरे साथ चलने लगी और जल्द ही हमें कपाड़िया के घर से देवदार के पेड़ों से छनकर आ रही रोशनी दिखाई पड़ने लगी। उस लड़की ने बताया कि उसका नाम जूली था। मैंने उसे पहले कभी नहीं देखा था; पर मुझे हिल स्टेशन पर आए अभी थोड़े ही दिन हुए थे।

वहाँ पार्टी में काफी लोग आए हुए थे, पर जूली को कोई नहीं जानता था। हर किसी ने सोचा कि वह मेरी दोस्त है। मैंने इस बात से मना भी नहीं किया। यह बात साफ थी कि वह अकेलापन महसूस कर रही थी और लोगों के साथ मिलना-जुलना तथा दोस्ती बढ़ाना चाहती थी। वह खूब मजे भी ले रही थी। मैंने उसको बहुत खाते-पीते भी नहीं देखा, पर वह एक ग्रुप से दूसरे झुंड में फुदक- फुदककर जा रही थी बातचीत करते हुए, सुनते हुए और हँसते हुए; और जब संगीत शुरू हुआ तो फिर वह लगातार नाच रही थी। कभी अकेले तो कभी किसी पार्टनर के साथ। इससे कोई मतलब नहीं था कि कौन पार्टनर था? वह पूरी तरह से संगीत में ओत-प्रोत थी।

लगभग आधी रात थी। जब मैं वहाँ से जाने के लिए उठा, मैंने काफी मात्रा में 'पंच पी

लिया था और बिस्तर में सोने के लिए तैयार था। जब मैं अपने मेजबानों से विदा ले रहा था, गुड नाइट कह रहा था और सबसे 'मेरी क्रिसमस कह रहा था, जूली ने भी मेरी बाँहों में बाँहे डालकर कहा कि वह भी घर जाएगी। जब हम बाहर निकल आए, तब मैंने उससे पूछा, "तुम कहाँ रहती हो, जूली?"

"पहाड़ के ऊपर वोल्व्सबर्न पर।" उसने बताया।

"ठंडी हवा चल रही है। मैंने कहा, यद्यपि तुम्हारी ड्रेस बहुत अच्छी है पर यह तुम्हें, सर्दी से नहीं बचा सकेगी। ऐसा करो तुम मेरा ओवरकोट ले लो। मैं अच्छी तरह कपड़े ओढ़े-पहने हूँ।"

उसने कोई प्रतिवाद नहीं किया और मैंने अपना ओवरकोट उसे पहना दिया। फिर हम घर की ओर चल दिए। पर मुझे उसे सारे रास्ते लेकर नहीं जाना पड़ा। लगभग उसी जगह पर जहाँ हम पहले मिले थे, उसने कहा, "यहाँ से एक शॉर्ट- कट है और मैं यहाँ से पहाड़ किनारे-किनारे चली जाऊँगी।"

"क्या तुम्हें रास्ता अच्छी तरह पता है?" मैंने पूछा, "यह बड़ा सँकरा रास्ता है।"

"अरे, मुझे यहाँ के सारे रास्ते पता हैं, मैं इसका इस्तेमाल हर समय करती हूँ, और इसके अलावा आज की रात बहुत चमकीली है।"

"ठीक है, कोट पहने रहो।" मैंने कहा मैं इसे कल ले लूँगा।

पहले वह कुछ हिचकिचाई, फिर मुसकराकर सिर हिलाया। फिर वह ऊपर पहाड़ों में गायब हो गई और मैं अपने घर की ओर अकेला चल पड़ा।

अगले दिन वोल्व्सबर्न की ओर चल पड़ा। रास्ते में मैंने छोटी सी नदी पार की, जिससे शायद उस घर का नाम पड़ा था और एक खुले लोहे के दरवाजे के अंदर दाखिल हो गया। पर वहाँ तो घर के नाम पर लगभग कुछ नहीं बचा था, बिना छत के भग्नावशेष कुछ पत्थर के ढेर एक टूटी हुई चिमनी कुछ डॉरिक खंभे, जहाँ पहले कभी बरांडा रहा होगा। कहीं जूली ने मेरे साथ कोई मजाक किया था या मैं गलत घर में आ गया था?

मैं पहाड़ों का चक्कर लगाकर मिशन हाउस पहुँचा, जहाँ मि. टेलर रहते थे और वृद्ध मिसेज टेलर से पूछा, क्यों वे किसी जूली नाम की लड़की को जानती हैं?

"नहीं, मैं ऐसी किसी लड़की को नहीं जानती।" उसने कहा, "वह कहाँ रहती है?"

"मुझे वोल्व्सबर्न बताया गया था, पर वह घर तो एक खँडहर है।" मैंने कहा। "चालीस साल से ज्यादा से तो वोल्व्सबर्न में कोई रहता नहीं। वहाँ मौकिनाम परिवार रहता था, एक पुराना परिवार, जो यहाँ आकर बस गए थे; पर जब उनकी लड़की की मृत्यु हो गई..."वह कहते-कहते रुक गई और मुझे अजीब-सी नजरों से देखा।

"मेरे खयाल से उसका नाम जूली था।" खैर, कोई बात नहीं, जब उसकी मृत्यु हो गई तो

उन्होंने घर बेच दिया और कहीं अन्यत्र चले गए। उस घर में फिर कभी कोई नहीं रहा और वह धीरे-धीरे ढह गया; पर यह वह जूली नहीं हो सकती, जिसे तुम ढूँढ़ रहे हो। वह खाँसी और क्षय रोग से मर गई और उन दिनों इसका कोई इलाज नहीं था। उसकी कब्र सीमेट्री में है। नीचे सड़क से चले जाओ। मैंने मिसेज टेलर का धन्यवाद किया, और सड़क पर नीचे कब्रिस्तान की ओर चल पड़ा, वास्तव में मुझे और कुछ जानने की जरूरत नहीं थी, पर अपनी इच्छा के विरुद्ध उधर चल पड़ा।

वह एक छोटा सा कब्रिस्तान था। देवदार के पेड़ों के नीचे। आप नीले शांत आसमान के नीचे हिमालय के पहाड़ों पर शाश्वत हिम देख सकते थे। यहाँ पर ब्रिटिश साम्राज्य को बनानेवालों की अस्थियाँ पड़ी थीं—सिपाही, व्यापारी, खोजी साहसी लोग, उनकी पत्नियाँ और बच्चे। मुझे जूली की कब्र ढूँढ़ने में ज्यादा समय नहीं लगा। उसका एक साधारण हेड-स्टोन था, जिस पर उसका नाम साफ-साफ लिखा था—

जूली मैकिनॉन

1923-39

हमारे साथ एक क्षण

अगले क्षण छिन गई

अपने निर्माता के पास चली गई

चिरविश्राम के लिए।

यद्यपि कई मानसून इस सीमेट्री में आए और पत्थरों के ऊपर से उनको धोते हुए चले, पर इस -टॉब्ब स्टोन कब्र को छू नहीं सके।

मैं वहाँ से चलने को ही था, जब मेरी नजर टॉब्ब-स्टोन के पीछे एक जानी पहचानी चीज पर पड़ी। मैं घूमकर उसके पीछे गया। घास पर बड़े सलीके से तह किया हुआ मेरा कोट रखा था।

# बिन चेहरे का आदमी

"ग्रामीण जीवन के हास्य की एक झलक आपको मिल जाएगी, यदि मैं यह कहानी एक दंतकथा द्वारा शुरू करूँ तो।" मैं एक रात को गाँव में अकेला चल रहा था, जब रास्ते में मुझे एक बूढ़ा आदमी लालटेन लेकर चलता हुआ मिला। मुझे तब आश्चर्य हुआ, जब मैंने पाया कि वह आदमी अंधा था। मैंने उससे पूछा, "आप लालटेन लेकर क्यों चल रहे हैं, जब आप देख ही नहीं सकते?" "मैं इसे इसलिए लेकर चलता हूँ ,जिससे कि कोई बेवकूफ आदमी मुझसे अँधेरे में टकरा न जाए।" उसने उत्तर दिया। जो घटना मैं अब आपको बताने जा रहा हूँ, उससे इसका थोड़ा सा ही संबंध है; पर इससे कहानी की सही टोन और सेटिंग हो जाती है। एक दिन देर रात में मि. ओलिवर, जो एक एंग्लो-इंडियन स्कूल टीचर थे।

अपने स्कूल से, जो शिमला के बाहरी किनारे पर था, लौट रहे थे। स्कूल इंग्लिश पब्लिक स्कूल की तर्ज पर चलाया जा रहा था। अधिकतर अच्छे भारतीय परिवारों के लड़के वहाँ पर शिक्षा ग्रहण करते थे 'लाइफ पत्रिका ने भारत के ऊपर एक फीचर में इसे पूर्व का 'एटन कहा था।

व्यक्ति-परखता को बढ़ावा नहीं दिया जाता था; वे सभी आदमियों या जनता के 'नेता बनने के लिए नियत थे।

मि. ओलिवर स्कूल में पिछले कई सालों से पढ़ा रहे थे। ऐसा प्रतीत होता था जैसे वह अनंत काल से यही काम कर रहे थे; क्योंकि एक के बाद दूसरे दिन उसी एक रास्ते से आ जाता था। वही स्टील, जो उसके पहले दिन था। स्कूल से लगभग 2 मील की दूरी पर शिमला बाजार था, जहाँ पर सिनेमा और रेस्टोरेंट थे और मि. ओलिवर जो एक बैचलर थे, शाम को घूमते-फिरते शहर बाजार में आ जाते थे। और फिर देर शाम को चीड़ के जंगलों से शॉर्टकट लेते हुए घर पहुँच जाते थे।

जब तेज हवा चलती तो चीड़ के पेड़ों से उदास भयानक आवाजें आतीं, जिससे ज्यादातर लोग मेन रोड पर ही रहते, पर मि. ओलिवर एक नर्वस या कल्पनाशील व्यक्ति नहीं थे। वे एक टॉर्च लेकर चलते थे और जिस रात की घटना मैं लिख रहा हूँ। टॉर्च की पीली रोशनी—उसकी बैटरी समाप्तप्राय थी। जब-तब पहाड़ी रास्तों पर इधर-उधर पड़ रही थी। जब टॉर्च की टिमटिमाती रोशनी पत्थर पर बैठे एक लड़के पर पड़ी तो मि. ओलिवर रुक गए। लड़के शाम को 7 बजे के बाद स्कूल से बाहर नहीं रह सकते थे, और इस समय रात के नौ बजे के बाद का समय था।

"यहाँ पर बैठे हुए तुम क्या कर रहे हो, लड़के?" मि. ओलिवर ने जरा सख्ती से पूछा और उसके पास गए जिससे उस शैतान लड़के को वह पहचान सकें। पर जब वह बच्चे की ओर

बढ़ रहे थे, तो उन्हें लगा कि जैसे कुछ गड़बड़ है। ऐसा लग रहा था जैसे कि लड़का रो रहा है। उसका सिर लटका हुआ था और उसने अपना चेहरा दोनों हाथों से ढाँप रखा था और उसका शरीर बुरी तरह काँप रहा था। पर उसकी रुलाई बड़ी अजीब और शांत थी। मि. ओलिवर को कुछ परेशानी-सी महसूस हुई।

"वेल, क्या बात है?" उनका गुस्सा अब चिंता में बदल गया था। तुम किस लिए रोए जा रहे हो? लड़के ने न उत्तर दिया, न ही सिर उठाकर देखा। उसका शरीर अभी भी काँपे जा रहा, खामोश सिसकियों के साथ।

"कम ऑन लड़के, तुम्हें इस समय बाहर नहीं होना चाहिए था। तुम्हें क्या परेशानी है, मुझे बताओ ऊपर देखो।"

लड़के ने ऊपर देखा। उसने अपना हाथ चेहरे पर से हटाया और अपने गुरु की ओर मुँह उठाकर देखा। मि. ऑलिवर के टॉर्च की रोशनी उस लड़के के चेहरे पर पड़ी—यदि आप उसे चेहरा कह सकते थे।

उसके चेहरे पर न आँख, न कान थी, न मुँह था; न नाक थी। यह एक गोलमटोल चिकना चेहरा था। और उसके ऊपर एक स्कूल की कैप और यहाँ पर कहानी खत्म हो जानी चाहिए थी—जैसाकि पहले कई लोगों के साथ हो चुका था, जो कि ऐसे अनुभव के बाद अकारण ही दिल के दौरे से कहीं पर मर गए थे। पर मि. ओलिवर के साथ ऐसा नहीं हुआ। कहानी यहीं खत्म नहीं हुई।

उनके काँपते हाथों से टॉर्च नीचे गिर पड़ी। वह मुड़कर तेजी से पहाड़ी पगडंडियों से नीचे उतरने लगे, अँधेरे में पेड़ों के बीच से दौड़ते-भागते हुए और सहायता के लिए चिल्लाते हुए। अभी भी वह स्कूल की इमारत की तरफ दौड़ रहे थे। जब रास्ते में उन्होंने एक लालटेन लटकती हुई देखी। मि. ओलिवर इससे पहले कभी इतना खुश नहीं हुए थे—रात के चौकीदार को देखकर। वह लडखड़ाते हुए चौकीदार के पास पहुँचे और कुछ गडड-मडड-सा बोलने लगे।

"सर, क्या बात है?" चौकीदार ने पूछा, "क्या कोई दुर्घटना हो गई है? आप भाग क्यों रहे हैं?"

"मैंने कुछ देखा—कुछ भयानक। एक लड़का जंगल में रो रहा था। और उसका चेहरा नहीं था।"

"चेहरा नहीं था," साहब?

"न आँख, न नाक; न मुँह... कुछ भी नहीं।"

"क्या आपके कहने का मतलब है वह इस तरह का था?" चौकीदार ने पूछा। उसने लालटेन अपने चेहरे पर दिखाई। चौकीदार के भी आँख, कान, नाक कुछ भी नहीं था। भौंहें भी नहीं थीं।

तेज हवा के झोंके से लालटेन बुझ गई और मि. ओलिवर को हार्ट अटैक हो गया।

# गरुड़ की आँखें

"वह बहुत तेज कर्णभेदी आवाज थी, जैसे कोई कुत्ता जोर से चीख रहा हो। जय ने जंगली स्ट्रॉबेरी, जो वह चुन रहा था और जो घास में उग रही थी, उसे छोड़कर ऊपर की ओर देखा। उसके पास एक कुत्ता था। झबरीला, जिसका नाम मोटू था। पर मोटू न चीखा था, न गुर्राया और न ही भौंका था। यह अजीब सी-आवाज सुनी थी। अब यह समझ पाने पर कि वह कैसी आवाज थी, वह अपने पाँवों पर कूद के खड़ा हो गया। अपने कुत्ते को बुलाया, और अपनी भेड़ों को बुलाकर घर की ओर हाँकने लगा। मोटू उसकी ओर उछलता हुआ आया कि अब कोई खेल शुरू होगा।"

"अभी नहीं, मोटू।" जय ने कहा, "हमें जल्दी से मेमनों को घर पहुँचाना है उसने फिर से आसमान की ओर देखा।"

उसने अब देखा। एक काला धब्बा सूरज के विपरीत धीरे-धीरे बड़ा होता हुआ, जैसे-जैसे वह पर्वत का चक्कर लगा रहा था। और हर क्षण नीचे आता हुआ—एक गोल्डन ईगल (गरुड़) हिमालय की ऊँचाई पर आसमान का राजा अपने शिकार को तेजी से नीचे आकर झपटने के लिए तैयार।

क्या उसने एक चितराल या महोख देख लिया या वह उसके किसी मेमने के पीछे पड़ा था? जय का कोई भी मेमना अभी तक किसी गरुड़ का शिकार नहीं बना था; पर और कई चरवाहे बताते थे कि उनके झुंड के मेमने की ताक में वह गरुड़ रहता था। भेड़ पहाड़ के नीचे एक तरफ को निकल गई थी और जय उनके पीछा दौड़ा कि कहीं उनमे से कोई मेमना इधर-उधर न चला गया हो।

मोटू बहुत जोरों से भौंकता हुआ दौड़ रहा था। वह भेड़ों को इकटठा रहने में बहुत कुशल नहीं था। कई बार तो वह उनसे जाकर लड़ जाता था और भेड इधर-उधर ढलान पर लुढ़क जाती थी; पर उसके भालू की तरह मोटे तगड़े शरीर की वजह से तेंदुए और भेडिये उससे दूर ही रहते थे।

जय अपने मेमनों को गिनने लगा। वे अपनी माताओं के पास खड़े मिमियाँ रहे थे। एक... दो... तीन... चार...,

एक पाँचवीं भी होनी चाहिए थी। जय उसको ढलान के नीचे नहीं ढूँढ़ सका। उसने फिर उस राँकी लेज पहाड़ी खोह के ऊपर देखा, जो खड़ी चढ़ाई तुंग मंदिर की ओर जा रही थी। गरुड़ चटटानों के ऊपर चक्कर लगा रहा था।

एक क्षण के लिए वह पक्षी उनकी आँखों से ओझल हो गया, फिर वह ऊपर उड़कर आया और उसके बड़े भयानक पंजों में एक छोटा सा प्राणी था, जिसे वह कसकर पकड़े हुए था।

"उसने एक मेमने को दबोच लिया है!" जय चिल्लाया। वह हाथ-पाँवों के बल चटटान पर चढऩे लगा। मोटू उसके आगे-आगे उस बड़ी चिडिय़ा पर क्रोध से भौंकते हुए भागा, जब वह जूनीपर (आशर) के ठूँठ पर से ऊपर उड़ता हुआ अपने ऊँचे बने घोंसले पर पहुँच गया, जो तुंग के ऊपर चटटानों पर बना था।

जय और मोटू इसके अलावा कि उसे ऊपर जाकर गायब होते देखें, कुछ न कर सके। मेमना तो तभी मर गया था, जब उसने उसे पंजा मारा था। बाकी भेड़ों के झुंड को पता भी नहीं चला कि क्या हो गया था। वे अब भी बेखबर पहाड़ की ढलान पर लगी हरी-हरी घास को चर रही थीं।

"बेहतर होगा कि हम उन्हें हाँककर घर ले चलें, मोटू।" जय ने कहा और लड़के के सिर हिलाते ही वह विशाल कुत्ता भेड़ों को घर की ओर खदेड़ने लगा, जो उसका प्रिय खेल था। जल्द ही वे सब इधर-उधर बिखर गईं, जय भाग- भागकर उनको फिर से एकत्र करने लगा। अंतत: वे भागते-दौड़ते घर पहुँच ही गए। "एक बढ़िया मेमना चला गया। जय ने अपने आप से कहा। "मैं सोच रहा हूँ, दादाजी क्या कहेंगे? दादाजी ने घटना जानी तो कहा, "कोई बात नहीं, एक न एक दिन यह होना ही था। गरुड़ भेड़ों को कई दिन से देख रहा होगा।

दादी अम्मा, जो दुनियादारी ज्यादा करती थीं, "हम उस मेमने को 300 रुपए में बेच सकते थे। भविष्य में तुम ज्यादा सावधान रहना। जय, जब तुम भेड़ों की रखवाली कर रहे हो, उस समय तुम सो नहीं जाना या कहानी की किताबे नहीं पढ़ना।

"मैं आज सुबह पढ़ नहीं रहा था।" जय सच-सच बोला, पर वह यह बताना भूल गया कि वह उस वक्त स्ट्राबेरी चुन रहा था।

"उसके लिए पढ़ना अच्छा है।" दादाजी ने कहा, जिसको कभी स्कूल जाने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था। उनके जमाने में पहाड़ों पर स्कूल नहीं थे। अब हर गाँव में एक स्कूल है।

"रात में पढऩे के लिए बहुत समय रहता है।" दादी अम्मा ने कहा। वह उनके गाँव माकू में, जो एक कमरे का स्कूल था। उसके बारे में कुछ अच्छा विचार नहीं था।

"ठीक है, अब अक्तूबर की छुट्टियाँ हैं।" दादाजी ने कहा, अजमया वह यहाँ पर हमारी मदद करने और भेड़ें चराने के लिए थोड़े न रहता। इस महीने के आखिर में बर्फ पड़ने लगेगी और फिर हमें यहाँ से अपनी भेड़ों के साथ नीचे जाना होगा। तब पढऩे के लिए तुम्हारे पास काफी समय रहेगा।

माकू में जो थोड़ा गरम घाटी में थे, जय के माता-पिता के पास थोड़ी सी जमीन थी, जिस पर वे ज्वार, बाजरा और आलू उगाते थे। बूढ़े लोग गरमियों में अपनी भेड़ों को लेकर उन्हें चराने के लिए घास-स्थली में आ जाते थे। वे लोग एक छोटे से पत्थर के झोपड़े में रहते थे जो उस रास्ते से थोड़ा हटकर था, जिससे तीर्थयात्री प्राचीन तुंग मंदिर को जाते थे। समुद्र-तट से 12,000 फीट की ऊँचाई पर स्थित वह हिंदू मंदिर अंतरंग हिमालय पर्वत-

शृंखला में सबसे ऊँचा मंदिर था।

इस घटना के दूसरे दिन जय और मोटू बहुत सावधान थे। उन्होंने भेड़ों को अपनी आँखों से एक मिनट के लिए भी ओझल नहीं होने दिया, न ही वह गरुड़ उस दिन उन्हें दिखा।

"क्या करेंगे, यदि वह फिर से हमला करता है?" जय सोच रहा था, "मैं उसे कैसे रोकूँगा?"

वह विशाल गरुड़ अपने शक्तिशाली चोंच और पंजों के साथ उस छोटे लड़के या कुत्ते के सामने कहीं ज्यादा भयानक था। उसके पीछे के पंजों, जो चार इंच से अधिक का था, उसका सबसे खतरनाक हथियार था। जब वह पंख फैलाता था तो एक टिप से दूसरे टिप तक की उसकी चौड़ाई आठ फीट थी।

उस दिन वह बाज नहीं आया, क्योंकि उसका पेट पिछले दिन के भोजन से भरा हुआ था। वह अपने ऊँचे से नीड़ में आराम कर रहा था। उसकी चटटान के चारों ओर, जो उसका घर था, कई तरह की चिडियों जैसे महोख, चितराला, स्नो कॉक (मुरगा) और यहाँ तक कि लोमड़ी की हड्डियाँ बिखरी पड़ी थीं। गरुड़ की एक साथिन भी थी, पर चूँकि यह उनके प्रजनन का समय नहीं था, वह भी अपने शिकार की तलाश में गई हुई थी। गरुड़ अपनी चटटान पर बैठा शान से घाटी की ओर घूर रहा था। उसकी सख़्त बिना पलक झपकाई आँखों से कुछ भी नहीं छुप पाता था। उसकी अजनबी पीली-नारंगी आँखें 100 गज दूर नीचे एक मैदानी चूहे या छोटे से खरगोश को देख सकती थीं।

पर्वत पर और भी गरुड़ थे, पर वे अपने-अपने क्षेत्रों में ही रहते थे। उनमें से कुछ साहसी गरुड़ मेमनों का शिकार करते थे, क्योंकि वे (मेमने) हमेशा आदमियों और कुत्तों द्वारा रक्षित रहते थे।

गरुड़ अपने ऊँचे नीड़ से उड़ा और नीचे तुंग घाटी का चक्कर काटते हुए आ गया।

नीचे सलेटी ग्रेनाइट के पहियों से बना पुराना मंदिर था। तीर्थयात्रियों की एक सर्पीली कतार पतले से पथ पर थी। चोटी के नीचे हरे-भरे घास के मैदान गरुड़ ने लड़के और कुत्ते को देखा, पर उनसे उसे कोई खतरा नहीं था। उसकी आँखें तो उस मेमने पर थीं, जो अन्य चर रही भेड़ों से अलग घास पर उछल-कूद कर रहा था।

जय गरुड़ को तब देख पाया, जब वह चटटानों के ऊपर सौ फीट पर ही रह गया था। वह पक्षी धीरे-धीरे नीचे आ रहा था, खामोशी से; क्योंकि झपटटा मारने के लिए उसने अपना संवेग बना लिया था। अब वह सीधे मेमने पर आया। मोटू ने पक्षी को समय पर देख लिया था। वह धीरे-धीरे गुर्राते हुए मेमने के बगल में उसी वक्त पहुँचा, जब गरुड़ झपटटा मारने को नीचे उतरा।

एक जोरदार टक्कर हुई; पर उड़ता हुआ गरुड़ गुस्से से चीखा। मेमना ढलान से नीचे लुढ़क गया और मोटू भी दर्द से कराहा, क्योंकि गरुड़ की मजबूत चोंच उसके पैर के ऊपर जोर से लगी थी।

इस अप्रत्याशित टक्कर से विशाल पक्षी भौंचक्का होकर घबराकर और जरा लडख़ड़ाते हुए अपने विशाल पंखों को फडफ़ड़ाते हुए उड़ गया।

मोटू ने मेमने को बचा लिया था। वह डर गया था, पर मेमने को चोट नहीं लगी थी। वह जोर से मिमियाते हुए, भेड़ों के साथ मिल गया, जो उसके साथ में-में चरने लगीं।

जय दौड़कर मोटू के पास आया, जो पिनपिना रहा था। गरुड़ का अब कोई नामो-निशान नहीं था। उसने जल्दी से अपनी कमीज और बनियान उतारी और उसे मोटू के घाव के ऊपर बाँध दिया, फिर उसे बेल्ट से बाँध दिया।

मोटू उठ नहीं पा रहा था। वह इतना भारी था कि उसे उठाकर ले भी नहीं जा सकता था। जय कुत्ते को अकेला भी नहीं छोडऩा चाहता था, क्योंकि उसे डर था कि गरुड़ उस पर फिर से कहीं आक्रमण न कर दे।

वह खड़ा हो गया। उसने दोनों हथेलियों से अपने मुँह के ऊपर एक प्याला जैसा बनाया और अपने दादाजी को जोर-जोर से चिल्लाकर बुलाने लगा। "दादा, दादा।" जैसे ही दादा ने उसकी आवाज सुनी, वह झटपट दौड़ते हुए ढलान से नीचे आ गए। उसके पीछे-पीछे एक और चरवाहा आया। दोनों ने मोटू को उठाया और घर ले गए।

मोटू का घाव गहरा था, पर दादीजी ने उसे साफ किया और जड़ी-बूटियों को पीसकर उसके घाव पर लगा दिया। फिर उन्होंने गाजर को लंबा-लंबा काटकर उसके ऊपर लगा दिया। यह एक पुराना पहाड़ी इलाज था। उसके बाद पाँव पर पटटी बाँध दी, पर मोटू को अभी दौड़ने-भागने में थोड़ा समय लगेगा, परंतु जब तक वह ठीक होगा, बर्फ पड़ने लगेगी और ऊपर के चरागाह छोड़कर नीचे घाटी में जाने का समय हो जाएगा। लेकिन भेड़ों को चराने तो ले जाना ही होगा और दादाजी ने निश्चय किया कि वह भी बाकी के समय उनके साथ जाया करेंगे। अगले दो-तीन दिनों तक तो उन्होंने गरुड़ को नहीं देखा और जब देखा तो वह अगली पर्वत-शृंखला पर उड़ रहा था। शायद उसे कोई और भोजन का स्रोत मिल गया था या भेड़ों का कोई और झुंड दिख गया हो।

"क्या तुम गरुड़ से डरते हो?" दादाजी ने जय से पूछा। "पहले मैं डरता नहीं था।" जय ने कहा, "जब तक उसने मोटू को घायल नहीं किया था, तब तक मैं नहीं जानता था कि वह इतना खतरनाक हो सकता है; पर मोटू ने भी उसको घायल किया, उससे सीधे टकराकर। "शायद वह अब हमे फिर परेशान नहीं करेगी।" दादाजी ने कुछ सोचते हुए कहा, "एक पक्षी के पर जल्दी ही घायल हो जाते हैं, चाहे वह गरुड़ के ही क्यों न हों।"

जय इस बात का इतना पक्का नहीं था। उसने उसे दो बार हमला करते हुए देखा था। उसे पता था कि वह किसी से डरता नहीं था। जब वह किसी तरह उससे डरना सीखेगा, तभी वह उसके भेड़ों के झुंड से दूर रहेगा।

अगले दिन दादाजी की तबीयत ठीक नहीं थी। उन्हें हरारत हो रही थी। बिस्तर पर लेटे रहे। मोटू तीन पाँवों पर इधर-उधर कूद रहा था। उसके पैर के घाव में अभी भी दर्द था।

"भेड़ों के साथ बहुत दूर नहीं जाना।" दादीजी ने कहा। "उन्हें घर के आस-पास ही चरने दो।"

"पर यहाँ तो शायद ठीक ही घास है।" जय ने कहा।

"मैं नहीं चाहता कि तुम इधर-उधर घूमते रहो, जब कि गरुड़ ऊपर चक्कर लगा रहा है।"

"उसे मेरी छड़ी दे दो।" दादाजी ने अपने बिस्तर पर लेटे-लेटे ही कहा। दादीजी ने उसे कोने से उठाकर जय को दे दिया।

वह जंगली चेरी के पेड़ के लकड़ी की पुरानी छड़ी थी, जिसे दादाजी लेकर अकसर जाया करते थे। लकड़ी मजबूत और पकी हुई थी। छड़ी भी मोटी और लंबी थी। वह जय के कंधे तक पहुँचती थी।

"इसको खो मत देना।" दादाजी ने कहा, "इसको कई वर्ष पहले मुझे एक भ्रमण करते हुए विद्वान ने दिया था, जो तुग मंदिर में आया था। मैं तुम्हें जब तुम बड़े होते तब देता, पर शायद यह सही समय है तुम्हें इसे देने के लिए। यदि गरुड़ तुम्हारे नजदीक आए तो तुम इसे लेकर अपने सिर के ऊपर रख लेना। इससे डरकर वह भाग जाएगा।"

पहाड़ों के ऊपर बादल घिर आए थे और धुन्द की वजह से तुंग का मंदिर दिखना बंद हो गया था। जाड़े की शुरुआत के साथ ही अब तीर्थ-यात्रियों का आना भी कम हो गया था। भेड़ें चरानेवाले भी अब हरे-भरे मैदान छोड़कर कम ऊँचाई पर बने अपने मकानों में वापस जाने लगे थे। बहुत जल्द ही इन ऊँचाईवाले इलाकों पर तेंदुओं, भालुओं और गरुड़ों का एकच्छत्र राज्य हो जाएगा।

जय चेरी-वुड स्टिक (छड़ी) का इस्तेमाल भेड़ों को हाँकने के लिए करने लगा, जब तक कि वह ऊँचाई पर हरे-भरे घास के मैदान में नहीं पहुँच गई। मोटू (कुत्ते) की जगह अब छड़ी ने ले ली थी। भेड़ें भी कुत्ते से ज्यादा छड़ी से काबू में रहती थीं।

अचानक ठंड बद जाने से बर्फ पड़ने की आशंका से दादी माँ ने जय को एक मोटी सी ऊनी जैकेट और एक तिब्बती व्यापारी से खरीदे ऊँचे बूट (जूते) पहना दिया था। वह जूते पहनने का आदी नहीं था, ज्यादातर वह सैंडल पहनता था। इसलिए उसे जूते पहनकर पहाड़ पर चढने-उतरने में दिक्कत हो रही थी। भेड़ों के झुंड को इकटठे रखना बड़ा थका देनेवाला काम था। कुछ कौओं के काँव-काँव करने से जय को पता चल गया कि गरुड़ कहीं पास में ही है, पर धुँध की वजह से ज्यादा दूर तक देख नहीं पा रहा था।

थोड़ी देर बाद धुँध छँट गई और जय को हिमाच्छादित चोटियाँ और उसके पीछे मंदिर दिखाई पड़ने लगा। उसने गरुड़ को भी देखा। वह उसके ऊपर ही चक्कर काट रहा था। जय भेड़ों के झुंड के पास ही रह रहा था। एक आँख उसकी गरुड़ पर थी तो दूसरी आँख झुंड पर, जो थोड़ी बेचैन थीं।

फिर गरुड़ नीचे आया और उनके ऊपर ही चक्कर काटने लगा। उसने मंदिर का चक्कर

लगाया और ऐसा दिखाया कि वह वापस जा रहा है।

जय को पक्का पता था वह फिर आएगा। कुछ मिनटों के बाद वह पहाड़ों के दूसरी तरफ से प्रकट हो गया। अब वह काफी नीचे आ गया था। उसके डैने फैले हुए और बड़े-बड़े पंजे आगे को खुले हुए तथा भेदती हुई आँखें अपने लक्षय पर केंद्रित, जो एक नन्हा सा मेमना था, जो खेलते-कूदते झुंड से अलग नीचे ढलान पर चला गया था।

अब गरुड़ और नीचे उतर आया था, जमीन के काफी नजदीक और जय पर कोई ध्यान नहीं था।

उसने जय को हवा के तेज झोंके के साथ ऊपर से गुजरा और जैसे उसने ऐसा किया, लड़के ने उसको अपनी छड़ी से जो मारा, जाते-जाते उसके पंखों को लग गया।

गरुड़ अपना शिकार पकड़ने से रह गया और छोटा मेमना कूदता हुआ भाग गया।

जय के आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उसने देखा कि वह पक्षी उड़कर दूर नहीं गया, वहीं एक पहाड़ी पर बैठ गया था और लड़के को इस तरह से घूरकर देख रहा था जैसे कोई राजा अपनी दीन प्रजा को देखता है, जब उसने उसे कंकड़ी से मार दिया हो तुम्हारी ये मजाल।

गरुड़ की ऊँचाई लगभग उतनी ही थी जितनी जय की थी। उसके बड़ेबड पंख अभी भी फैले हुए थे। उसकी भयानक आँखें उसे घूर-घूरकर ऐसे देख रही थीं जैसे उसे बेंध देंगी।

जय के मन में तो पहले आया कि वह मुड़कर भाग जाए पर चेरी की मजबूत छड़ी उसके हाथ में थी और उसने सोचा कि अवश्य ही इसके अंदर ताकत है। उसने देखा कि गरुड़ फिर एक बार मेमने पर झपटटा मारने वाला है। अब बजाय भागने के वह छड़ी उठाकर इधर-उधर दौड़ने लगा।

गरुड़ जमीन से कुछ फीट ऊपर उठकर उड़ा और जय के ऊपर अपने विशाल पंजों से मारा।

पर भाग्यवश उसका पंजा जय के भारी मोटे कोट पर पड़ा और उसके बड़े नाखूनों से फटकर उसकी बाँह नीचे गिर पड़ी। उसी समय उसकी भारी छड़ी उसके खुले हुए पंखों में लग गई। गरुड़ दर्द और गुस्से से जोर से चीखा। तब वह मुड़कर और अपने पंख को फडफ़ड़ाते हुए, जो अब चोट की वजह से ठीक से नहीं उड़ पा रहा था, दूर उड़ गया।

जय अब भी छड़ी को पकड़े हुए था, क्योंकि उसे उम्मीद थी कि वह पक्षी फिर उड़कर आएगा। पर गरुड़ दूर एक शिला पर जाकर बैठ गया था और दुबारा हमला करने के लिए किसी प्रकार की जल्दी में नहीं था।

जय ने भेड़ों को घर की ओर हाँकना शुरू किया था कि बादल घने और अँधेरे हो गए और पहला हिमपात शुरू हो गया।

जय ने देखा कि एक खरगोश पहाड़ी से नीचे उछलता-कूदता भागा जा रहा था। जब वह पचास गज की दूरी पर था, तब गरुड़ के पंख फडफ़ड़ाने से हवा का तेज झोंका आया और जय ने देखा कि वह एक किनारे से खरगोश पर झपटटा मारने वाला है।

'इसका मतलब है, उसे ज्यादा चोट नहीं लगी। जय ने सोचा, थोड़ा सा निश्चित होते हुए। पर वह विशाल पक्षी की तारीफ किए बिना भी नहीं रह सका। चलो, अब उसे भोजन के लिए कोई और शिकार मिल गया।

खरगोश ने गरुड़ को आते देख लिया था और उसको चकमा देकर वह जुनीयर की झाड़ियों से घुस गया। जय को पता नहीं चल पाया कि गरुड़ खरगोश को पकड़ पाया कि नहीं, क्योंकि अब बर्फबारी बढ़ गई थी। अँधेरा हो गया था तो कुछ दिख नहीं रहा था।

उसके पीछे भेड़े मिमिया रही थीं। उनमें से एक मेमना थक गया था। जय ने झुककर उसे ऊपर उठा लिया, जब वह ऐसा कर रहा था, तभी उसने एक महीन हिनहिनाती आवाज सुनी। यह आवाज हर सेकंड तेज होती जा रही थी। इसके पहले कि वह सिर उठाकर ऊपर देख पाता, उसके कंधों से एक बहुत बड़ा डैना टकराया और वह चारो-खाने चित्त जमीन पर गिर पड़ा। उसके साथ ही वह मेमना लुढ़कता हुआ एक कंटीली बिलबेरी की झाड़ी में जा गिरा।

झाड़ी ने उसे बचा लिया था। जय ने फिर गरुड़ को नीचे आते हुए देखा। यह दूसरा गरुड़ था। एक तो गायब हो गया था। यह दूसरी थी। शायद पहलेवाले की साथिन उतनी ही बड़ी और निर्भीक।

जय की छड़ी गिरकर गायब हो गई थी और अब उसे बचाव का साधन नहीं नजर आ रहा था, जिससे वह दूसरे गरुड़ से लड़ सके। अतएव वह भी मेमने के साथ झाड़ियों में घुस गया। उसी के साथ वह जोर-जोर से चिल्लाने लगा, इसलिए कि कोई मदद के लिए आ जाए और वह पक्षी भी डर के मारे भाग जाए। अब आसानी से गरुड़ उनके पास नहीं पहुँच सकता था, बाकी भेड़ें तो अभी भी बाहर घूम रही थीं और उन्हें भी खतरा था। जरूर वह उन पर हमला बोलेगा।

जब वह विशाल पक्षी चक्कर काटकर दुबारा डैने मारकर नीचे आ रहा था, तभी उसने जोर से कुत्ते के भौंकने की आवाज सुनी। गरुड़ तुरंत ही मुड़कर आसमान में ऊपर उड़ गया।

भौंकने की आवाज मोटू से आ रही थी। जय की चीख-चिल्लाहट सुनकर मोटू ने सोचा, वह जरूर किसी मुसीबत में है। वह घर से तीन टाँग पर लँगड़ाता हुआ वहाँ पहुँचा। लड़ाई के लिए तैयार उसके पीछे एक और भेड़े चरानेवाला तथा आश्चर्यजनक उनके पीछे दादी माँ दोनों हाथों में फ्राइपैन लेकर उन्हें बजाते हुए। कुत्ते का भौंकना, बरतनों को खड़काने की आवाज तथा शोरगुल सुनकर गरुड़ डरकर भाग गया। भेड़ें भी सब इधर-उधर बिखर गई थीं और उनको इकटठा करने में कुछ समय लगा। तब तक बर्फ भी पड़ने लग गई थी।

"कल हम सबको माकू चले जाना चाहिए।" एक चरवाहे ने कहा।

"हाँ," यह समय है हम सबको चले जाना चाहिए दादी माँ ने कहा, "तब तुम वहाँ अपनी कहानी की किताबें भी पढ़ सकोगे जय।"

"मेरे पास अपनी ही कहानी सुनाने को होगी।" जय ने कहा।

जब वह अपने झोंपड़े में पहुँचे और जय ने अपने दादाजी को देखा तो बोला, "आपकी छड़ी तो मैं भूल ही गया।"

मोटू उसे अपने मुँह में दबाकर ले आया था। वह उसे लेकर दरवाजे पर बैठ गया था। उसने सोचा कि चेरी वुड (लकड़ी) दाँतों के लिए अच्छा होता है और चबाने वाला था, पर तभी दादी माँ ने उससे छड़ी छुड़ा ली। "कोई बात नहीं।" दादाजी ने चारपाई पर बैठते हुए कहा, "छड़ी का कोई महत्व नहीं है, महत्व उसे व्यक्ति का है, जिसने उसे पकड़ा है।

# कड़वी गूजबेरी

"य ह एक कहानी है—साँप की, गूजबेरी और बहुत कुछ, अतएव आप शांत बैठिए। बीच में व्यवधान मत डालिए और सवाल मत पूछिए। क्या आप सुन रहे हैं? वेल, तब ठीक है। एक समय की बात है, साँप था जो गूजबेरी की झाड़ी में रहता था। हर रात को वह एक सुंदर राजकुमार में बदल जाता था। इसमें कोई असाधारण बात नहीं, ऐसी बातें हर समय होती रहती हैं। खासकर बर्मा में, जहाँ पर प्रत्येक व्यक्ति सुंदर है। पर कोई कहानी आगे नहीं बढ़ सकती, जब तक कि उसमें कोई औरत न हो। अत: वहाँ एक स्त्री भी थी, जो एक छोटे से बाँस के झोंपड़े में रहती थी। जिसके बरांडे में आर्किड फूल की बेले लटकी रहती थीं, तथा उसकी तीन लड़कियाँ थीं जिनका नाम क्रमश: मा ग्यी, मा लाट और मा एंगे था। मा एंगे सबसे सुंदर, सबसे अच्छी और सबसे युवा दिखती थी। क्योंकि कोई भी कहीं नहीं सफल हो सकती, जब तक उसमें यह सब गुण न हो।

हाँ, तो एक दिन मा एंगे की माता जंगल से गूजबेरी लेने गई थी। वे कड़वी गूजबेरी थी; बर्मी औरतें उन्हें 'जी-क्यू-थी कहती हैं। उनको मीठा गूजबेरी से ज्यादा पसंद करती हैं। वह औरत अपनी टोकरी भी साथ ले गई थी, और जैसे ही वह और गूजबेरी चुनने लगी झाड़ी में बैठे सर्प ने हिस्स-हिस्स किया, जैसे वह कह रहा हो 'यहाँ से दूर जाओ। यह वही साँप था, जो रात में राजकुमार बन जाता था। पर इस वक्त तो पूरा दिन खिला हुआ था। फिर बर्मी औरते साँप से नहीं डरती थीं। इसके बावजूद साँप को याद आया कि यह स्त्री तीन लड़कियों की माँ है; और वह उसकी लड़कियों को पसंद करता है, अत: उसने इंतजार किया कि वह औरत पहले बोले, क्योंकि वह एक औरत थी, और औरतों की व्यापारिक क्षमता असाधारण होती है।

उस स्त्री ने कहा, "कृपया मुझे एक गूजबेरी दें।" औरतों को हमेशा कुछ-न-कुछ चाहिए। यह उनके व्यापार दर्शन का एक हिस्सा होता है।

पर सर्प ने कहा, "नहीं।" उसे याद आया कि वह एक राजकुमार है और राजकुमारों को पहली बार में ही किसी चीज को 'हाँ नहीं कहना चाहिए। यह एक सिद्धांत की बात थी।

तब उस औरत ने कहा, "यदि तुम मेरी सबसे बड़ी पुत्री मा ग्यी को पसंद करते हो तो मुझे गूजबेरी दे दो। उसको मा ग्यी की कोई परवाह नहीं थी, क्योंकि उसे पता था कि उसका स्वभाव बड़ा उग्र है। नीति के अनुसार उसने औरत को एक गूजबेरी दे दिया। मा ग्यी केवल एक गूजबेरी के योग्य है। उसने स्वयं से कहा।"

पर दुनिया की सारी औरतें बर्मा से बरमूडा और उसके भी आगे तक की किसी भी चीज की 'एक संख्या से संतुष्ट नहीं होतीं और उसने कहा कि यदि तुम मेरी दूसरी लड़की मा लाट को पसंद करते हो, तो मुझे एक और गूजबेरी दे दो। उसे पता था कि मा लाट की भैंगी

आँखें थीं, पर वह किसी की भावनाओं का अनादर नहीं करना चाहता था, अत: उसने उस औरत को एक और गूजबरी दे दी। इस तरह से प्रोत्साहित होकर उसने कहा, "यदि तुम मेरी सबसे छोटी बेटी मा एंगे को पसंद करते हो तो मुझे एक और गूजबेरी दे दो। इस बात से वह सर्प इतनी तेजी से हिला कि झाड़ी की सारी गूजबेरी नीचे गिर पड़ी, क्योंकि सर्प को पता था कि मा एंगे उन सबसे युवा, भली और सुंदर थी। उस स्त्री ने अपनी टोकरी में सारी गूजबेरी को इकटठा करके रख लिया और घर की ओर चल पड़ी, क्योंकि वह खटटी व कड़वी थी और वह एक असाधारण व्यापार क्षमतावाली स्त्री थी।"

रास्ते में उसे एक खंभा मिला और उसे एक गूजबेरी यह कहते हुए दी,

"यदि साँप आए और तुमसे पूछे कि मैं किस दिशा में गई तो बताना नहीं, विपरीत दिशा में इशारा कर देना।"

उसने ऐसा इसलिए कहा, क्योंकि उसे पता था कि खंभा इसका उलटा ही करेगा।

फिर वह आगे गई और अगले दो खंभों से भी ऐसा ही कहा (श्रेष्ठ कहानियों में हर चीज तीन बार कहनी पड़ती है) और हर खंभे ने ऐसा ही किया, जिससे सर्प को सही सस्ता मिल जाए, क्योंकि मार्गदर्शक खंभों का यही काम है। सर्प को महिला का घर ढूँढ़ने में ज्यादा दिक्कत नहीं आई। वह एक बड़े से जार (मर्तबान) में छिपकर बैठ गया और जब वह कुछ सामान लेने आई तो वह उसके साथ ऐसे लिपट गया फंदा बनाकर जैसे कोई भावी दामाद हो।

"यदि तुम मेरी बेटी मा ग्यी को प्रेम करते हो तो मुझे जाने दो। वह स्त्री यह दिखाते हुए कि वह डर रही है, चिल्लाई। (उसको अच्छी तरह पता था कि साँप एक राजकुमार है।)"

पर सर्प उससे लिपटा रहा, क्योंकि वह मा ग्यी को प्यार नहीं करता था और उसका स्वभाव खराब था तथा गुस्सा भी आता था।

"यदि तुम मा लाट को प्यार करते हो तो मुझे छोड़ो। पर सर्प फिर भी लिपटा रहा। यद्यपि व्यक्तिगत रूप से वह स्त्री विरुद्ध नहीं था, पर उसको यह अच्छा नहीं लग रहा था कि सारी जिंदगी वह उसको एक आँख से घूरती रहेगी।"

और तब (चूँकि हर चीज तीन बार होनी चाहिए) वह स्त्री बोली, "यदि तुम मेरी बेटी मा एंगे से प्रेम करते हो तो मुझे छोड़ दो।"

सर्प गश खाकर जमीन पर गिर पड़ा। अब क्योंकि एकदम से रात हो गई थी, वहाँ पर एक विनम्र राजकुमार खड़ा था, जो उसकी सबसे छोटी लड़की के प्रेम में वशीभूत था, उसने बिना समय नष्ट किए मा एंगे का विवाह राजकुमार से कर दिया।

कहानी यहाँ पर खत्म हो जानी चाहिए। परंतु बर्मा में कहानियाँ खत्म नहीं होतीं, वे निरंतर चलती रहती हैं, यहाँ तक कि कभी-कभी उन्हें छापना कठिन हो जाता है। इस

माया को तोड़ने के लिए राजकुमार को कुछ करना पड़ेगा, क्योंकि मा एंगे को इस बात से बहुत खीज हो रही थी कि उसका पति दिन में सर्प हो जाता है और रात में एक राजकुमार। उसने कहा कि उसे अच्छा लगता, यदि वह दिन में भी राजकुमार के रूप में रहता। अपनी माता की तरह उसमें भी व्यापार-क्षमता थी। उसी ने इस मायाजाल जादू को तोड़ने में मदद की। उसने केवल यही किया कि उसने अपने पति के लिए एक काम ढूँढ़कर दिलवा दिया। वह सदमा इतना बड़ा था कि उसका जादू टूट गया। यह पहली बार था, जब कि प्रिंस (राजकुमार) से काम करने की अपेक्षा की जा रही थी। अतएव इस आघात को वह पूरी तरह भूल गया कि वह पुन: अपने को कैसे सर्प में बदले। पर राजकुमार अपने काम में इतना व्यस्त हो गया कि कई बार उसकी पत्नी को अकेलापन लगता था। उसको यह नहीं पता था कि उसके बॉस ने उसको एक सुंदर सेक्रेटरी भी मुहैया करा दी थी, जिसकी वजह से वह रोज ओवरटाइम करता था। घर देर रात थका-माँदा वापस लौटता था। उसके बाद खाना खाकर वह सीधे सोने चला जाता। वह उससे शिकायत करती कि वह उसके प्रति उदास हो गया है। अपनी पत्नी के बराबर कोंचा-कोंची से वह इतना परेशान हो गया कि उसे अचानक अपना जादू का मंत्र याद आ गया और उसने अपने आपको एक विशाल साँप में बदल लिया।

उसने पहले तो अपनी पत्नी का पाँव निगल लिया। मा एंगे ने अपनी माँ को पुकारा पर, माँ ने कहा, "बिलकुल ठीक है।"

"उसने मेरे घुटनों को खा लिया।" बेचारी मा एंगे ने कहा।

"कोई फिक्र की बात नहीं प्रिय।" उसकी माँ ने जवाब दिया, जो उस वक्त बगल के कमरे में खाना पका रही थी। "एक कामुक पति कब क्या करेगा। तुम कह नहीं सकती?"

"उसने मेरी गरदन भी निगल ली है।"

माँ ने सोचा, "अब तो बात बहुत आगे बढ़ गई है। और फिर जब उसकी बेटी ने उसे बुलाना बंद कर दिया तो वह कमरे में आई और साँप को डाँट लगाई, जिसने अब तक मा एंगे को पूरा-का-पूरा निगल लिया था।"

"उसको तुरंत छोड़ दो।" गुस्से से भरी माँ चिल्लाई।

"उस वक्त तक नहीं जब तक कि तुम मेरी शर्तों को मान न लो।" साँप ने कहा, "पहली शर्त, जब चाहूँ तब मैं सर्प बन जाऊँ। दूसरी बात, मैं असली राजकुमार हूँ, इसलिए जब इच्छा होगी तभी काम पर जाऊँगा। तुम्हारी बेटी मुझे कैसे प्यार कर सकती है, यदि मैं अन्य आदमियों की तरह थका-माँदा रात में घर लौटूँ। तुम्हें अपने दामाद के रूप में एक राजकुमार चाहिए था, सो तुम्हें मिल गया। अब तुम मुझे एक राजकुमार की तरह रहने दो।

माँ उसकी शर्तों के लिए राजी हो गई। उसने अपनी पत्नी को अपने पेट में से बाहर निकाल दिया। उस दिन से माँ-बेटी घर का सारा काम करती और राजकुमार बरांडे में लटके हुए आकड के फूलों के नीचे बैठकर कड़वी गूजबेरी से बनी बीयर पिया करता।

# जावा से पलायन

"ऐसा लगता था, जैसे जावा की रक्षा करने में किसी को कोई दिलचस्पी नहीं थी। केवल वहाँ से जल्द-से-जल्द निकल भागने की चिंता थी। यह सब कुछ दिनों के अंतर पर ही हुआ। अभी-अभी अमलतास के पेड़ों पर फूल आए ही थे कि बाताकिया जिसे आजकल जकार्ता कहते है, पर बमबारी शुरू हो गई। सड़कों पर जो मलबा पड़ा था, उस पर चमकीले गुलाबी फूल जहाँ- तहाँ फैले पड़े थे।

हमें यह समाचार मिल गया था कि सिंगापुर पर जापानियों ने कब्जा कर लिया है। मेरे पिताजी ने कहा, "मुझे उम्मीद है कि वे जल्दी ही जावा पर कब्जा कर लेंगे। जब ब्रिटिश की हार हो गई तो डच लोग कैसे जीत लेंगे। वह डच की आलोचना नहीं करना चाहते थे। उनको पता था कि डच को ब्रिटिश इंपायर की तरह किसी और देश का समर्थन नहीं था। सिंगापुर पूर्व का जिब्राल्टर कहलाता था। सिंगापुर के समर्पण के बाद पीछे हटना पड़ेगा, यानी बड़ी संख्या में यूरोपियनों का दक्षिण-पूर्व एशिया से पलायन।"

यह विश्व युद्ध द्वितीय था। जावा के निवासियों का युद्ध के बारे में क्या विचार था? मुझे पता नहीं, क्योंकि मैं उस समय केवल 1 वर्ष का था। दुनियावी चीजों का मुझे ज्यादा पता नहीं था। अधिकतर लोगों को यही पता था कि उनके डच शासकों की जगह जापानी शासक आ जाएँगे; पर बहुत से ऐसे लोग थे, जो सोचते थे कि युद्ध की समाह्रिश्वत पर संभवत: आजादी मिल जाएगी।

हमारे पड़ोसी मि. हारतोनो भी एक ऐसे ही व्यक्ति थे, जो सोचते थे कि आने वाले समय में जावा, सुमात्रा और कई द्वीप मिलकर एक स्वतंत्र राष्ट्र का रूप ले लेंगे। वह कॉलेज में प्रोफेसर थे, डच, चाइनीज और जावा निवासी तथा थोड़ी-थोड़ी इंग्लिश बोल लेते थे। उनका बेटा सोनो मेरी ही उम्र का था। मेरी पहचान में वही एक लड़का था, जो अंग्रेजी बोल लेता था। परिणामस्वरूप हम काफी समय इकटठे गुजारते थे। हम दोनों को खाली समय में पार्क में पतंग उड़ाना बहुत प्रिय था।

बमबारी की वजह से हमारा पतंग उड़ाना बंद हो गया था। हवाई हमले के खतरे का अलार्म कभी भी बज जाता था, चाहे दिन हो या रात—और यद्यपि ज्यादातर बम बंदरगाह पर गिरते थे, जो हमारे घर से कुछ मील की दूरी पर था।

हमें घर के अंदर ही रहना पड़ता था। यदि हवाई जहाज बहुत नीचे से डाइव करके जाते थे तो हम पलंग या मेज के नीचे छिप जाते थे। मुझे याद नहीं कि वहाँ छिपने के लिए कुछ खाइयाँ थीं या नहीं। शायद खाइयाँ बनाने के लिए पर्याप्त समय नहीं था। अब तो केवल कब्र खोदने का समय आ गया था, घटनाक्रम बहुत तेजी से आगे बढ़ा। हम लोग वहाँ से भाग जाना चाहते थे।

"तुम कब जा रहे हो?" सोनू ने पूछा, जब हम एयर-रेंडो के बीच के अंतराल में बरामदे की सीढ़ियों पर बैठे थे।

"मुझे पता नहीं।" मैंने कहा, "यह सब मेरे पिताजी पर निर्भर है।"

"मेरे पिताजी कहते हैं कि एक हफ्ते के अंदर यहाँ जापानी आ जाएँगे और यदि तब तक हम यहीं रहे तो तो वे हमें रेलवे बनाने के काम में लगा देंगे।"

"मुझे रेलवे बनाने से कोई एतराज नहीं है।" मैंने कहा।

"पर वे तुम्हें खाने को पर्याप्त नहीं देंगे। बस थोड़ा सा चावल कीड़ों के साथ। यदि आप ठीक से काम नहीं करोगे तो वे तुम्हें शूट कर देंगे।"

"वे ऐसा सिपाहियों के साथ करते हैं।" मैंने कहा, "हम सिविलियन हैं।"

"वे सिविलियनों के साथ भी ऐसा ही करते हैं।" सोनू ने कहा।

मैं और मेरे पिता बताकिया में क्या कर रहे थे, जब हमारा घर पहले भारत में था और फिर सिंगापुर में। वह एक फर्म के लिए काम करते थे, जो रबर का व्यापार करती थी। 6 महीने पहले उन्हें एक डच फर्म के साथ नया ऑफिस खोलने के लिए बाताकिया भेजा गया था। यद्यपि मैं बहुत छोटा था, परंतु मेरे पिता मुझे अपने साथ हर जगह ले जाते थे। जब मैं बहुत कम उम्र का था, तभी मेरी माँ की मृत्यु हो गई थी और मेरे पिता ही मेरी देखभाल करते थे। युद्ध की समाह्रिश्वत पर मुझे इंग्लैंड ले जाने वाले थे।

"क्या हम युद्ध में जीत जाएँगे?" मैंने पूछा।

"यहाँ से तो ऐसा नहीं लगता।" उन्होंने कहा।

नहीं, ऐसा नहीं लग रहा था कि हम लड़ाई जीतने जा रहे थे। डॉक (गोदी) में मैं अपने पिता के साथ खड़ा सिंगापुर से आते हुए जहाजों को देखता था, जिसमें शरणार्थी भरे रहते थे—आदमी, औरतें और बच्चे सारे ही कड़ी धूप में डेक पर थे। वे सारे थके हुए और चिंतित लगते थे। वे सब या तो कोलंबो या बंबई जा रहे थे। बाताविया में कोई भी उतरकर किनारे नहीं आया। वह ब्रिटिश क्षेत्र नहीं था, डच इलाका था। सब लोगों को पता था कि यह अब ज्यादा समय तक डच नहीं रहेगा।

"क्या हम लोग जा नहीं रहे हैं?" मैंने पूछा, "सोनू के पापा कह रहे थे कि यहाँ जापानी किसी भी दिन आ जाएँगे।"

"हमारे पास अब भी कुछ दिन का समय है।" मेरे पिताजी एक छोटे कद मोटी काठी के आदमी थे, जो शायद ही कभी उत्तेजित होते थे। यद्यपि वह चिंतित होते थे, पर वह ऐसा दिखाते नहीं थे। मुझे कुछ बिजनेस का काम यहाँ समेटना है और उसके बाद हम चल देंगे।

"हम लोग कैसे जाएँगे? उन जहाजों पर तो हमारे लिए कोई जगह नहीं है।"

"हाँ, उन पर जगह तो नहीं है, पर हम कोई रास्ता निकाल लेंगे।"

"चिंता की कोई बात नहीं है, बेटा!"

मैं चिंतित नहीं था। मुझे अपने पिता पर पूरा विश्वास था कि वह इन मुश्किलों से कोई-न-कोई रास्ता निकाल लेंगे। उनका कहना था। "हर समस्या का कोई-न- कोई हल होता है, जो कहीं-न-कहीं छुपा होता है। यदि तुम अच्छी तरह देखोगे तो तुम्हें मिल जाएगा।"

सड़कों पर ब्रिटिश सिपाही खड़े थे, पर हमें उनसे कोई सुरक्षा महसूस नहीं हो रही थी। वे लोग केवल मिलिट्री का इंतजार कर रहे थे कि वे आए और उन्हें ले जाएँ। कोई भी जावा को बचाने के लिए तत्पर नहीं। वे तो वहाँ से भाग निकलना चाहते थे, जल्द-से-जल्द।

यद्यपि जावा की जनता में डच लोकप्रिय नहीं थे, पर व्यक्तिगत रूप से यूरोपियन से उनकी कोई दुर्भावना नहीं थी। कभी-कभी चाइनीज बस्ती में बच्चे उसे देखकर चिल्लाते 'ओ रंग बालांडी वे ऐसा मजाक में करते थे। और मुझे भी चाइनीज इतनी अच्छी नहीं आती थी कि मैं रुककर उन्हें समझा सकूँ कि इंग्लिश लोग डच से अलग हैं। उनके लिए तो सब गोरे लोग एक ही जैसे थे। यह समझ में भी आता है।

मेरे पिताजी का ऑफिस व्यापारिक क्षेत्र में था, नहर के तट पर हमारा दोमं जिला घर वहाँ से एक मील दूर एक पुरानी इमारत में था। उसकी छत लालरं गों के टाइल्स से बनाई गई थी। एक चौड़ी बाल्कनी जिसके दोनों सिरों पर ड्रैगन का सिर पत्थरों से बना था। बगीचे में लगभग पूरे साल फूल रहते थे। यदि बाताविया में बमबारी के अलावा और कोई चीज नियम से होती थी तो वह बारिश थी, जो कि कभी-भी छतों पर पटपटाती हुई आ जाती थी। केले के पत्तों पर भी टप-टप करती। जावा के गरम और उमस भरे वातावरण में वर्षा का सदैव स्वागत था।

बाताविया में एंटी एयरक्राफ्ट गन नहीं थी—कम-से-कम हमने उसकी आवाज कभी नहीं सुनी थी। जापानी बमवर्षक विमान कभी भी आ जाते थे और भरे दिन में बम बरसा जाते थे। कभी-कभी वे शहर में भी बमबारी कर जाते। एक दिन मेरे पिताजी के ऑफिस के बगलवाली इमारत पर बम गिरा। यह सीधा हमला था। ऑफिस ढहकर नदी में गिर गया। दफ़्तर में काम करनेवाले आदमी मारे गए।

एक दिन सोनू ने बताया कि बाताविया पर बम गिराए जा रहे हैं, पर गाँवों में नहीं। क्यों न हम साइकिलें लेकर बाहर के बाहर घूमने चले जाते? मुझे यह विचार एकदम अच्छा लगा। सुबह ऑल-क्लीयर (सब साफ है, ठीक है) सिग्नल के बाद हम साइकिलें लेकर शहर से बाहर निकल पड़े। मेरी एक किराए पर ली हुई साइकिल थी। सोनू की साइकिल उसकी अपनी थी। उसमें हमेशा मरम्मत की जरूरत थी। वह कहा करता था, "इसकी आत्मा निकल गई है।"

हमारे दोनों के पिताजी काम पर गए हुए थे और सोनू की माता बाजार गई थी। (एयर रेड के दौरान वह दुकान के किसी काउंटर के नीचे छिप जाती थी।) कम-से-कम एक घंटे तक वापस नहीं आएगी। हम लोगों को उम्मीद थी, लंच तक वापस आ जाएँगे।

हम जल्द ही शहर के बाहर आ गए। उस सड़क पर जो चावल के खेतों, अन्नास के बगीचों और दालचीनी के बागों में से जाती थी। हमारे दाहिने ओर गहरे हरे रंग के पहाड़ थे और बाईं ओर नारियल के पेड़ों के बाग तथा उसके आगे समुद्र। आदमी और औरते घुटने तक कीचड़ के पानी में चौड़े किनारे वाली टोपियाँ पहने चावल के खेतों में काम कर रहे थे। उनके चौड़े किनारे वाली टोपियाँ उनको सूरज की तेज गरमी से बचाती थी। कहीं-कहीं पर एक भैंस या बैल पोखरे के पानी में अधलेटे थे और एक भैंस की चौड़ी पीठ पर एक लड़का नंगा लेटा था।

हमने ताड़ के पेड़ों के बीच में से एक ऊबड़-खाबड़ सड़क पकड़ ली।

वे पेड़ समुद्र के किनारे तक लगे हुए थे। अपनी साइकिल किनारे लकड़ी की छत पर छोड़कर हम समुद्र के छिछले पानी में दौड़ लिये। बीच पर बालू मुलायम और सपाट थी।

"बहुत दूर नहीं जाओ।" सोनू चिल्लाया, "वहाँ पर शार्क हो सकती हैं। हम लोगों ने पत्थरों के बीच में से होते हुए तरह-तरह की सीपियाँ ढूँढ़ीं और फिर एक ऊँचे पत्थर पर बैठकर समुद्र का नजारा लेने लगे, जहाँ पर नीले पानी में एक जहाज शांति से चला जा रहा था। यह कल्पना करना मुश्किल था कि दुनिया भर में युद्ध चल रहा है, तथा यहाँ से केवल दो-तीन मील दूर बाताविया भी इसके बीच में युद्ध से प्रभावित है।

घर वापस लौटते समय हमने सोचा कि धान के खेतों में से हम शॉर्ट-कट द्वारा चलें, पर जल्दी ही हमारी साइकिल के टायर कीचड़ में फँस गए। इससे हमें देरी हो गई। इससे भी ज्यादा गड़बड़ तब हो गई, जब हमने गलत रास्ता पकड़ लिया और शहर के उस हिस्से में पहुँच गए, जो हमारे लिए अनजान था। अभी हम शहर के बाहरी छोर पर थे कि एयर-रेड सायरन बज गया। उसके साथ ही हवाई जहाज के आने की आवाज भी सुनाई पड़ने लग गई।

"क्या हम साइकिल से उतरकर कहीं शरण ले लें?" मैंने पूछा। "नहीं, हम लोग तेजी से साइकिल दौड़ाकर घर पहुँच जाएँगे।" सोनू जोर से बोला, "यहाँ पर बम नहीं गिरेंगे।"

पर वह गलत था। हवाई जहाज बहुत नीचे उड़ रहे थे। जब मैंने ऊपर देखा तो जापानी फाइटर-प्लेन की भयानक छाया सूरज की रोशनी में दिखाई दी। अभी हम मुश्किल से पचास गज गए थे कि हमारे दाएँ हाथ के कुछ घरों के पीछे जोर से धमाका हुआ। इसके धक्के में हम साइकिल पर से सड़क पर चारों खाने चित गिर पड़े। इस धक्के से साइकिल वेग से दीवार से जा टकराई।

मेरे हाथ-पैरों में डंक चुभोने जैसा लग रहा था। ऐसा लग रहा था, छोटे-छोटे तमाम कीड़ों ने मुझे काट खाया हो। खून की छोटी-छोटी बूँदें मेरे शरीर पर जगहज गह दिखाई पड़ने लगी। सोनू भी चारों खाने चित मेरी बगल में खड़ा था। मैंने देखा उसे भी मेरी ही तरह हाथ, पैरों और माथे पर खरोंचें आई थीं। जो उड़ते हुए काँच के टुकड़ों से हुई थी। हम जल्दी से अपने पैरों पर खड़े हुए और अपने घर की दिशा में दौड़ पड़े। टूटी-फूटी

साइकिलें वहीं पड़ी रह गईं। उसकी किसी को याद नहीं रही।

"तुम दोनों सड़क पर से हट जाओ।" कोई पीछे से चिल्लाया। पर हम जब तक घर नहीं पहुँचे रुके नहीं और हम लोग इतना तेज दौड़े जितना जिंदगी में कभी दौड़े नहीं थे।

मेरे पिता और सोनू के माता-पिताजी गली में हमें ढूँढ़ते दौड़ रहे थे और हम उनकी बाँहों से जाकर टकरा गए।

"तुम लोग कहाँ गए थे?"

"तुम्हें क्या हो गया है?"

"तुम्हें ये घाव कैसे लग गए?"

सारे फालतू सवाल, पर इसके पहले कि हम साँस लेते और उन्हें कुछ बताते, हमें अपने-अपने घरों के अंदर कर दिया गया।

मेरे पिताजी ने मेरी खरोंचें और कटों को धोया और आयोडिन को रुई के फाहे से हमारे चेहरे और पैरों में लगाया। हमारी चीखों को दरकिनार करते हुए फिर हमारे पूरे चेहरे पर प्लास्टर चिपका दिया।

सोनू और मैं दोनों ही बुरी तरह से डर गए थे। फिर कभी अपने घर से दूर नहीं गए।

उस रात को मेरे पिताजी ने कहा, "मेरे खयाल से हम एक-दो दिन में यहाँ से निकल लेंगे।"

"क्या कोई और जहाज आ गया है?"

"नहीं।"

"तब क्या हम हवाई जहाज से जाएँगे?"

"इंतजार करो और देखो, बेटे अभी कुछ पक्का नहीं। हम अपने साथ ज्यादा सामान नहीं ले जा पाएँगे। बस कुछ बैग भर सामान।"

"क्या हम स्टैंप—कलेक्शन ले जा सकेंगे?"

मेरे पिताजी का स्टैंप-कलेक्शन बहुमूल्य था। कई खंडों में था। उन्होंने कहा, "शायद मि. हारतोनो उसे हमारे लिए रख लेंगे और जब युद्ध खत्म होगा— यदि यह कभी खत्म हुआ —तो फिर हम इसे वापस लेने आएँगे।"

"पर हम एक-दो अलबम तो अपने साथ ले जा सकते हैं। है ना?" "हम एक अलबम साथ ले चलेंगे। एक के लिए जगह बन जाएगी। फिर यदि बंबई में हमें धन की कमी हो गई, तो उसे बेचकर काम चला लेंगे।"

"बंबई? वह तो इंडिया में है।" मैंने सोचा, हम इंग्लैंड जा रहे हैं।

"पहले हमें इंडिया जाना होगा।"

दूसरे दिन सुबह गार्डेन में सोनू मिला। मेरी ही तरह उसकी भी जगह-जगह मरहम-पटटी लगी हुई थी। पाँव भी पट्टियों में था। फिर भी वह हमेशा की तरह खुश था और मेरा एक चौड़ी सी खिसियाहट से स्वागत किया।

"हम कल जा रहे हैं।" मैंने कहा

उसकी खिसियाहट बंद हो गई।

"मैं उदास हो जाऊँगा, जब तुम चले जाओगे।" उसने कहा, "पर मुझे खुशी भी होगी कि तुम जापानियों से बच निकले।"

"युद्ध के बाद मैं वापस आऊँगा।"

"हाँ, तुम जरूर वापस आना। तब, जब हम बड़े हो जाएँगे तब दुनिया की सैर इकटठे करेंगे। मैं इंग्लैंड, अमेरिका, अफ्रीका, इंडिया और जापान देखना चाहता हूँ। मैं सब जगह जाना चाहता हूँ।"

"पर हम सब जगह नहीं जा सकते।"

"हाँ, हम जा सकते हैं। हमें कोई भी रोक नहीं सकता।"

अगले दिन सुबह हमें बहुत जल्दी उठना पड़ा। देर रात तक हमारे बैग- सूटकेस पैक कर लिए गए थे। हम अपने साथ कुछ कपड़े पिताजी के बिजनेस के कुछ कागज, बाइनाक्यूलरस स्टैंप, का एलबम और कई चॉकलेट्स ले लिए थे। मैं स्टैंप एलबम और चॉकलेटों के लिए खुश था, पर हमें अपनी प्रिय चीजें छोडऩी पड़ीं—जैसे प्रिय किताबें, ग्रामोफोन और रिकॉर्ड, एक पुरानी सामुराई तलवार, एक ट्रेन का सेट और एक डार्ट-बोर्ड। पर हमें इस बात की खुशी थी कि यह सब सोनू के पास रहेगा, न कि किसी अजनबी के पास।

दूसरे दिन सुबह एक ट्रक हमारे घर के सामने आकर रुक गया। वह मेरे पिता के साथ काम करनेवाले डच बिजनेसमैन मि.डूकेंस द्वारा चलाई जा रही थी। सोनू गेट पर पहले से गुडबॉय कहने के लिए खड़ा था।

"मैं तुम्हारे लिए एक उपहार लाया हूँ।" उसने कहा

उसने मेरा हाथ पकड़ा और मेरी हथेली में एक चिकनी पर कड़ी सी चीज रख दी। मैंने उसे पकड़ लिया और फिर रोशनी में देखा। वह एक छोटा सा अश्वमीन था, हलके नीले जेड से तराशा हुआ छोटा सा अश्वमीन।

"यह तुम्हारे लिए भाग्यशाली सिद्ध होगा।" सोनू ने कहा।

"धन्यवाद।" मैंने कहा, "मैं इसे अपने पास हमेशा रखूँगा। मैंने उस छोटे से अश्वमीन को

अपनी जेब में रख लिया।"

"बेटा, तुम अंदर आ जाओ।" मेरे पिता ने कहा। मैं सामने की सीट में अपने पिता और मि. डूकें स के बीच बैठ गया। जैसे ट्रक स्टार्ट हुई। मैं सोनू के बॉय करने के लिए पीछे मुड़ा वह अभी भी अपने गार्डेन की चारदीवारी पर बैठा मेरी ओर धीरे से मुसकरा रहा था। वह जोर से चिल्लाकर बोला, "हम सारी दुनिया में घूमने जाएँगे, और हमें कोई रोक नहीं सकता।"

वह अब भी हमारी ओर बॉय कर रहा था। जब ट्रक सड़क के आखिर में मुड़ा।

हम अभी भी बाताविया की खामोश सड़कों पर से गुजरे। रास्ते में कहीं- कहीं जली हुई ट्रकें और बमबारी से टूटी-फूटी इमारतें दिखीं। फिर हमने सोते हुए शहर को काफी पीछे छोड़ दिया और जंगली पर्वतों पर ऊपर चढऩे लगे। रात में वर्षा हुई थी, जिससे पेड़-पौधे धुल गए थे। उनकी चौड़ी पत्तियाँ उगते हुए सूरज की रोशनी में चमक रही थीं। जंगल में रोशनी अब गहरे हरे रंग से बदलकर हरी-सुनहली रंग की हो गई थी। यहाँ वहाँ यह रोशनी किसी विगुल के आकम फूल के लाल या ऑरेंज रंग से टूट जाती थी।

उन सब विलक्षण पौधों के नाम जान सकना नामुमकिन था। घने ट्रानिकल जंगलों के बीच से काटकर वह सड़क बनाई गई थी तथा सड़क के दोनों ओर पेड़ एक-दूसरे के ऊपर सूरज की रोशनी पाने के लिए चढ़े जा रहे थे। वे एक- दूसरे से लियाना बेल और अंगूर की बेलों से एक जंजीर से जुड़े थे, क्योंकि वे भी अपने अस्तित्व के लिए उन्हीं पेड़ों से भोजन पाते थे।

कभी-कभी एक जेलारंग—एक विशाल जावा की गिलहरी—ट्रक की आवाज से डरकर पेड़ों पर से कूदती हुई घने जंगलों में गायब हो जाती। हमने कई चिडिय़ाँ देखी, जैसे मोर, जंगली मुरगा और शान से खड़ा हुआ एक कलगीवाला बड़ा सा कबूतर। उसकी शानदार कलगी दूर से भी बहुत सुंदर दिख रही थी। मि. डूकेंस ने ट्रक धीमी कर दी जिससे हम उसे अच्छी तरह देख लें। उसने अपना सिर झुकाया जिससे उसकी कलगी जमीन को छू गई; फिर उसने एक धीमी सी गूँजती आवाज निकाली, जो टर्की की बाँग से अलग थी।

जब हम एक थोड़ी सी खुली जगह में आए तो हम नाश्ते के लिए रुके। वहाँ पर काले, हरे और सुनहरे रंग की तितलियाँ उड़ रही थीं। जंगलों की शांति जापानी फाइटर प्लेनों की जोरों की आवाज से भंग हो रही थी, जो फिर से बाताविया पर हवाई हमला करने वाले थे। मैंने सोनू के बारे में सोचा और खयाल आया कि वह घर पर क्या कर रहा होगा; शायद ग्रामोफोन चलाने की कोशिश कर रहा होगा।

हमने उबले अंडे खाए और एक थर्मस में रखी चाय पी, फिर ट्रक में चढ़कर दुबारा से सफर शुरू कर दिया।

मैं शायद रास्ते में सो गया था, क्योंकि अगली चीज हमें रास्ते में दिखी वह यह कि हम टेढ़े-मेढ़े रास्तों से तेजी से नीचे उतर रहे थे और काफी दूर एक समुद्र तल नीले रंग का दिख रहा था।

"हम फिर से समुद्र पहुँच गए हैं।" मैंने कहा।

"यह सही है।" मेरे पिता ने कहा, "पर हम बाताविया से 100 मील दूर हैं, द्वीप के दूसरे हिस्से पर। तुम सुंडा जलडमरू मध्य को देख रहे हो। फिर उन्होंने एक चमकती हुई सफेद चीज की ओर इशारा किया, जो लैगून के नीले पानी पर विश्राम कर रहा था।"

"एक समुद्री जहाज।" मैंने चिल्लाकर कहा। मैं कभी अनुमान नहीं लगा सका था कि यह हमें कहाँ ले जाएगा?

"मुझे आशा है, हिंदुस्तान में ऐसी बहुत जगह नहीं रह गई हैं, जहाँ हम जा सकते हों।"

यह एक बहुत पुराना समुद्री जहाज था और कोई भी—यहाँ तक कि कैप्टेन भी, पायलट को कैप्टेन कहते थे—वादा कर पाया कि वह उड़ जाएगा। ज़ि. डूकेंस हम लोगों के साथ नहीं आ रहे थे। उन्होंने बताया अगले दिन फिर वही प्लेन उन्हें लेने वापस आएगा। मेरे पिता और मेरे अलावा चार यात्री और थे और एक को छोड़कर बाकी सब डच थे। एक आदमी जो अलग था। वह एक लंदन वाला था। एक मोटर मेकैनिक, जो जावा में ही छूट गया था। जब उसकी यूनिट वहाँ से हटाई जा रही थी। [बाद में उसने बताया कि वह चाइनीज क्वार्टर के एक बार में सो गया था, और जब उठा तो पता चला कि उसकी रेजीमेंट के सब लोग चले गए थे]

उसकी शर्ट का सबसे ऊपरवाला बटन टूट गया था। इसके बजाय कि वह कॉलर को खुला छोड़ देता, जैसा हम लोग करते हैं, उसने कॉलर के दोनों सिरों को एक बड़ी सेफ्टी पिन से जोड़ रखा था, जो उसकी गुलाबी चमकदार टाई के पीछे से निकलकर बाहर आ रही थी।

"आपको यहाँ देखकर बहुत चैन आया गवर्नर।" उसने मेरे पिता को हाथ हिलाते हुए कहा, "आपको देखते ही मुझे लगा कि आप यॉर्कशायर के हैं। यह 'सैंग-फ्रायह है, जिसके कारण मैं जान पाया। आपको पता है कि मेरा क्या आशय है। (सैंग-फ्रायह का मतलब शांत दिखनेवालों के लिए फ्रेंच शब्द है।) "और यहाँ पर मैं तमाम उछल-कूद मचाते हुए विदेशियों के साथ था। मुझे यह भी नहीं पता ये लोग किस बारे में बक-बककर रहे हैं। क्या आप सोचते हैं कि यह पुराना टब हमें वापस फ्लाइटी तक ले जाएगा?

"यह थोड़ा संदेहात्मक तो लगता है।" मेरे पिता ने कहा, "देखने से तो लगता है, यह उड़ने वाली नावों में से एक पहली नाव है। अगर यह हमें बॉम्बे तक ले जाए तो वह तो काफी दूर है।

"जावा से बाहर कहीं भी हमारे लिए बेहतर है। हमारे नए साथी ने कहा, "मेरा नाम मगरिज है।"

"आपसे मिलकर खुशी हुई, मि. मगरिज।" मेरे पिता ने कहा, "मैं बॉण्ड हूँ, और यह मेरा बेटा है।

मि. मगरिज ने मेरे बालों पर हाथ फेरा और एक बड़ी सी आँख मिचकाते हुए मेरा स्वागत

किया।

समुद्री जहाज के कप्तान ने हमसे कहा कि हम उसके साथ एक छोटी सी नाव में थोड़ी दूर तक जल में जहाँ सी-प्लेन खड़ा है, वहीं तक चलें। "चलो भाई, चलते हैं।" मि. मगरिज ने कहा, "आप लोग प्रार्थना करिए और अपनी उँगलियों को क्रॉस करिए।"

समुद्री जहाज ने हवा में उठने में काफी समय लिया। उसको कई बार समुद्र पर दौडऩा पड़ा, इसके पहले कि वह हवा में उड़ सके, फिर एक शराबी की तरह लडख़ड़ाते हुए वह साफ नीले आसमान में उड़ गया।

"एक क्षण के लिए तो मैंने सोचा कि शाम हमारी यात्रा इसी खारे पानी में समाप्त हो जाएगी।" अपनी सीट-बेल्ट को खोलते हुए मि. मगरिज बोले, "मछली की बात करें तो मैं अपनी एक हफ्ते की तनख्वाह दे दूँगा, यदि मुझे एक प्लेट फिश प्लेट और एक पिंट बीयर मिल जाए तो।"

"कलकत्ते में मैं आपको एक बीयर खरीद दूँगा।" मेरे पिता ने कहा। "आप एक अंडा ले लीजिए।" मैंने कहा। मुझे याद आया कि हमारे बैग में अभी भी कुछ उबले अंडे बचे हैं।

"थैंक्स दोस्त।" मि. मगरिज ने जरा सावधानी से एक अंडा लेते हुए कहा, "अरे," यह तो असली अंडा है। पिछले छह महीने से हम अंडे के पाउडर पर जी रहे हैं। आपको आर्मी में नहीं देते हैं। मैं बताऊँ वह मुरगी के अंडे से नहीं बना होता। वह समुद्री चिडिय़ा (सी-गल) या फिर कछुए के अंडे से बना होता है।

"नहीं।" मेरे पिता ने जरा संजीदा होते हुए कहा, "साँप के अंडों से।"

मि. मगरिज का रंग नाजुक हरा पड़ गया, वह जल्दी ही संतुलित हो गए और अगले एक घंटे तक दुनिया के हर विषय पर बात करते रहे थे, जिसमें चर्चिल, हिटलर, रूजवेल्ट और बेटी ग्रैबल सब शामिल थे। (इसमें से अंतिम बेटी ग्रेबल अपने सुंदर पैरों के लिए मशहूर थी।) यदि उनको मौका मिलता तो वह सारे रास्ते इंडिया तक बातें करते जाते। अचानक से सी-प्लेन में हिचकोले आने लगे और वह फिर से डाँवाँडोल होने लगा।

"मेरे खयाल से इंजन कुछ गड़बड़ (ट्रबल) कर रहा है।"

मेरे पिता ने कहा।

जब मैंने छोटी सी काँच की खिड़की से बाहर देखा तो ऐसा लगा जैसे समुद्र हमसे तेजी से मिलने आ रहा हो।

पायलट ने डच भाषा में कुछ कहा। पैसेंजर बहुत निराश से लगे और जल्दी-जल्दी अपनी सीट बेल्ट बाँधने लगे।

"वेल, पाइलट ने क्या कहा?" मि. मगरिज ने पूछा।

"मेरे खयाल से यह प्लेन को 'डिच, करने जा रहा है," मेरे पिता ने कहा जिन्हें इतनी डच

भाषा आती थी कि जो कुछ भी डच में कहा जा रहा है उसका सार समझ में आ सके।

"वह शराब में डूबा हुआ है।" मि. मगरिज चिल्लाए, "भगवान हमारी मदद करे।" हम लोग इंडिया से कितनी दूर हैं, गवर्नर?

"कुछ सौ मील।" मेरे पिता ने बताया।

"क्या तुम तैर सकते हो, दोस्त?" मि. मगरिज मेरी ओर देखते हुए बोले। "हाँ, पर बॉम्बे तक नहीं।" आप कितनी दूर तक तैर सकते हैं?

"एक बाथ-टब की लंबाई के बराबर।" उसने कहा।

"चिंता की कोई बात नहीं।" मेरे पिता ने कहा, "बस इस बात का ख्याल रखें कि आपने लाइफ जैकेट ठीक से बाँधी हुई है।"

हमने अपनी-अपनी लाइफ जैकेटस की ओर देखा। मेरे पिताजी ने मेरी लाइफ जैकेट दो बार चेक की और सुनिश्चित किया कि मेरी जैकेट ठीक से बँधी है।

पायलट ने दोनों इंजनों को बंद कर दिया था। प्लेन को चक्राकार घुमाता हुआ नीचे आ रहा था। विमान की रफ़्तार को कंट्रोल नहीं कर पाया और वह एक तरफ को ज्यादा झुका जा रहा था। प्लेन को बजाय अपने पेट पर लैंड करवाने की जगह वह टेढ़ा होकर अपने विंगटिप पर लैंड कर गया। जिसके कारण वह समुद्र के लहराते पानी में जोर से हिला। जब प्लेन ने समुद्र के पानी को हिट किया तो बहुत जोर का धक्का लगा। यदि हम अपनी सीट बेल्ट नहीं पहने होते तो अपनी सीट से इधर-उधर झटके के साथ गिर जाते। इस पर भी मि. मगरिज का सिर अपने सिट की पीठ से टकरा ही गया। अब उनकी नाक से खून बहने लगा था और वह अभद्र भाषा का इस्तेमाल कर रहे थे।

जैसे ही प्लेन रुका, मेरे पिता ने मेरी सीट-बेल्ट खोल दी। समय जाया करने के लिए बिलकुल नहीं था। केबिन में पानी भरने लग गया था। सारे यात्री—केवल एक को छोड़कर, जो गरदन में झटका आने से अपनी सीट पर ही मर गया था— निकास द्वार की ओर बढ़ रहे थे। पायलट के एक लीवर खींचते ही दरवाजा खुल गया और हमने देखा कि समुद्र की ऊँची लहरें प्लेन के दोनों साइड पर थपेड़े मार रही थीं।

मुझे हाथ से पकड़कर मेरे पिता निकास की तरफ ले जा रहे थे। "जल्दी करो, बेटे।" वह बोले, "हम बहुत देर तक तैर नहीं पाएँगे।"

"मेरी मदद करो!" मि. मगरिज चिल्लाए, जो अभी भी अपनी लाइफ- जैकेट से जूझ रहे थे। "पहले तो यह खून बहाती नाक और ऊपर से इसमें कुछ अटक गया है।"

मेरे पिता ने उनको लाइफ जैकेट पहनने में मदद की और फिर उन्हें हमसे पहले ही धक्का देकर बाहर निकाल दिया।

जैसे-जैसे हम सी-प्लेन से तैरकर दूर जा रहे थे (मि. मगरिज हम लोगों के साथ-साथ

भयंकर रूप से छप-छप करके तैर रहे थे), हमें अन्य यात्रियों का भी पानी में होने का अहसास था। उनमें से एक ने डच भाषा में चिल्लाकर कहा कि हम उनके पीछे-पीछे आएँ।

हम लोग उनके पीछे-पीछे तैरकर डिंगी तक आए। वो (छोटी नाव) तभी प्लेन में से छोड़ दी गई थी, जैसे ही उसने पानी को छुआया। वह पीली डोंगी, जो लहरों पर हिलते-डुलते चल रही थी, इतनी भली लग रही थी जैसे कि हमने जमीन पा ली हो।

वे सब लोग, जो प्लेन से निकल आए थे, सब डिंगी में चढ़ गए। हम सब कुल सात लोग थे—ठूस-ठासकर आ ही गए। हम लोग अभी डिंगी में बैठे ही थे जब मि. मगरिज अपनी नाक पकड़े-पकड़े चिल्लाए। "वह गई-डूबा।" और हम लोग नि:सहाय होकर उस सी-प्लेन को बाहरी के नीचे समुद्र में डूबते देखते रह गए।

डिंगी में भी बहुत सारा पानी भर गया था। अब सब लोग उसमें से पानी निकालने में लगे थे। कुछ मग डिंगी में ही थे। हैट और केवल हाथों से पानी उलीचने में लग गए।

एक ऊँची-सी लहर आई। जब-तब डिंगी में पानी भर जाता था। कभी- कभी एक ही बार में डिंगी भर जाती। आधे घंटे के अंदर हमने लगभग सारा पानी बाहर निकाल दिया था। उसके बाद बारी-बारी से दो आदमी पानी निकालते थे तो दो आदमी आराम करते थे। कोई भी मुझसे वह काम करने की उम्मीद नहीं कर रहा था। मैंने अपने पिता की सोला टोपी की मदद से यह काम किया। "हम कहाँ पर हैं?" एक यात्री ने पूछा।

"कहीं से भी बहुत दूर।" एक अन्य यात्री ने कहा।

"हिंद महासागर में कहीं-न-कहीं तो कोई द्वीप होंगे।"

"पर इससे पहले हम वहाँ पहुँचे, हमें समुद्र में कई दिन रहना पड़ सकता है।"

"दिन या फिर हफ्ते भी।" कैप्टन ने कहा, "चलो देखें, हमारे पास कितने दिन का राशन है?"

डिंगी में काफी मात्रा में आपातकालीन राशन था—बिस्किट, किशमिश चॉकलेटस (हमारी अपनी तो डूब गई थी) और काफी पानी, लगभग एक हफ्ते के लिए एक फस्ट-एड बॉक्स भी था, जिसका तुरंत इस्तेमाल किया गया मि.मगरिज की नाक के मरहम-पटटी करने के लिए। और भी कुछ यात्री थे, जिनका शरीर कहीं-कहीं कट गया था, खरोंचें आ गई थीं, उनका प्राथमिक उपचार करना था। एक मुसाफिर को माथे पर गहरा धक्का लगा, जिससे उसकी स्मृति चली गई थी। उसको कुछ भी पता नहीं था कि कैसे हम हिंद महासागर के मध्य में इधर-उधर हिचकोले खा रहे थे; उसको इस बात का पूरा भरोसा था कि वह किसी 'प्लेज़र- क्रूज में बाताविया से कुछ मील दूर पर हैं।

डिंगी की लहरों के ऊपर हाला-डोला चलने से यात्रियों को समुद्री बीमारी (मितली आना) हो गई और उस दिन किसी ने कुछ नहीं खाया जिससे एक दिन का राशन बच गया।

धूप बहुत तेज थी। मेरे पिताजी ने मेरा सिर एक बड़े रूमाल से ढक दिया था। उनको बंदाना रूमाल रखने का बड़ा शौक था और कम-से-कम दो रूमाल रखते थे, इसलिए उन्होंने अपना सिर भी ढक लिया था। सोला-टोपी जो समुद्री पानी में अच्छी तरह भीग गई थी, वह मि.मगरिज के सिर ढकने के काम आ रही थी।

जब मैं 'सी-सिकनेस से थोड़ा ठीक हुआ, तब मुझे बहुमूल्य स्टैंप-अलबम की याद आई और मैं उठकर बैठा तथा जोर से बोला, "स्ट्रेप्स (टिकटें) पापा, क्या आप स्टैंप अलबम साथ ले आए हैं?"

उन्होंने अपना सिर कुछ अफसोस से हिलाया, "अब तक तो वह समुद्र के तलहटी में पहुँच गया होगा।" उन्होंने कहा, "पर चिंता की कोई बात नहीं, मैंने कुछ दुर्लभ टिकट अपने पर्स में रख लिये हैं। अपने इस काम पर प्रसन्न होते हुए उन्होंने अपनी शर्ट की जेब को थपथपाया।"

डिंगी दिन भर इधर-उधर दिशाहीन चलती रही। किसी को कोई भी अनुमान नहीं था कि वह कहाँ जा रही है।

"शायद हम एक ही जगह चक्कर काट रहे हैं।" मि. मगरिज ने निराशा भरे स्वर में कहा।

हमारे पास न तो कंपास था। और न ही पालदार नाव, न ही कोई पतवार थी। और यदि पतवार होती तो भी हम शायद ज्यादा दूर नहीं जा सकते थे। हम तोलहरों और धारा के साथ बहने को विवश थे। उम्मीद कर रहे थे कि वह हमें जमीन की तरफ या किसी जहाज के निकट ले जाए, जिससे हम चिल्लाकर किसी मददगार को बुला सकें।

एक पके हुए टमाटर की तरह लाल-लाल सूर्य भी समुद्र में अस्त हो गया। धीरे-धीरे हमारे ऊपर अँधेरा छा गया। यह अमावस की रात थी, बिना चाँद की और हमें लहरों के ऊपर सफेद झाग के अलावा कुछ नहीं दिख रहा था। मैं अपने पिता के कंधे पर सिर रखकर लेटा हुआ था। सितारों को देख रहा था, जो आसमान में चमक रहे थे।

"शायद तुम्हारा दोस्त सोनू भी आज आसमान की ओर देखे तो उन्हीं सितारों को देख रहा होगा, जो तुम देख रहे हो।" मेरे पिता ने कहा, "दुनिया इतनी बड़ी नहीं है, देखा जाए तो।"

"फिर भी हमारे चारों ओर समुद्र-ही-समुद्र है।" मि.मगरिज ने कहीं अँधेरे में से ही कहा।

सोनू की याद आते ही हमने अपनी जेब टटोली और यह सुनिश्चित किया कि (अश्वमीन अभी भी वहीं था) सोनू का दिया जेडका सुरक्षित है।

"सोनू का दिया अश्वमीन मेरे पास अभी भी है।" मैंने उसे दिखाते हुए अपने पिताजी से कहा।

"इसको सँभालकर रखो। यह हमारे लिए भाग्यशाली सिद्ध हो सकता है।" मेरे पिता ने कहा।

"क्या अश्वमीन भाग्यशाली होते हैं?"

"कौन जानता है?" उसने यह प्यार से दिया है, प्रेम जो है, प्रार्थना के समान है। अतएव इसे सँभालकर रखो।

उस रात मुझे ज्यादा नींद नहीं आई। मेरे खयाल से कोई भी सो नहीं पाया। कोई ज्यादा बोला भी नहीं, अलावा मगरिज के वह ठंडी बीयर और सलामी के बारे में कुछ बड़-बड़ कर रहे थे।

दूसरे दिन मैं इतना अस्वस्थ नहीं अनुभव कर रहा था। 10 बजे तक काफी भूख लग आई; पर नाश्ते में केवल दो बिस्किट, छोटा सा चॉकलेट का टुकड़ा और थोड़ा सा पेयजल हिस्से में आया। वह काफी गरम दिन था। जल्द ही हम सबको प्यास लग आई। सभी लोगों में सहमति बनी कि हमें अपना पानी बचाकर रखना चाहिए और राशनिंग करनी चाहिए।

दो-तीन लोग अभी भी बीमार महसूस कर रहे थे; पर अन्य लोगों को भी मि. मगरिज को मिलकर भूख लग गई थी और वे अपनी सामान्य मन:स्थिति में आ गए थे। और अब इस बात पर भी चर्चा हो रही थी कि शायद कोई उधर से जाता हुआ बोट उन्हें बचा ले।

"क्या इस डिंगी में डिस्ट्रेस-रॉकेटस (मुसीबत के समय में दागे जानेवाले रॉकेटस) हैं?" मेरे पिताजी ने पूछा, "यदि हम कोई जहाज या प्लेन देखें तो रॉकेट दाग सकते हैं। यह उम्मीद कर सकते हैं कि शायद हमें कोई देख ले और यहाँ से बचाकर ले जाए। अन्यथा हम लोगों के दूर से दिखाई देने का मौका कम ही है।"

डिंगी में अच्छी तरह खोजबीन की गई, पर ऐसा कोई रॉकेट नहीं था। "किसी ने उसे गाई फॉक्स दिवस पर प्रयोग कर लिया होगा।" मि. मगरिज ने टिप्पणी की।

"पर हॉलैंड में गाई फॉक्स डे नहीं मनाया जाता है। गाई फॉक्स तो एक इंग्लिश मैन था।" मेरे पिता ने कहा।

"आहा!" मि. मगरिज ने बिना घबड़ाए हुए कहा, "मैं हमेशा कहता रहा हूँ अधिकतर महान आदमी इंग्लिशमैन हैं। उस आदमी गाई फॉक्स ने क्या किया था?"

"पार्लियामेंट को उड़ाने की कोशिश की थी।" मेरे पिता ने कहा। उस दिन अपराह्न में हमने सबसे पहली बार शार्क देखा। वह बहुत विशाल प्राणी थे। जिस प्रकार से वे हमारी नाव के आगे-पीछे और नीचे से जा रहे थे,

लग रहा था कि कहीं वे हमारी डिंगी को डुबो ही न दें। वे कुछ समय के लिए चले गए। पर फिर शाम को वापस आ गए।

रात को जब मैं अपने पिता के साथ लेटा अधसोया-सा था, हमारे चेहरे पर कुछ पानी की बूँदे गिरीं। मैंने पहले सोचा कि संभवत: यह समुद्र के पानी की ही कोई फुहार है, पर जो पानी की फुहार पड़ती रही तो समझ में आया कि यह तो हलकी-हलकी बारिश हो रही है।

"वर्षा!" मैं एकदम से उठ बैठा और चिल्लाया, "बारिश हो रही है।" सब लोग उठ गए और मगों, हैटों एवं अन्य बरतनों में वर्षा का पानी इकटठा करने लग गए। मि. मगरिज मुँह खोलकर लेट गए और वर्षा का जल पीने लगे। "यह कुछ ऐसे है" जैसे, उन्होंने कहा, "आप दुनिया में सारी धूप और रेत ले लें—पर इंग्लैंड में एक बारिश का दिन दे दें।"

लेकिन सुबह होते-होते बादल छँट गए और दिन पिछले दिन से भी ज्यादा गरम रहा। जल्दी ही सर्न-बर्न (सूरज के ताप) से हमारे बदन लाल-लाल और रूखे हो गए। दोपहर तक मि. मगरिज भी खामोश हो गए। किसी के पास भी बातचीत करने की ताकत नहीं थी। फिर मेरे पिता फुसफुसाकर बोले, "बेटे, क्या तुम्हें जहाज की आवाज सुनाई पड़ रही है?"

मैंने बहुत ध्यान से सुना, लहरों की आवाज के ऊपर बहुत दूरी पर एक जहाज की आवाज हो सकती थी। पर वह अवश्य ही बहुत दूर रहा होगा, क्योंकि हम उसे देख नहीं पा रहे थे। शायद वह सूरज की तरफ उड़ रहा हो। चौंध की वजह से हम उसे देख नहीं पा रहे थे; यह आवाज शायद हमारी कल्पना ही रही हो।

फिर वह डचमैन जिसकी स्मृति-लोप हो गई थी, उसने सोचा कि उसे जमीन दिख रही है और क्षितिज की ओर इशारा करके कह रहा था, "वह बाताविया है। मैं आपसे कह रहा था कि हम तट के नजदीक हैं। किसी और ने कुछ नहीं देखा। तो मैं और पिताजी ही ऐसे नहीं थे, जो कल्पना कर रहे थे।"

मेरे पिता ने फिर कहा, "यह यही दिखाता है कि एक आदमी वही देखता है, जो वह देखना चाहता है, चाहे देखने के लिए कुछ भी न हो।"

शार्क अभी भी हमारे साथ-साथ तैर रही थीं। मि.मगरिज को यह पसंद नहीं आ रहा था। उन्होंने अपना एक जूता निकालकर शार्क की ओर फेंक दिया, पर बड़ी मछली हम लोगों के पीछे-पीछे तैरती रही।

"अगर जूते में तुम्हारा पैर होता तो शार्क उसे स्वीकार कर लेती ।" मेरे पिता ने कहा।

"अपने जूते मत फेंको।" कैप्टन ने कहा, "हो सकता है, हम किसी रेगिस्तानी निर्जन तट पर पैर रखें और हमें सैकड़ों मील पैदल चलना पड़े। तभी शीतल हवा चलने लगी और हमारी डिंगी समुद्र के लहराते पानी में थोड़ी तेजी से चलने लगी।"

"कम-से-कम हम आगे बढ़ने लगे हैं।" कैप्टन ने कहा।

"गोल-गोल चक्करों में।"

शीतल बयार बड़ी ताजगी भरी थी। इससे हमारे जलते हुए अंगों को ठंडा होने में मदद मिली तथा थोड़ी देर में हमें नींद आ गई। मध्य-रात्रि में मेरी नींद खुल गई और मुझे जोरों की भूख लग रही थी।

"तुम ठीक तो हो?" मेरे पिता ने पूछा, जो सारे समय जाग रहे थे।

"बस भूख लगी है।" मैंने कहा।

"तुम क्या खाना चाहोगे?"

"संतरे।"

वह हँसे । "संतरे तो यहाँ बोट पर हैं नहीं; पर मैंने तुम्हारे लिए एक चॉकलेट का टुकड़ा रखा है। थोड़ा सा पानी भी है। यदि तुम्हें प्यास लगी है। मैं बहुत देर तक चॉकलेट अपने मुँह में रखे रहा जिससे देर तक चले फिर मैंने थोड़ा सा पानी पी लिया।"

"क्या आपको भूख नहीं लगी है?" मैंने पूछा।

"बहुत जोरों की। मैं तो पूरी टर्की खा सकता हूँ। जब हम कलकत्ता, मद्रास या कोलंबो पहुँचेंगे या जहाँ कहीं भी, हम लोग वहाँ के सबसे अच्छे रेस्टोरेंट में जाएँगे और खूब खाएँगे जैसे-जैसे..."

"जैसे कि डूबे हुए जहाज के नाविक।" मैंने कहा।

"बिलकुल सही।"

"डैड, क्या आप सोचते हैं कि हम कभी जमीन पर पाँव रखेंगे?"

"मुझे उम्मीद है कि हम जमीन पर उतरेंगे। तुम हार तो नहीं रहे हो?"

"नहीं, जब तक आप हमारे साथ हैं, बिलकुल नहीं।"

दूसरे दिन सुबह हमें समुद्री चिडिया सी-गलस दिखी जिससे हमें बहुत खुशी हुई। यह एक पक्का संकेत था कि अब हम तट से ज्यादा दूर नहीं हैं; पर एक डिंगी को तीस-चालीस मील का सफर तय करने में कई दिन लग सकते हैं। चिडिया डिंगी के ऊपर गोल-गोल चक्कर काट रही थी। उनकी वह चहचहाहट पहली परिचित आवाज थी। जो हमने पिछले तीन दिनों और तीन रातों के बाद सुनी थी, हवा समुद्र और अपनी थकी आवाजों के अलावा।

शार्क भी अब गायब हो गई थी, यह भी एक उत्साहित करनेवाली बात थी। उन्हें समुद्र में जो तेल फैल जाता था वह पसंद नहीं था।

पर अब सी-गलस (पक्षी) भी हमारा साथ छोड़कर चले गए, जिससे लगा कि शायद हम फिर जमीन से दूर जा रहे हैं।

"गोल-गोल।" मि. मगरिज बोले, "गोल-गोल।"

हमारे पास अगले एक हफ्ते के लिए पर्याप्त भोजन और पानी था; पर कोई सोच भी नहीं सकता था कि हमें एक हफ्ते इस प्रकार समुद्र में रहना पड़ सकता था।

सूरज उस वक्त एक आग का गोला जैसा था। हमारा पानी हमारी प्यास बुझाने के लिए

पर्याप्त नहीं था। दोपहर तक न हममें पर्याप्त शक्ति बची थी, न ही आशा।

मेरे पिता के मुँह में पाइप था। उनके पास तंबाकू तो था नहीं, पर उन्हें मुँह में पाइप दबाए रखना अच्छा लगता था। वे कहते थे कि इससे उनका मुँह सूखता नहीं था।

शार्क मछलियाँ फिर वापस आ गईं। मि. मगरिज ने अपना दूसरा जूता भी उतारकर उन पर फेंक दिया।

"एक भीगे-गीले इंग्लिश ग्रीष्म ऋतु से बढ़िया कुछ भी नहीं है।" मि. मगरिज बुदबुदाए।

मैं डिंगी के वेल में सो गया। मेरे चेहरे पर पिताजी का बड़ा सा रूमाल ढका हुआ था। रूमाल पर जो पीले-पीले धब्बे थे वे बड़े-बड़े घूमते हुए सूरज के समान दिख रहे थे।

जब मैं जागा तो पाया कि मेरे ऊपर एक बड़ी सी छाया पड़ रही है। पहले तो मैंने सोचा कि शायद वह बालों की छाया है; पर इस छाया कि जगह बदल रही थी। मेरे पिता ने मेरे चेहरे से रूमाल हटा लिया और बोले, "अब तुम जाग सकते हो, बेटा। जल्द ही हम घर पहुँच जाएँगे और हमारे बदन सूख जाएँगे। हमारे बगल में एक फिशिंग-बोट (मछली पकड़ने वाली नाव) आ गई थी। उसकी बड़ी सी फडफ़ड़ाती पाल की छाया हम पर पड़ रही थी। कई एक तंबई रंग के, मुसकराते और बातचीत करते हुए मछुआरे बर्मीज—जैसा हमें बाद में पता चला अपनी नाव पर से हमें ध्यान से देख रहे थे।"

कुछ दिन बाद मैं और मेरे पिताजी कलकत्ते में थे। मेरे पिता के दुर्लभ डाक- टिकट एक हजार रुपए से ज्यादा में ही बिक गए। हम कलकत्ता के एक आरामदेह होटल में ठहर गए।

मि. मगरिज को हवाई जहाज द्वारा इंग्लैंड भेज दिया गया। बाद में हमें उनसे एक कार्ड मिला, जिसमें लिखा था—इंग्लिश बारिश बिलकुल बेकार है। "और हम लोगों का क्या विचार है?" मैंने पूछा, "क्या हम इंग्लैंड नहीं जा रहे हैं?"

"अभी नहीं।" मेरे पिता ने कहा, "तुम जब तक युद्ध समाप्त नहीं होता शिमला में एक बोर्डिंग स्कूल में जाओगे।"

"पर हम आपको छोड़कर क्यों जाएँ?" मैंने पूछा।

"क्योंकि मैंने रॉयल एयर फोर्स (आर.ए.एफ.) ज्वाइन कर लिया।" मेरे पिता ने कहा, "चिंता की कोई बात नहीं, मेरी पोस्टिंग दिल्ली में ही होगी और मैं तुम्हें कभी-कभी देखने आ सकता हूँ।"

एक हफ्ते बाद मैं एक छोटी सी गाड़ी में बैठकर ऊँचे पहाड़ी ट्रैक पर छुक- छुक करते हुए शिमला जा रहा था। लगभग सभी भारतीय, एंग्लो इंडियन और इंग्लिश बच्चे कंपार्टमेंट में एक-दूसरे से लड़ते-भिड़ते जा रहे थे। उनके साथ मैं बड़ा अलग-अलग-सा महसूस कर रहा था, क्योंकि मैं उनके नटखटपने या चुहलबाजियों से आगे बढ़ गया था। मैं अप्रसन्न भी नहीं था। मुझे पता था कि मेरे पिता जल्दी ही मुझसे मिलने आ रहे हैं।

उन्होंने वादा किया था कि वे मेरे लिए कुछ किताबें, एक जोड़ा रोलर-स्केटस और एक क्रिकेट बैट लेकर आएँगे, जैसे ही उन्हें पहली तनख़्वा मिलेगी।

इस बीच मेरे पास सोनू का दिया अश्वमीन था। वह आज भी मेरे पास है।

# अँधेरी दुनिया की हसीन लड़की

"रोहाना तक मैं गाड़ी के डिब्बे में अकेला ही था। फिर उसमें एक लड़की चढ़ी। एक दंपती जो उसे छोड़ने आए थे। संभवत: वे उसके माता-पिता थे; वे उसके आराम के प्रति बहुत चिंतित थे। जो महिला थी उसने उसे बारबार अच्छी तरह समझाया कि वह अपना सामान कहाँ रखे और कैसे अजनबियों से बातचीत करने से बचा जाए।"

उन्होंने अलविदा किया और ट्रेन स्टेशन से चल पड़ी। मैं उन दिनों लगभग अंधा हो चुका था। मेरी आँखें केवल रोशनी और अँधेरे के प्रति संवेदनशील रह गई थीं, अतएव मैं यह बताने में असमर्थ था कि वह लड़की कैसी दिखती थी; पर उसके चलने के अंदाज और थप-थप की आवाज से मैं यह बता सकता हूँ कि वह स्लिपर्स पहने थी।

मुझे यह कैसी दिखती है, यह जानने में थोड़ा समय लगेगा और शायद मैं यह कभी जान भी नहीं सकूँगा, पर मुझे उसकी आवाज पसंद थी। यहाँ तक कि उसके स्लिपर्स की आवाज भी।

"क्या तुम यहाँ से सीधे देहरादून जा रही हो?" मैंने पूछा। मैं शायद किसी अँधेरे कोने में बैठा था, क्योंकि मेरी आवाज सुनकर वह चौंक गई। वह थोड़ी अचंभित होकर बोली, "मैं नहीं जानती थी कि इस डिब्बे में कोई और भी बैठा है।"

पर ऐसा बहुधा होता है कि जो लोग देख सकते हैं, जिनकी आँखें ठीक- ठाक हैं, वे कई बार यह नहीं देख पाते कि उनके ठीक सामने क्या है? उनको देखने के लिए शायद बहुत कुछ रहता है। जबकि वे लोग जो देख नहीं पाते (या बहुत कम देख पाते हैं) वे वही चीजें महसूस कर पाते हैं, जो अति आवश्यक होती हैं, जो उनको अन्य इंद्रियों को ज्यादा ग्राह्य होता है।

"मैंने भी आपको देखा नहीं।" मैंने कहा, "पर तुम्हें अंदर आते हुए सुना। मैं यह सोच रहा था कि मैं कैसे उसे यह जानने से रोक सकूँ कि मैं अंधा हूँ। यदि मैं अपनी सीट पर ही बैठा रहूँ तो शायद यह संभव हो सकता था।" "मैं सहारनपुर उतर रही हूँ।" उस लड़की ने कहा, "मेरी चाची मुझे लेने वहाँ आएँगी।"

"फिर हमें शायद ज्यादा दोस्ती नहीं बढ़ानी चाहिए," मैंने उत्तर दिया,

"चाचियाँ बहुत विकट प्राणी होती हैं।"

"आप कहाँ जा रहे हैं?" उसने पूछा।

"देहरादून और वहाँ से मसूरी।"

"ओह, आप कितने भाग्यशाली हैं। मेरी इच्छा है कि मैं भी मसूरी जाऊँ। मैं पहाड़ों से प्यार करती हूँ, विशेषकर अक्तूबर में।"

"हाँ, यह सबसे अच्छा समय होता है। पहाड़ों पर चारों तरफ डाहालिया के फूल खिले होते हैं, धूप भी बहुत सुखद होती है। रात के समय आग के सामने बैठकर थोड़ी ब्रांडी भी पी जा सकती है। मैंने अपनी स्मृति को खँगालते हुए कहा, "इस वक्त ज्यादातर टूरिस्ट भी वापस चले गए होते हैं, सड़कें शांत और करीब-करीब खाली रहती हैं। हाँ, अक्तूबर ही सबसे बढ़िया समय है।

वह चुप रही।" मैंने सोचा, कहीं मेरे शब्द उसके अंत:स्थल को न छू गए हों। और वह सोच रही हो कि मैं एक रोमांटिक बेवकूफ हूँ। फिर मुझसे एक गलती हो गई।

"बाहर कैसा हो रहा है?" मैं पूछ बैठा।

उसको मेरा सवाल कुछ अजीब नहीं लगा। क्या उसने इस बात को भाँप लिया है कि मैं देख नहीं सकता? उसके अगले सवाल ने मेरे संदेह को मिटा दिया।

"आप स्वयं खिड़की के बाहर क्यों नहीं देख लेते?" उसने कहा। मैं अपनी बर्थ पर से थोड़ा खिसका और खिड़की की चौखट महसूस करने की चेष्टा की खिड़की खुली हुई थी और मैं उसके सामने था। यह दिखाने के लिए कि बाहर का दृश्य देख रहा हूँ। मैंने इंजन की थकी-हाँफती आवाज सुनी पहियों की खडख़ड़ा- हट और मैंने मन-ही-मन में देखा कि टेलीग्राफ के खंभे तेजी से आगे भागे जा रहे हैं।

"क्या आपने देखा?" मैंने आगे कहने का साहस किया, "पेड़ ऐसे लग रहे हैं जैसे भाग रहे हों और हम बिलकुल शांत खड़े हैं।"

"ऐसा तो हमेशा ही होता है।" उसने कहा, "क्या आपको कोई पशु दिख रहा है?"

"नहीं।" मैंने पूरे विश्वास के साथ कहा। मुझे पता था कि देहरा के आसपास के जंगलों में शायद ही कोई जानवर बचा हो। मैंने खिड़की से अपना चेहरा हटाकर लड़की के सामने कर लिया और हम दोनों कुछ देर तक खामोश बैठे रहे।

"तुम्हारा चेहरा बड़ा दिलचस्प है।" मैंने टिप्पणी की। मैं अब काफी साहसी हो उठा था। यह एक बहुत महफूज रिमार्क था। कम ही लड़कियाँ ऐसी होती हैं, जो अपनी प्रशंसा नापसंद करती हों। वह मुदि्रत होकर हँसी—एक साफ खनखनाती हुई हँसी।

"अच्छा हुआ, आपने मेरे चेहरे को दिलचस्प बताया। मैं लोगों से यह सुनते-सुनते थक गई हूँ कि मेरा चेहरा खूबसूरत है।"

ओह, तो आपका चेहरा खूबसूरत है, मैंने सोचा, पर मैंने जोर से कहा, "एक दिलचस्प चेहरा खूबसूरत भी हो सकता है।"

"आप बहुत बहादुर युवा आदमी हैं," उसने कहा, "पर आप इतने गंभीर क्यों हैं?"

तब मैंने सोचा कि मैं उसके लिए हँसूँगा, पर हँसने के खयाल से ही बहुत परेशान और अकेला महसूस करने लगा।

"हम जल्दी ही आपके स्टेशन पर पहुँच जाएँगे।" मैंने कहा।

"धन्यवाद कि यह एक छोटी सी यात्रा थी। मैं ट्रेन में दो-तीन घंटे से अधिक नहीं बैठ सकती।"

पर वहाँ मैं घंटों या कितने समय भी केवल उसको बातचीत करते हुए सुनने को बैठने को तैयार था। उसकी आवाज में पहाड़ी नदी की चमक थी। जैसे ही वह गाड़ी से उतरेगी, वह हमारी इस छोटी सी मुलाकात को भूल जाएगी, पर उसकी याद मेरे मन में इस यात्रा के अंत तक और उसके थोड़े समय बाद भी बनी रहेगी।

इंजन ने बहुत जोर से सीटी दी, पहियों की आवाज और उनकी लय बदली, वह लड़की उठी और अपना सामान इकटठा करने लगी। मैं सोचने लगा कि क्या लड़की ने अपने बालों में जूड़ा बना रखा होगा या उसने चोटियाँ बनाई होंगी, या अपने बाल उसने कंधों पर लहराते हुए छोड़ दिया था? या वह बहुत छोटा कटवाया (ज्वाय कट) था?

ट्रेन धीरे-धीरे स्टेशन पर आ गई। बाहर कुलियों की और खोमचेवालों (चाय, सिगरेट वालों) की आवाजें आ रही थीं। उसी में से एक स्त्री दरवाजे के पास जोर से चिल्लाई। यह उसकी चाची रही होगी।

"गुड-बाय।" उस लड़की ने कहा।

वह मेरे बहुत नजदीक खड़ी थी, इतनी नजदीक कि उसके बालों से आने वाली खुशबू बहुत मादक थी। मैं अपना हाथ उठाकर उसके बालों को छूना चाहता था। वह आगे बढ़ गई। उसके सेंट से आ रही खुशबू अभी भी वहाँ बनी हुई थी। जहाँ पर वह खड़ी थी।

दरवाजे पर कुछ गड़बड़ हुई। एक आदमी क्षमा माँगता हुआ दरवाजे के अंदर दाखिल हुआ। फिर दरवाजा बंद हुआ और उसके साथ बाहर की दुनिया भी! मैं अपनी बर्थ पर वापस आ गया। एक बार फिर मुझे खेल खेलना था और एक नया साथी यात्री था।

ट्रेन ने अपनी गति पकड़ी, पहिए अपना राग अलापने लगे तथा पूरा डब्बा कराह रहा था और हिल रहा था। मैंने खिड़की को ढूँढ़ लिया था। उसके सामने ही बैठ गया था तथा दिन की रोशनी, जो मेरे लिए अँधेरा था। इसे देख रहा था।

"आपको निराशा हुई होगी।" मेरे साथी यात्री ने कहा

"मैं इतना आकर्षक नहीं हूँ जितना कि वह लड़की," जो अभी-अभी ट्रेन से उतरी।

"वह काफी दिलचस्प लड़की थी।" मैंने कहा, "अच्छा, क्या आप बता सकते हैं कि उस लड़की के बाल लंबे थे या छोटे कटे हुए?

"मुझे मालूम नहीं।" वह थोड़ा परेशान लग रहा था, "मैंने उसकी आँखें देखी बालों पर

ध्यान नहीं दिया। उसकी आँखें बहुत खूबसूरत थीं, पर उसके किसी काम की नहीं, वह पूरी तरह अंधी थी। क्या आपने देखा नहीं?

# मौत का सौदागर

"क्या कोई ऐसा व्यक्ति भी हो सकता है, जो जन्म से ही हत्यारा हो—इस मायने में कि जैसे कोई जन्म से ही लेखक होता है, जन्म से ही संगीतज्ञ होता है या जन्म से ही कोई जीतनेवाला होता है। तो कोई जन्म से ही हारनेवाला होता है।"

कुछ निश्चयात्मक रूप से कहा नहीं जा सकता। यह बात तो सब लोगों में समान रूप से पाई जाती है, कि जो हमारे रास्ते में काँटे हैं, उन्हें हटा दीजिए; पर कुछ ही लोग ऐसा करते हैं कि उनकी इहलीला समाप्त कर दें।

यदि कभी भी कोई जन्मजात हत्यारा हो सकता है तो वह जरूर ही विलियम जोंस ही रहे होंगे। यह उनके लिए बहुत स्वाभाविक था। कोई अति-हिंसा नहीं, कोई खून-खराबा नहीं, किसी का गला काटना नहीं या काट-पीटकर फेंक देना या गला घोंट देना—ऐसा कुछ नहीं। बुरा सही माने में जहर कुशलता और चतुराई से दे देना, अपने विवेक द्वारा।

वह बहुत ही नम्र और सत्य तौर-तरीकेवाले आदमी थे। वह तितलियाँ पकड़ते थे और उन्हें काँच के केस (डिब्बे) में सजाकर रखते थे। उनकी ईथर की बार की बारल बहुत शीघ्र और बिना दर्द के काम करती थी। वह उन सुंदर प्राणियों में कभी पिन नहीं चुभोते थे।

क्या आपने कभी आगरा डबल-मर्डर के बारे में सुना है? हाँ, यह बहुत वर्ष पहले पढ़ा है, जब आगरा ब्रिटिश साम्राज्य की एक बहुत दूर-दराज की चौकी थी।

उन दिनों विलियम जोंस शहर के एक अस्पताल में पुरुष नर्स थे। वे रोगी, जो जानलेवा बीमारियों से ग्रस्त रहते थे, उनके बारे में बोलते थे कि वे मरीजों की सेवा बड़ा मन लगाकर करते है; जबकि ज्यादातर नर्स, पुरुष या नारी, उन रोगियों की सेवा-परिचर्या करने में ज्यादा दिलचस्पी लेते थे, जिनके ठीक होने की आशा रहती थी। नई नर्स विलियम उन मरीजों की सेवा करने को तत्पर रहती थी, जो मृत्यु-शय्या पर होते थे।

मृत्यु के कगार पर जो रोगी होते थे, उनके प्रति उनकी विशेष सहानुभूति होती थी। वे उनको अंतिम विदा देते हुए पसंद करते थे। बेशक, यह उनका अच्छा स्वभाव ही था।

पास ही की एक जगह मेरठ में जब वह किसी काम से गए तो वहाँ स्टेशन मास्टर की पत्नी मिसेज ब्राउनिंग के प्यार में पड़ गए। प्यार से सराबोर प्रेमप त्र आगरा-मेरठ पोस्टल सेवाओं पर दबाव डाल रहे थे। लिफाफे भी अब भारी होते जा रहे थे। इस वजह से नहीं कि प्रेम-पत्र की लंबाई बढ़ती जा रही थी, पर इस वजह से उसमें एक सफेद पाउडरी पदार्थ होता था और उसमें विस्तृत दिशा-निर्देश होते थे कि उन्हें कैसे सही मात्रा में देना है।

मिस्टर ब्राउनिंग एक विनीत और विश्वसनीय आदमी थे। दरअसल वह एक प्रकार के जन्मजात न हारनेवाले इनसान थे। वह ऐसे आदमी नहीं थे जो अपनी पत्नी के पत्रों को पढ़े, यहाँ तक कि जब वे भयंकर पेट-दर्द से पीड़ित रहते थे। तो वह यही कहते थे कि यह अशुद्ध पानी के कारण है। अभी वह दस्त और उल्टी के एक हमले से ठीक नहीं हो पाते थे कि दुबारा यही बीमारी शुरू हो जाती थी।

गेस्ट्रोइंटाइटिस के निदान पर उन्हें हॉस्पिटल में भरती किया गया। जहाँ पर वह अपनी पत्नी के सेवा-उपचार के बीच जल्द ही ठीक हो गए और घर आ गए।

घर आने पर उनका खयाल रखनेवाली पत्नी ने उन्हें नींबू-पानी का एक गिलास दिया, जिसके पीते ही उन्हें फिर वही बीमारी हो गई और वह पुन: ठीक नहीं हुए। यह वे दिन थे जब भारत में कॉलरा और इस तरह की बीमारियों से बहुत लोगों की मृत्यु हो रही थी और डेथ सूटफिकेट पाना कुत्ते के लाइसेंस बनाने से ज्यादा आसान था।

थोड़े से समय के शोकावधि के बाद (उन दिनों मौसम गरम था और आप ज्यादा दिनों तक काली पोशाक नहीं पहन सकते थे) मिसेज ब्राउनिंग आगरा चली गईं। जहाँ उन्होंने मि.विलियम जोंस के पड़ोस में घर ले लिया।

मैं यह बताना भूल गया कि मिस्टर जोंस विवाहित थे। उसकी पत्नी एक तुच्छ प्राणी थी और मि. जोंस जैसे चतुर अक्लमंद आदमी के साथ उनका कोई मुकाबला नहीं था। गरम मौसम खत्म होने के पहले ही भयंकर हैजा उनको भी निगल गया। अब प्रेमियों के लिए रास्ता साफ हो गया था और वह पवित्र दांपत्यबं धन में बँध सकते थे।

परंतु आगरे में मैडम गॉसिप भी रहती थी और यह बात फैलने में देर नहीं लगी कि यह एक मर्डर था और सुपरिंटेंडेंट पुलिस को बिना काम की चिट्ठियाँ भेजी जानी लगीं, जाँच कमेटी बन गई और खोजबीन शुरू हो गई। मिसेज ब्राउनिंग के पास से अपने प्रेमी के प्रेम-पत्र और प्रणय-पत्र मिले। बेवकूफ ने उन्हें अपनी चारपाई के नीचे एक बक्से में रखा था।

आगरा और मेरठ दोनों जगहों के कब्रों को खोदा गया। संखिया, गरमसे- गरम मौसम में भी बना रहता है। दोनों लाशों के अवशेष में काफी मात्रा में संखिया पाया गया।

मिस्टर जोंस और मिसेज ब्राउनिंग दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया और उन पर हत्या का आरोप लगा।

"क्या अंकल बिल वास्तव में एक हत्यारे हैं? मैंने देहरादून में अपनी दादी के घर में ड्राइंग रूम के सोफा पर बैठे-बैठे ही पूछा। (इस समय आपको मैं यह बता दूँ कि विलियम जोंस मेरी माँ के दूर के भाई थे।)"

मैं उस समय आठ या नौ साल का रहा हूँगा। इसके पहलेवाले गरमियाँ चाचा बिल ने हम लोगों के साथ देहरादून में बिताई थीं, और उस समय वे बाजार से मेरे लिए मिठाइयाँ और पेस्ट्रीज ले आया करते थे, जिन्हें मैं सारी की सारी खा जाता था, बिना किसी नुकसान या

कुप्रभाव के।

"अंकल बिल के बारे में तुम्हें यह बात किसने बताई?" दादी माँ ने पूछा। "मैंने ऐसा स्कूल में सुना। सारे लड़के स्कूल में मुझसे यही सवाल पूछ रहे थे—क्या तुम्हारे चाचा एक हत्यारे हैं? वे कहते हैं कि उन्होंने अपनी दोनों पत्नियों को जहर दे दिया था।"

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है। तुम ऐसा कैसे कह सकते हो?"

"क्यों? क्या वे जेल में नहीं हैं?"

"कौन कहता है, वे जेल में हैं?"

"स्कूल के लड़के, उन्होंने यह अपने माता-पिता से सुना है। चाचा बिल पर आगरा फोर्ट में मुकदमा चलेगा।"

ड्राइंग-रूम में एक गरम चुप्पी छा गई। फिर चाची एकदम से बोली, "यह सब उस भयानक औरत की गलती है।"

"तुम्हारा आशय मिसेज ब्राउनिंग से तो नहीं है?" दादी माँ ने पूछा। "हाँ," बेशक। यह सब बिल को उसी ने सुझाया होगा। बिल ऐसा कुछ नहीं सोच सकता था।

"पर वही (बिल) उसको (मिसेज) ब्राउनिंग को पाउडर में भेजा करता था। और यह मत भूलो कि मिसेज ब्राउनिंग ने..."

दादी माँ कहते-कहते बीच वाक्य में रुक गईं, और उन्होंने सभी और चाची मेबल ने बेटी की तरफ जरा संदेह से देखा।

"आत्महत्या कर ली। मैं बीच में बोल पड़ा। उसके पास अभी भी कुछ पाउडर शेष बचा था।"

आंट मेबल की आँखें खुली की खुली रह गईं, आसमान की ओर, "यह लड़का तो बड़ा तेज है। मैं नहीं जानती, यह कैसा होगा बड़ा होकर?"

"कम-से-कम मैं अंकल बिल की तरह नहीं हूँगा।" मैंने कहा, "कल्पना कीजिए लोगों को जहर दे देना! यदि मैं किसी को मारूँगा तो सही-सही लड़ाई में, मेरे खयाल से वे अंकल बिल को सूली पर चढ़ा देंगे?"

"ओह, मैं आशा करती हूँ, ऐसा नहीं होगा।"

दादी माँ चुपचाप थीं। अंकल बिल उनके सौतेले बेटे थे, पर उनके मन में उनके प्रति एक कोमल भावना थी। चाची मेबल, उसकी बहन भी यही सोचती थी कि वह बेहतरीन आदमी थे। मैं भी उन्हें काफी विनम्र समझता था और यह भी स्वीकार करना पड़ता है कि वह काफी उदार थे। मैं यह सोचने की कल्पना किया करता कि वह फाँसी के फंदे से झूलते कैसे लगेंगे, पर इस तसवीर में यह फिट नहीं हुए।

जैसाकि बाद में पता चला, उन्हें फाँसी की सजा नहीं मिली। श्वेत वर्ण के लोगों को (गोरों को) भारत में शायद ही फाँसी की सजा दी गई हो, हालाँकि जल्लाद डाकुओं और राजनीतिक कैदियों (आतंकियों) को फाँसी पर लटकाने में काफी व्यस्त रहता था। बिल चाचा को आजीवन कारावास की सजा हुई और उन्हें इलाहाबाद के पास नैनी जेल की लाइब्रेरी में एक छोटा सा काम दे दिया गया। उनके पुरुष नर्स की कुशलता को ज्यादा तरजीह नहीं दी गई; हॉस्पिटल में लोग उनका विश्वास नहीं करते थे।

उन्हें 7 या 8 साल बाद जब भारत स्वतंत्र हुआ तो उसके कुछ दिन बाद जेल से रिहा कर दिया गया। जब जेल से बाहर आए तो पाया कि ब्रिटिश भारत छोड़कर वापस जा रहे थे। या तो वे इंग्लैंड जा रहे थे या किसी और कॉलोनी में। दादी माँ की मृत्यु हो चुकी थी। चाची मेबल और उनके पति दक्षिण अफ्रीका में जाकर बस गए थे। चाचा बिल ने पाया कि उनके लिए भारत में बहुत कम या नहीं के बराबर भविष्य था। अतएव वे अपनी बहन के पीछे जोहानसबर्ग, दक्षिण अफ्रीका चले गए। उस समय मैं बोर्डिंग स्कूल के आखिरी साल में था।

मेरे पिता की मृत्यु के बाद मेरी माँ ने एक भारतीय से विवाह कर लिया था और अब मेरा भविष्य भी भारत में ही था।

किसी ने भी अंकल बिल को जेल से रिहा होने के बाद नहीं देखा और न ही किसी ने सपने में भी सोचा था कि वे कभी भारत लौटकर आएँगे। दरअसल पंद्रह साल बीत गए थे, जब वह भारत लौटकर आए उस समय मैं 30 साल से कुछ ऊपर था तथा मैं एक किताब का लेखक था, जो 'बेस्ट सेलर बन गई थी। उसके पहले के पंद्रह साल मेरे लिए एक संघर्ष का समय था। ऐसा संघर्ष, जो हर फ्रीलांस लेखक का अनुभव है और करना पड़ता है; पर अंत में कठिन मेहनत काम आई और पुस्तक की रॉयल्टी आनी शुरू हो गई।

मैं एक हिल स्टेशन फास्टरगंज के बाहरी सिरे पर एक छोटे से घर में रहता था। उस वक्त मैं एक और पुस्तक पर काम कर रहा था, जब एक अप्रत्याशित अतिथि आए।

वह एक दुबले-पतले, झुककर चलनेवाले खिचड़ी ग्रे बालों वाले 50 वर्षीय व्यक्ति थे, जिनकी मूँछे बिखरी हुई थीं, बदरंग दाँत थे। उनकी आँखों को छोड़कर जो थोड़ी पीली पर ठंडी और नीली थी। वह एक कमजोर और नुकसान न पहुँचाने वाले लगते थे। कुछ-कुछ उनके बारे में जाना-पहचाना-सा लगता था।

"क्या तुम्हें मेरी याद नहीं है?" उन्होंने पूछा, "इतने सालों बाद मैं इसकी आशा भी नहीं करता।"

"एक मिनट रुकिए। क्या आपने मुझे स्कूल में पढ़ाया था?

"नहीं, पर लगता है, तुममें में कुछ गर्मजोशी है। उन्होंने अपना सूटकेस नीचे रखा और मुझे उनके नाम की एक झलक एयरलाइंस के लेबल पर लगी। मैंने चौंककर उनकी ओर देखा।"

"आप वे नहीं-नहीं आप वे हो ही नहीं सकते।"

"तुम्हारा चाचा बिल।" उन्होंने कहा और साथ ही खिसियाते हुए अपना हाथ आगे बढ़ाया। "कोई और नहीं। और वे घर में दाखिल हो गए।"

मैं इतना अवश्य मानूँगा कि उनके आने से मुझे एक मिला-जुला अनुभव हुआ। मुझे उनके प्रति कभी भी कोई नापसंदगी नहीं थी। मैंने कभी भी उन्होंने जो किया था, उसका अनुमोदन नहीं किया था। मेरा मानना था कि जहर देकर किसी अवांछित व्यक्ति को मार देना बहुत ही निंदनीय काम था। ऐसा नहीं है कि मैं उनको रास्ते से हटाने के लिए किसी अच्छे तरीके का अनुमोदन करूँगा, फिर भी यह घटना काफी समय पहले हुई थी। उनको इसके लिए सजा दी गई थी और मैंने सोचा कि शायद वह अब सुधर गए हैं।

"इतने सालों तक तुम क्या करते रहे? उन्होंने पूछा और साथ ही वह कमरे में एकलौती और जो सबसे आरामदेह कुरसी थी, उस पर बैठ गए थे।"

"ओह, बस लिखता रहा।" मैंने कहा।

"हाँ, मैंने तुम्हारी पिछली किताब के बारे में सुना था। वह काफी सफल हुई है न?"

"हाँ, वह काफी अच्छी चल रही है। क्या आपने उसे पढ़ा है?"

"मैं ज्यादा पढ़ता नहीं।"

"और आप इतने सालों से क्या करते रहे, अंकल बिल?"

"अरे, बस इधर-उधर कुछ काम करता रहा। कुछ समय तक एक सॉफ्टड्रिंक कंपनी के लिए काम किया, फिर एक ड्रग (दवा) कंपनी में काम किया। वहाँ केमिकल्स के बारे में मेरा ज्ञान काम आया।"

"क्या आप चाची मेबल के साथ दक्षिण अफ्रीका में नहीं थे?"

"मैं उनसे अकसर मिलता-जुलता रहा, फिर कुछ साल पहले उनकी मृत्यु हो गई। क्या तुम्हें पता है?"

"नहीं, मेरा रिश्तेदारों से संपर्क नहीं रहा।" मुझे उम्मीद है कि उन्होंने मेरे इशारे को समझ लिया था। "उनके पति कैसे हैं?"

"कुछ दिनों बाद उनकी भी मृत्यु हो गई। मेरे बेटे, हममें से बहुत कम लोग अब बचे हैं। इसीलिए जब मैंने तुम्हारे बारे में पेपर्स में पढ़ा तो सोचा, क्यों न अपने एकमात्र भतीजे से जाकर मिल आऊँ?"

"आप खुशी से मेरे यहाँ कुछ दिन ठहर सकते हैं।" मैंने जल्दी से कहा फिर मुझे बंबई जाना है। (यह झूठ था। मुझे यह खयाल अच्छा नहीं लग रहा था कि मैं अंकल बिल की उनके शेष जीवन भर देख-रेख करूँ।)

"ओह, मैं ज्यादा दिन नहीं रूकूँगा।" उन्होंने कहा, "जोहॉनसबर्ग में मेरा कुछ धन है। यह ऐसे ही है—जहाँ तक जानता हूँ। तुम ही एक मेरे जीवित संबंधी हो, मैंने सोचा कि अच्छा होगा,यदि मैं तुमसे एक बार फिर मिल लूँ।"

इस बात से आश्वस्त होकर, मैंने अंकल बिल के आराम से रहने-सोने का प्रबंध कर दिया। मैंने अपना बेड-रूम उन्हें दे दिया और खिड़की के साथ जो सीट थी, उस पर अपना बिस्तर लगा लिया। मैं एक बहुत घटिया रसोइया था, पर अपनी सारी बुद्धिमत्ता का इस्तेमाल करते हुए मैंने उनके शाम के खाने के लिए स्क्रैंबल्ड अंडा बना दिया। उन्होंने मेरी क्षमा प्रार्थना को 'कोई बात नहीं कहते हुए बताया कि वे हमेशा से एक कम खानेवाले जीव हैं। आठ साल जेल में रहने के बाद उनका पेट लक्कड़ हजम, पत्थर हजम हो गया था।

वह मेरे रास्ते में नहीं आए और मुझे अपने लिखने-सिखाने और अकेले सैर पर जाने के लिए भी अकेला छोड़ दिया। वह वसंत ऋतु की धूप में बैठकर पाइप पीते रहते।

तीसरे दिन शाम को जब हम इकटठे बैठे थे तो उन्होंने कहा, "अरे, मैं तो एकदम भूल ही गया। मेरे सूटकेस में एक शेरी की बॉटल है, जो मैं तुम्हारे लिए ही लाया था।"

"अंकल बिल, आपने मेरा इतना खयाल रखा। आपको कैसे पता कि मुझे शेरी पसंद है?"

"यह मेरा अन्तर्ज्ञान था। तुम्हें पसंद है, है न?" "अच्छी शेरी के बराबर तो कोई चीज है ही नहीं।" वह अपने बेडरूम में गए और वहाँ एक अनखुली साउथ अफ्रीकन शेरी की बॉटल ले आए।

"अब तुम आग के पास आराम करो।" उन्होंने कहा, "मैं बॉटल खोलूँगा और गिलासें ले आऊँगा।

वह किचन में गए, जबकि मैं बिजली के हीटर के पास कुछ पत्रिकाओं के पन्ने पलटता रहा। मुझे लगा जैसे अंकल बिल कुछ ज्यादा समय ले रहे हैं। अंतज्ज्ञान भी एक तरह से परिवार की विशेषता होती है यह विचार मुझे एकदम अचानक आया कि हो सकता है अंकल बिल मुझे जहर देने का इरादा कर रहे हों। जबकि वह यहाँ मैंने सोचा, 'लगभग 15 साल के लंबे अंतराल के बाद, ऊपरी तौर पर भावुकता वश आए हैं। अभी-अभी मेरी एक बेस्ट सेलर किताब प्रकाशित हुई है और मैं उनका सबसे नजदीकी रिश्तेदार था। यदि मेरी मृत्यु हो जाती है तो अंकल बिल मेरी संपत्ति पर अपना हक जमा सकते हैं और मेरी रॉयल्टी पर अलगे पाँच-छह साल आराम से रह सकते हैं।

मैं अब सोचने लगा कि चाची मेबल और उनके साथ वास्तव में क्या हुआ होगा! अंकल बिल को भारत आने के लिए एयर टिकट के लिए धन कहाँ से मिला होगा?

इसके पहले कि मैं अपने आपसे और सवाल पूछता, अंकल बिल ट्रे लेकर पुन: प्रकट हो गए। उन्होंने ट्रे को एक छोटे से टेबल पर रख दिया, हम दोनों के बीच गिलास भर दिए गए थे। शेरी चमक रही थी।

मेरे सबसे नजदीक जो गिलास था, उसे मैं घूरकर देखने लगा। यह देखने का प्रयास करने लगा कि कहीं उसमें जो द्रव है वह ज्यादा धुँधला तो नहीं है, बजाय कि दूसरे गिलास के मुझे देखने से उनमें कोई फर्क नजर नहीं आया।

मैंने निश्चय किया, मैं कोई जोखिम नहीं लूँगा। वह एक कश्मीरी अखरोट की लकड़ी की बनी गोल चिकनी ट्रे थी। अवएव मैंने उसको अपनी तर्जनी उँगली से ऐसे घुमा दिया, जिससे कि गिलासों की जगहें बदल गईं।

"तुमने ऐसा क्यों किया?" अंकल बिल ने पूछा।

"इस जगह में कुछ ऐसा ही रिवाज है।" आप सूरज के साथ ट्रे को भी पूरी तरह घुमा देते हैं, पूरा एक चक्कर यह भाग्यशाली होता है।

अंकल बिल कुछ देर तक सोचते रहे, फिर बोले, "वेल, फिर हम अपनी किस्मत को और ज्यादा बढ़ाते हैं। फिर उन्होंने ट्रे को एक बार पूरा घुमा दिया।" "अरे, अब तो आपने गड़बड़ कर दिया।" यह तो बैड-लक (बद-किस्मती) हो गई। अब इस 'बैड-लक को रदद करने के लिए इसे एक बार और घुमाना पड़ेगा।

ट्रे को एक बार फिर घुमाया गया और अंकल बिल के सामने अब वह गिलास था, जो उन्होंने मेरे लिए बनाया था।

"चियर्स। मैंने कहा और अपने गिलास से घूँट लिया।"

यह अच्छी शेरी थी।

अंकल बिल थोड़ा हिचकिचाए, फिर अपने कंधे उचकाए, 'चियर्स कहा और जल्दी से अपना गिलास खाली कर दिया।

दूसरे दिन सुबह-ही-सुबह वह बहुत ज्यादा बीमार हो गए। मैंने सुना कि उन्हें उलटी आ रही है। मैं उठकर उनके कमरे में देखने गया कि मैं उनके लिए क्या कर सकता हूँ। वह कराह रहे थे। उनका सिर चारपाई के एक ओर लटका हुआ था। मैं एक तसला और एक जग में पानी ले आया।

"क्या मैं डॉक्टर को बुला लाऊँ?" मैंने उनसे पूछा।

उन्होंने अपना सिर हिलाया, बोले, "मैं ठीक हो जाऊँगा। रात में कुछ गड़बड़ खा लिया होगा।"

"हो सकता है, यह पानी की गड़बड़ी हो। साल के इस मौसम में पानी ज्यादा अच्छा नहीं होता है। बहुत से लोग फास्टरगंज में इस समय पेट की (गैस्ट्रिक) गड़बड़ी से पीड़ित हो जाते हैं।"

"ओह, यही बात होगी। उन्होंने कहा और फिर से और दर्द के मारे अपना पेट पकड़कर बैठ गए।"

शाम तक वह बेहतर हो गए थे। जो कुछ भी उन्होंने गिलास में डाला था वह बहुत मामूली छोटी सी मात्रा में शुरुआती खुराक रही होगी। दूसरे दिन वह काफी ठीक थे और अपने सूटकेस पैक कर के वापस जाने की तैयारी कर ली। उन्होंने बताया कि फास्टरगंज की जलवायु उनको रास नहीं आई।

उनके जाने से कुछ पहले मैंने उनसे पूछा, "अंकल, आपने उसे पी क्यों लिया?"

"क्या पी लिया, पानी?"

"नहीं, शेरी का गिलास, जिसमें आपने अपना प्रसिद्ध पाउडर डाला था?"

उन्होंने मेरी ओर मुँह फाड़कर देखा और कुछ झींककर हँसते हुए बोले, "अब फिर तुम मुझसे मजाक कर रहे हो, है न?"

"नहीं, मैं सही कह रहा हूँ। मैंने कहा, "आपने उस चीज को क्यों पिया? वह गिलास तो मेरे लिये था, है न?"

उन्होंने अपने जूते की ओर देखा, थोड़े से कंधे उचकाए और मुड़ गए। "उन परिस्थितियों में, उन्होंने कहा, "वही सही और उचित काम था। मैं अंकल बिल के लिए यही कहूँगा, वह हमेशा एक परफेक्ट जेंटलमैन थे।"

# अमराई में फाँसी

"दो बंदी पुलिसमैन इंस्पेक्टर हुकम सिंह और सब-इंस्पेक्टर गुलेर सिंह को वे बड़ी बेरहमी से निर्जन धूल भरी और धूप से तपती सड़क पर धकियाते हुए लिये जा रहे थे। गाँववासी इधर-उधर छुप गए थे। वे तभी निकलेंगे, जब डाकू वहाँ से चले जाएँगे।"

दस्यु सरगना मंगल सिंह बुंदेला, पिंडारी पर पहुँच चुके एक साहसी व्यक्ति का परपोता था जो वह ब्रिटिश शासन के लिए एक काँटा था। पर मंगल सिंह के स्थानीय शासन के लिए, काँटा बना हुआ था। लोकल पुलिस को मजबूत बना दिया गया था, पर वह अभी भी डाकुओं से निपट पाने के लिए, जो वहाँ की घाटियों को किसी सर्वेयर से भी अच्छी तरह जानते थे, अप्पर्याप्त था। डाकू मंगल सिंह ने फिरौती द्वारा काफी धन इकटठा कर लिया था; धनी उद्योगपतियों, महाजनों और जमींदारों आदि के लड़के उसके शिकार होते थे। आज उसने दो पुलिसकर्मियों को पकड़ लिया था, जिनको फिरौती के लिए तो कोई मूल्य नहीं था। पर उसके लिए प्रतिष्ठित कैदी थे, क्योंकि उनका वह और तरीके इस्तेमाल कर सकता था। मंगल सिंह पुलिस के सामने अपना रौब दिखाना चाहता था।

वह उनमें से एक को मार देगा... वह उसकी प्रतिष्ठा का सवाल था। दूसरे को वह छोड़ देगा जिससे उसकी दंत-कथा की तरह फैली शक्ति और बर्बरता को सबसे अधिक प्रचार मिल सके। एक अनुश्रुति या दंत-कथा उन्नति में हमेशा सहायक होती है।

उसकी लाल-हरी पगड़ी गर्व के साथ एक तरफ को बाँधी हुई थी। उसकी धोती नीचे घुटनों तक आ रही थी। उसकी जूतियों में सोने-चाँदी की कढ़ाई की हुई थी। उसका हथियार कोई प्राचीन तीर-कमान न होकर एक आधुनिक 303 राइफल थी, जिसमें अच्छी तरह ग्रीस लगी हुई थी। उसके दो आदमियों के पास भी इसी प्रकार की राइफलें थीं, कुछ के पास रिवॉल्वर थे। जो छोटे-मोटे टाइप लोग थे, उन्हीं के पास देशी पिस्तौलें थीं या तलवारें थीं। मंगल सिंह के आदमी हथियारों के बारे में अप-टू डेट थे।

अब उनके पास पुलिसवालों की बंदूकें भी थीं।

"आ जाइए इंस्पेक्टर साहब। मंगल सिंह ने पुलिसवालों को बर्बरता भरी टोन में कहा, उस रस्सी को खींचते हुए, जो उनकी कमर में बाँधी हुई थी। "यदि आपने आज मुझे पकड़ लिया होता तो आप हीरो होते। आपको सारा श्रेय मिलता, हालाँकि आप अपने आदमियों के साथ खाइयों में नहीं रह सके। यह बहुत खराब बात है कि आप सब-इंस्पेक्टर के साथ जीप में बैठे रहे। जीप तो हम लोगों के काम आएगी, पर आप हमारे किसी काम के नहीं। मैं चाहता हूँ कि आप हीरो बनें, और एक शहीद से बेहतर कुछ हो नहीं सकता।"

मंगल सिंह के चेले-चपाटे हँस-हँसकर दोहरे हो गए। वे अपने लीडर के क्रूर मजाक को

पसंद करते थे।

"और जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, गुलेर सिंह," उसने कहना जारी रखा, "तुमको हमारे साथ बहुत पहले आ जाना चाहिए था। पर तुम्हारा विश्वास कभी किया नहीं जा सकता था। तुमने सोचा, पुलिस में ज्यादा कमाई होगी, है न?"

गुलेर सिंह ने कुछ नहीं कहा, बस अपना सिर झुका लिया और सोचने लगा मेरा क्या होगा? गुलेर सिंह को पता था कि मंगल सिंह अपने कैदियों को सजा देने के लिए कोई बहुत क्रूर तथा पैशाचिक तरीका ढूँढ़ निकालेगा। गुलेर सिंह को उम्मीद थी कि शायद कांस्टेबल घनश्याम, जो उस वक्त लघुशंका के लिए झाड़ियों में गया था। डाकुओं द्वारा नहीं पकड़ा जा सका था, शायद उनकी कोई मदद कर सके।

पुलिसमैनों को आगे ढकेलते हुए बोला, "आम की बगीची की ओर।"

"मेरी बात सुनो मंगल।" इंस्पेक्टर बोला, जिसे पसीना आ रहा था और जो इस मुसीबत से निकलने के लिए कुछ भी करने को तैयार था। "मुझे छोड़ दो। जब तक मैं इस क्षेत्र में पोस्टेड रहूँगा, तुम्हारे लिए कोई परेशानी नहीं होगी। इससे अच्छी और सहूलियतवाली बात क्या हो सकती है?

"कुछ नहीं।" मंगल सिंह ने कहा, "तुम्हारे शब्दों के कोई मायने नहीं,"

मेरी बात अलग है। मैंने अपने आदमियों से कहा है कि मैं आम की बगीची में फाँसी दे दूँगा। मैं अपनी बात रखूँगा, पर मैं सही तरीके से खेलने में विश्वास करता हूँ—हम एक छोटा सा खेल खेलेंगे। तुम अब भी आजाद जा सकते हो, यदि सब-इंस्पेक्टर गुलेर सिंह बुद्धिममत्ता से काम लें।

इंस्पेक्टर और उसके मातहत ने अचरज से अपनी निगाहें मिलाई। आम की बगीची में पहुँचने के बाद डाकू एक मजबूत सन की रस्सी ले आए जिसके एक सिरे पर फंदा बना हुआ था। अपने मध्यम से नौकरी के दौरान इंस्पेक्टर को कई बार गेंदे के फूल की माला मिली थी। यह पहली बार था जब उसे एक फाँसी के फंदे की माला पहनाई जा रही थी। उसने कई बार लोगों को फाँसी के ऊपर लटकाए जाते देखा था। और उसे एक प्रकार की खुशी होती थी, पर स्वयं को ही फाँसी पर लटकाए जाने की बात उसको पता भी नहीं थी। इंस्पेक्टर ने उससे दया की भीख माँगी। इस दशा में दया कौन नहीं माँगेगा?

"खामोश रहो," मंगल सिंह ने आदेश दिया, "मैं तुम्हारे बीवी-बच्चों के बारे में नहीं जानना चाहता कि वे भूखे मर जाएँगे। तुमने पिछले साल मेरे बेटे को गोली मार दी थी।

"मैंने नहीं मारा था।" इंस्पेक्टर चिल्लाकर बोला, "वह कोई और था।" "तुमने ही उस पार्टी का नेतृत्व किया था।" अब बस तुम्हें यह बताने के लिए कि मैं एक 'सपोर्टिंग आदमी हूँ। मैं तुम्हें इस पेड़ से लटका दूँगा। फिर मैं गुलेर सिंह को एक राइफल से 6 गोलियाँ दागने को कहूँगा और अगर वह तुम्हारे मरने से पहले अपनी गोलियों से रस्सी को काट देगा तो तुम जिंदा बच जाओगे और जा सकते हो। तुम्हारे खातिर गुलेर सिंह को बहुत तेजी से

फायर करना पड़ेगा और मुझे उम्मीद है कि वह अच्छा निशानेबाज है। मेरा आदमी जिसने यह फाँसी का फंदा बनाया है, वह सिटी जेल में पहले जल्लाद था। उसका कहना है कि तुम उसकी रस्सी से लटकने के बाद 12 सेकेंड से अधिक जीवित नहीं रह सकते।

गुलेर सिंह 40 गज दूर एक स्थान पर ले जाया गया और उसके हाथ में एक राइफल थमा दी गई। दो डाकू आम के पेड़ की शाखाओं पर चढ़ गए। इंस्पेक्टर के हाथ पीछे बाँध दिए गए थे और वह उन लोगों को भय से देख रहा था। उसका मुँह खुला और बंद हो गया, जैसे उसको अभी भी और हवा की जरूरत हो। और फिर एकदम से रस्सी तन गई और इंस्पेक्टर ऊपर चला गया। गला फँदे में फँस गया था, जबकि पेड़ की शाखा हिली और उसके आम नीचे फर-फर करके गिर गए। इंस्पेक्टर जमीन से तीन फीट ऊपर रस्सी से लटक रहा था।

"तुम शूट कर सकते हो। मंगल सिंह ने सिर हिलाते हुए सब-इंस्पेक्टर से चीखकर कहा।"

गुलेर सिंह ने काँपते हाथों से रायफल उठाई और जल्दी-जल्दी फायर कर दिया। रस्सी तेजी से हिल रही थी और इंस्पेक्टर का शरीर भी ऐसे हिल रहा था जैसे कोई मछली काँटे में फँसी हुई तड़प रही हो। सारी गोलियाँ रस्सी के आजू-बाजू से निकल गईं।

गुलेर सिंह ने पाया कि मैगजीन खाली थी। उसने गोलियाँ फिर भरीं, माथे और आँखों से पसीना पोंछा फिर से राइफल उठाई और ज्यादा सावधानी से निशाना साधा। अब उसके हाथ थोड़े स्थिर हो गए थे। उसने अपना निशाना रस्सी के ऊपरी हिस्से पर साधा जहाँ दोलन कम था। आमतौर पर वह एक अच्छा निशानेबाज था। इस तरह की परिस्थितियों में उसको कभी अपना हुनर दिखाने का मौका नहीं मिला था।

इंस्पेक्टर अभी भी मौत के फंदे से झूल रहा था। अभी भी उसमें थोड़ी जान बची थी। उसका चेहरा नीला पड़ गया था। उन मृत्यु के क्षणों में जब उसका गला घुट रहा था, दुनिया की हर चीज उलटी-पुलटी नजर आ रही थी। छतें नीचे को आ रहीं थी और लाल सूरज नाचता हुआ उसकी तरफ आ रहा था।

गुलेर सिंह की राइफल फिर से धाँय-धाँय कर उठी। इस बार भी गोली निशाने (रस्सी) से एक-दो इंच दूर से निकल गई। पर पाँचवी शॉट रस्सी से छूता हुआ निकला और उसके कुछ रेशे हवा में लहराते हुए गिरे।

शॉट रस्सी को अलग तोड़ नहीं पाया था, बस उसको छूते हुए निकल गया था।

गुलेर सिंह के पास अभी भी एक शॉट बचा था। वह बिलकुल शांत था। राइफल की साइट रस्सी के दोलन को देख रहा था। उसके साथ ही वह बंदूक दाएँ-बाँए घुमा रहा था। अब रस्सी भी कम हिल रही थी, क्योंकि इंस्पेक्टर का तड़पना भी लगभग खतम हो गया। गुलेर सिंह को विश्वास हो गया था। इस बार वह रस्सी को अपने शॉट द्वारा तोड़ सकता था।

और तब जब वह ट्रिगर (घोड़े) पर हाथ रख रहा था, उसके मन में एक अजीब बाधा

पहुँचानेवाला विचार आया। वहीं पर बना रहा धक-धक करता, "तुम किसका जीवन बचाने की कोशिश कर रहे हो? एक बार से ज्यादा समय वह तुम्हारे प्रमोशन के रास्ते में आया था। एक बिना लाइसेंस के रिक्शा चलाने के एवज में 50 रुपए (घूस) लेने के अपराध में उसने तुम्हें चार्ज-शीट करवा दिया था। तुमसे हर तरह के गंदे काम करवाता है और जब कुछ गड़बड़ हो जाती है तो सारा दोष तुझ पर डाल देता था और जब कोई काम सही हो जाता था तो उसका श्रेय स्वयं ले लेता था। उसके कारण ही तुम अभी तक इंस्पेक्टर नहीं बन पाए।"

रस्सी झूलकर थोड़ी बाईं ओर आई। राइफल बहुत ही जरा सा दाईं ओर को हुई। आखिरी शॉट फायर की गई गोली आम के पेड़ के चाँदी के रंग के छाल को खुरचती हुई निकल गई।

जब रस्सी को काटकर इंस्पेक्टर को नीचे उतारा गया तो वह मृत था।

"बुरी किस्मत!" मंगल सिंह बुंदेला ने कहा, "तुमने तो उसे लगभग बचा ही दिया था। अगली बार गुलेर सिंह तुम पकड़े गए तो फिर आम के पेड़ से लटकने की तुम्हारी बारी होगी। तो फिर मुझसे दूर ही रहना। तुम्हें पता है मैं अपनी बात का पक्का हूँ। मैं तुम्हें छोड़कर अपना वचन निभा रहा हूँ।"

कुछ मिनटों के बाद डाकुओं का गिरोह दोपहर बाद छाया की तरह जंगलों में गायब हो गया। एक जीप के स्टार्ट होने की आवाज आई, फिर सन्नाटा— इतनी गहरी शांति कि गुलेर सिंह के कानों में चिल्लाहट की तरह सुनाई पड़ रही थी।

जैसे-जैसे गाँवों के लोग धीरे-धीरे अपने घरों से बाहर निकले, उसी समय न जाने कहाँ से सिपाही घनश्याम भी प्रकट हुआ गालियाँ देते हुए कि वह जंगलों में रास्ता भटक गया था। बहुत से लोगों ने अपनी खिड़कियों से यह घटना देखी थी वे सब इस बात पर एकमत थे और तारीफ की कि गुलेर सिंह ने अपने से वरिष्ठ इंस्पेक्टर की जान बचाने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। उसने भरसक कोशिश की थी।

'यह सच है, गुलेर सिंह ने सोचा, 'मैं अपनी पूरी चेष्टा के साथ आखिरी शॉट के पहले हिचकिचाहट भरे क्षणों में वह सवाल जो मेरे मस्तिष्क के अँधेरे में अचानक आया था, अब तक वह निकल गया है। हम केवल वही याद रखते हैं, जो हम याद रखना चाहते हैं।

"मैंने अपनी पूरी कोशिश की।" उसने सबसे कहा।

और उसने ऐसा ही किया था।

# बिल्ली की आँखें

"और उसकी आँखों पर जब सूरज की रोशनी पड़ती थी, तो ऐसा लगता था जैसे वह सोने का एक चकता हो। जिस वक्त सूरज पहाड़ों के पीछे आसमान में एक लाल घाव करता छुप रहा था तो किरन की आँखों में सोने से ज्यादा बहुत कुछ था। उनमें गुस्सा था, क्योंकि वह अपनी टीचर की डाँट द्वारा बहुत आहत हुई थी। यह कई हफ्तों के अपमान और तानों की पराकाष्ठा थी।"

किरन अपनी कक्षा के कई बच्चों से बहुत गरीब थी और वह अन्य बच्चों की तरह टयूशन पर नहीं जा सकती थी, जो आजकल परीक्षा पास करने के लिए जरूरी हो गया है।

"तुम्हें नौवीं क्लास में एक साल और रहना पड़ेगा।" मैडम ने कहा था। "अगर तुम्हें यह पसंद नहीं तो तुम कोई दूसरा स्कूल ढूँढ़ सकती हो, ऐसा स्कूल जहाँ इस बात की कोई परवाह नहीं कि तुम्हारा ब्लाउज फटा हुआ है और तुम्हारी ड्रेस पुरानी है या जूता फटा हुआ है। मैडम ने अपने बड़े-बड़े दाँतों के साथ खीस निपोरी, जो कि उनके अच्छे स्वभाव की मुसकराहट मानते थे। क्लास की सारी लड़कियाँ ही-ही करके दबे स्वर में हँस पड़ी। मैडम की चापलूसी करना मैडम के प्राइवेट स्कूल के पाठयक्रम का एक हिस्सा बन गई थी।"

घर के रास्ते में उसके मन में जो दु:ख उमड़-घुमड़कर आ रहा था, उस समय उससे सहानुभूति रखने वाली दो सहेलियाँ उसके साथ हो लीं।

"वह बूढ़ी बड़ी कमीनी औरत है।" आरती ने कहा, "उसे अपने सिवा किसी और की परवाह नहीं है।"

"वह जब हँसती है, तो ऐसा लगता है जैसे गधा ढेंचू-ढेंचू कर रहा हो। सुनीता ने कहा, जो बहुत मुँहफट थी।

वास्तव में किरन कुछ सुन नहीं रही थी। उसकी आँखें दूर किसी बिंदु पर केंद्रित थी, जहाँ पर हर क्षण बढ़ती हुई चाँदनी में आकाश के विपरीत खड़े चीड़ के पेड़ों की पार्श्व-छाया दिख रही थी।

चाँद ऊपर चढ़ रहा था; एक पूरा चाँद एक ऐसा चंद्रमा, जो किरन के लिए एक विशेष अर्थ रखता था। जिसने उसके शरीर में झुनझुनी सी करके त्वचा पर खुजली पैदा कर दी। उसके बाल चमकने लगे और उसमें से चिंगरियाँ निकलने लगी। उसके कदम हलके पड़ने लगे, उसके पैर ज्यादा लचीले तथा ज्यादा शालीनता से पहाड़ी रास्ते पर बहुत हलके चाप से चल रही थीं।

जहाँ पर रास्ता दो फाँकों में बँट जाता था, वहाँ पर उसने अपनी सहेलियों का साथ अचानक छोड़कर जंगल वाले रास्ते पर चल पड़ी।

"मैं जंगल वाले रास्ते से शॉर्ट-कट ले रही हूँ।" उसने कहा, "उसकी सहेलियाँ उसके इस प्रकार के सनकीपन के व्यवहार से परिचित थीं। उनको पता था कि वह अँधेरे में अकेले जाने से डरती नहीं थी। किरन के इस प्रकार के मूड से वे एकदम से नर्वस हो गईं। अब वे एक-दूसरे का हाथ पकड़े खुली सड़क पर तेजी से अपने घर की ओर चलने लगीं।"

किरन को शॉर्ट-कट के लिए ओक के घने जंगलों से गुजरना पड़ा। ओक की टेढ़ी-मेढ़ी शाखाओं की छाया पथ पर पड़ रही थी। एक सियार चाँद को देखकर हू-हू कर रहा था; एक छपका भी चीख रहा था। उसकी साँस छोटी और हाँफ-हाँफकर आ रही थी। जब वह गाँव के एक छोर पर बने अपने घर पर पहुँची तो तेज चाँदनी की रोशनी में पूरी पहाड़ी नहा रही थी।

खाने के लिए मना करके वह सीधे अपने छोटे से कमरे में चली गई और खिड़की खोल दी। चाँद की किरणें खिड़की में से होकर उसकी बाँहों पर पड़ रही थी, जिससे उसके बाल सुनहरे हो गए थे। सारी बाँह सुनहरी बालों से ढक गई थी।

पूँछ सरसराते हुए कान छिदे हुए पीला-भूरा तेंदुआ फुरती से खिड़की से बाहर आया, घर के पीछे खुले मैदान को पार किया, पेड़ की छायाओं में घुल गया।

थोड़ी देर बाद वह खामोशी से जंगल के अंदर से दबे पाँव चली जा रही थी।

यद्यपि शहर के टीन की छतोंवाले घर पर चंद्रमा की रोशनी चमक रही थी, तथापि तेंदुए को पता था कि छाया ये कहाँ पर गहरी है, सो वह उनके साथ सुंदरता से मिलते हुए चला जा रहा था। कभी-कभी साँस लेते हुए उसे खखारना पड़ता था। वही एक आवाज वहाँ हो रही थी।

मैडम डिनर खाकर रोटीज क्लब से लौट रही थी, जिसका नाम क्टिन क्लब था। जो पतियों के क्लब से सदस्यता के एक तरह के विरोध में बना था। इस वक्त भी सड़क पर कुछ लोग थे, और सभी लोगों ने मैडम, जिनका शरीर स्टीमरोल की तरह था, देखा था। किसी ने भी उस नरभक्षी तेंदुए को नहीं देखा, जो गलियों में से होता हुआ टीचर के घर की सीढ़ियों तक पहुँच गया था। वह वहाँ पर चुपचाप किसी स्कूल की आज्ञाकारी लड़की की तरह धैर्य से बैठ गया।

जब मैडम ने अपने घर की सीढ़ियों पर तेंदुए को देखा तो उसका हैंडबैग नीचे गिर गया और उन्होंने चिल्लाने के लिए मुँह खोला, पर उनकी आवाज ही न निकली। न ही उनकी जुबान अब दुबारा इस्तेमाल हो सकेगी, न चिकना या किरयाली खाने के लिए न ही अपना गुस्सा विद्यार्थियों पर उतारने के लिए;

क्योंकि तेंदुए ने उछलकर उनका गला पकड़ लिया था तथा गरदन मरोड़ दी थी। उसको खींचकर झाड़ियों में ले गया।

दूसरे दिन सुबह हमेशा की तरह आरती और सुनीता स्कूल जाते समय रास्ते में किरन के घर रुकीं और उसे बुलाया।

किरन उस वक्त धूप में बैठी अपने काले लंबे केशों को कंघी कर रही थी। "क्या तुम आज स्कूल नहीं चल रही हो?"

लड़कियों ने पूछा।

"नहीं, आज मैं जाने की परेशानी नहीं उठाऊँगी।" किरन ने कहा। वह आज सुस्ती महसूस कर रही थी, जैसे कोई संतुष्ट बिल्ली हो।

"मैडम इस बात से खुश नहीं होंगी।" आरती ने कहा।

"क्या हम उनसे कह दें, तुम बीमार हो?"

"इसकी कोई जरूरत नहीं पड़ेगी। किरन ने कहा और रहस्यमय तरीके से मुसकराई।"

"मुझे पूरी उम्मीद है कि आज छुटटी हो जाएगी।"

# बिन्या चली गई

"एक दिन जब मैं चीड़ के पेड़ों के बीच बने रास्तों से घर जा रहा था, मैंने एक लड़की को गाना गाते हुए सुना।

पहाड़ों पर गरमी का मौसम था और पेड़ों पर नए पत्ते आ गए थे। पतियों के बीच से अखरोट और चेरी के नए फल निकल रहे थे।

हवा रुकी हुई थी और पेड़ भी खामोश थे। वह गाना मुझे साफ-साफ सुनाई पड़ रहा था। वह शब्द नहीं थे, जिन्हें मैं समझ नहीं पा रहा था—या वे धुन का उतार-चढ़ाव नहीं थे, जिसमें मैं मंत्रमुग्ध था। वह आवाज थी, जो इतनी युवा और मुलायम थी, जिसने मुझे खींचा था।

मैंने वह रास्ता छोड़ दिया और ढलान पर लुढ़कते चीड़ की सुइयों जैसे गिरे डंडियों पर फिसलते हुए नीचे आ गया। जब मैं नीचे पहुँचा तब गाना रुक गया था और वहाँ पर कोई नहीं था, "मुझे पक्की तरह याद है, मैंने किसी को गाते हुए सुना था। मैंने अपने आपसे कहा, 'हो सकता है, मैं गलत होऊँ।"

पहाड़ों पर अकसर ऐसा होता है।

अतएव मैं घर की ओर चल पड़ा और फिर इस बार एक गीत सुना पर इस वक्त वह एक सीटी बजाती हुई गाने वाली चिडिय़ा बक्कार थी। जो एक टूटी-फूटी स्वर में लोडी (मधुर संगीत) गा रही थी। वह जंगल के गहराइयों में छिपे अँधेरे, मीठे रहस्यों के गीत गा रही थी।

मेरे पास खाने के लिए कुछ भी नहीं था। बिजली के बिल का अभी पेमेंट नहीं हुआ था। बैंक में कुछ भी बैलेंस नहीं था। एक अन्य प्रकाशक ने भी मेरा दूसरा उपन्यास अभी-अभी वापस कर दिया था। फिर भी, अभी ग्रीष्म ऋतु थी और आदमी व जानवर सब तंद्रा में थे और उसी तरह से हमारे ऋणदाता भी थे। दूर के पहाड़ चमकते हुए धूल भरे धुँधलेपन बैगनी-से दिख रहे थे।

मैं फिर से चीड़ के पेड़ों के बीच से गुजरा। वह गीत-गाना सुनाई नहीं पड़ा। और फिर एक हफ्ते तक मैं अपने कॉटेज से नहीं निकला, क्योंकि उपन्यास को फिर से ठीक करके लिखना था। मैंने उस पर कड़ी मेहनत की, बस बीच में कुछ खाने के लिए या फिर सोने के लिए थोड़ी देर रुकता था। इस बीच मैंने नोट किया, पेड़ों की पत्तियाँ गहरे हरे रंग की हो गई थीं।

खिड़की जंगल की ओर खुलती थी। ओक, मैपिल और अखरोट के पेड़ खिड़की तक आ रहे

थे और ऊपर पहाड़ पर चीड़ के पेड़ शुरू हो जाते थे तथा उसके ऊपर देवदार की कतारें जैसे कोई फौज खड़ी हो। पहाड़ और ऊपर जा रहे थे और पेड़ छोटे व ठूँठ जैसे होते जा रहे थे, और अंत में वे गायब हो गए तथा उसके बाद काले पहाड़ जहाँ भटकती आत्माएँ घूमती रहती थीं। जो ऊपर की ओर हमेशा पड़ी रहनेवाली बर्फ (हिमालय) से मिलने चले जा रहे थे। वे चोटियाँ आसमान को छू रही थीं, जैसे कि उसका पालना हों। मैं उन चोटियों को अपने कमरे की खिड़की से तो नहीं देख सकता था। जब आसमान साफ होता था तो वे टेहरी रोड के दर्रे से दिखती थीं।

पहाड़ की तलहटी में एक छोटी सी नदी की धारा थी। एक दिन काफी सुबह बड़े-बड़े पत्थरों के ऊपर कदम रखता हुआ मैं लगभग आधा मील नीचे नदी के साथसाथ उतर गया। वहाँ पर मैं एक सपाट पत्थर पर एक जंगली चेरी के पेड़ की छाया में लेटकर आराम करने लगा। वहाँ से मैंने सूरज को परी तिब्बा (फेयरी हिल) के ऊपर से चढ़ते देखा और उसकी किरणें पेड़ की शाखाओं से छनकर आ रही थी, तथा सूर्य दिशा भी बदल रहा था और उसकी रोशनी नीचे घाटी में जा रही थी। हवा थमी हुई थी, पक्षी भी खामोश थे। केवल नदी की कल-कल ध्वनि आ रही थी। जब वह पथरीले रास्तों (तलहटी) से गुजरकर नीचे जा रही थी। मैं वहाँ पर अभी 10 या 15 मिनट ही लेटा था कि मुझे कोई देख रहा था। कोई जो पेड़ों में से और छायाओं में से मुझे देख रहा था। कोई चीज हिली नहीं, न कोई पत्थर खिसका न ही कोई टहनी टूटी, पर मुझे कोई-न-कोई देख रहा था। मैं पूरी तरह से असुरक्षित महसूस कर रहा था। ऐसे किसी खतरे से नहीं, पर किसी अनजानी निगाहों की दृष्टि से, परख से, इसलिए मैंने उस पत्थर को छोड़ दिया और पेड़ों के बीच से रास्ता ढूँढ़कर फिर ऊपर चढने लगा।

इस काम में काफी गरमी लगी। सूरज ऊपर चढ़ आया था और हवा भी नहीं थी। जब तक मैं पहाड़ी के ऊपर पहुँचा, मुझे बुरी तरह से पसीना आ रहा था। मुझे अदृश्य देखनेवाले का कोई अता-पता नहीं था। छोटी-छोटी घासों पर दो दुबलीपतली गायें चर रही थीं; उनके गले में बँधी घंटियों की आवाज के अलावा वहाँ उमस वाली गरमी में और कोई आवाज नहीं थी।

फिर वही गाना! वही गाना, वही गानेवाली। उसको मैंने अपनी खिड़की में से सुना था। जो किताब मैं पढ़ रहा था, उसे एक किनारे रखकर मैं खिड़की में से सर निकालकर झाँका और पेड़ों के अंदर से भी घूर-घूरकर देखने की कोशिश की। पत्तियाँ, झाडियाँ बहुत घनी थीं, और गानेवाली (गायिका) बहुत दूर थी, जिससे मैं पता नहीं कर पा रहा था वह कौन थी? "क्या मैं जाकर उसको ढूँढ़ने की कोशिश करूँ। यह इसी प्रकार से अच्छा है—सुना पर देखा नहीं? क्या यह जरूरी है कि मैं गाने पर मुग्ध होकर गानेवाली से भी प्यार करने लगूँ? अवश्य यह आवाज है, न कि गीत जिसने मेरे दिल को छुआ है। कुछ ही देर में गाना बंद हो गया। मैं खिड़की से हट गया।"

पहाडियों पर एक लड़की बिलबेरीज इकटठाकर रही थी। उसका चेहरा तरो-ताजा था, शहद के रंग की तरह उसके होंठ बेरी के जूस-से बैंगनी हो रहे थे। वह मुझे देखकर मुसकराई।

"क्या ये खाने में अच्छे हैं?" मैंने पूछा।

उसने अपनी मुटठी खोली, अपना हाथ आगे बढ़ाया, जिसमें बेरी भरी हुई थी। कुछ टूटी-फूटी और चोट खाई। मैंने उसमें से एक ली और उसे अपने मुँह में डाल लिया। उसका बड़ा तीखा खटटा स्वाद था, "यह अच्छा है।" मैंने कहा। यह देखकर कि मैं उसकी भाषा में रुक-रुककर बोल रहा हूँ। वह मेरे नजदीक आई और बोली, "तब फिर और लीजिए और मेरे हाथों को बिलबेरीज से भर दिया। उसकी उँगलियाँ मेरी उँगलियों से छुई, बहुत ही अनोखी अनुभूति हुई,

क्योंकि लगभग 9-10 साल हो गए थे। जब से मैंने किसी लड़की का हाथ छुआ था।"

"तुम कहाँ रहती हो?" मैंने पूछा। उसने घाटी की ओर इशारा किया जहाँ टेर्रसड हिल (सीढियों जैसा पहाड़) में ढलान पर एक गाँव बसा हुआ था।

"यह तो काफी दूर है।" मैंने कहा, "क्या तुम रोज घर से इतनी दूर आती हो?

"मैं इससे भी आगे जाती हूँ।" उसने कहा, "गायों को ताजा घास चाहिए।"

लकड़ी भी इकटठी करनी होती है और घास भी काटनी होती है, उसने मुझे हसिया भी दिखाई जो उसने कमर में बँधे कपड़े में खोंस रखी थी। "कभी-कभी मैं परी टिब्बा के ऊपर तक चढ़कर जाती हूँ और कभी-कभी उसके पार घाटियों में। क्या तुम वहाँ गए हो?

"नहीं, पर मैं किसी दिन जाऊँगा।"

"परी टिब्बा पर काफी तेज हवाएँ चलती हैं।"

"क्या यह सच है, वहाँ परियाँ रहती हैं?"

वह हँसी, "ऐसा लोग कहते हैं, वे लोग हैं जो वहाँ कभी गए नहीं। मुझे परी टिब्बा पर परियाँ नहीं दिखीं, ऐसा कहते हैं, कि पहाड़ों पर खँडहरों में भूत रहते हैं। पर मुझे कभी भूत नहीं दिखे।"

"मैंने भूतों के बारे में सुना है।" मैंने कहा, "दो प्रेमी जिन्होंने भागकर एक खँडहर के बड़े घर में शरण ली थी। रात में वहाँ तूफान आया और उन पर बिजली गिर पड़ी। वे मर गए। क्या यह कहानी सच है?"

"यह बहुत साल पहले की घटना है, मेरे जन्म से पहले की।" मैंने यह कहानी सुनी है, पर परी टिब्बा पर कोई भूत नहीं है।

"कितनी बड़ी हो तुम?" मैंने पूछा।

"पंद्रह या सोलह साल, मुझे ठीक से पता नहीं।"

"क्या तुम्हारी माताजी को पता नहीं?"

"उनकी मृत्यु हो गई है। और मेरी दादी माँ भूल गई हैं। मेरा भाई मुझसे छोटा है। उसे अपनी ही उम्र पता नहीं। वह भूल गया है। क्या याद रखना जरूरी है?"

"नहीं, यह इतना जरूरी नहीं है। खैर, यहाँ पर जरूरी नहीं है। पहाड़ों पर जरूरी नहीं है। पहाड़ के लिए तो सौ साल एक दिन के बराबर है।"

"क्या आप बहुत बड़ी उम्र के हैं?"

"मुझे नहीं लगता। क्या मैं बहुत बूढ़ा लगता हूँ?"

"केवल सौ साल के।" उसने कहा और हँसने लगी और उसकी कलाई की चूडियाँ खनकने लगीं, जब उसने अपने हाथ अपने चेहरे पर रखे।

"तुम क्यों हँस रही हो?" मैंने पूछा।

"क्योंकि मुझे लगा कि तुमने मेरी बात पर विश्वास कर लिया है। वैसे आप कितने बड़े हैं?"

"पैंतीस या छत्तीस साल। मुझे याद नहीं।"

"ओह, भूल जाना बेहतर है।"

"यह बात ठीक है। मैंने कहा, "पर कभी-कभी किसी को फॉर्म भरना होता है या इस तरह का कोई काम होता है तो उसमें अपनी उम्र लिखनी पड़ती है।"

"मैंने कभी कोई फॉर्म भरा नहीं। मैंने कभी कोई फॉर्म देखा भी नहीं।"

"और मुझे आशा है, कभी देखोगी भी नहीं। वह एक कागज का टुकड़ा होता है, जिसमें कई बेकार की बातें लिखी होती हैं। यह सब आदमी की उन्नति का एक हिस्सा है।"

"उन्नति?"

"हाँ। क्या तुम नाखुश हो?"

"नहीं।"

"क्या तुम्हें भूख लगती है?"

"नहीं।"

"तब तुम्हें उन्नति की जरूरत नहीं है। तुम्हारे लिए जंगली बिलबेरी ही अच्छी है।"

वह बिना 'नमस्कार किए चली गई। गायें इधर-उधर चली गई थीं और वह उनके पीछे भागी, उनका नाम बुलाते हुए—"नीलू, नीलू। भूरी, भूरी।" वह नंगे पाँवों से पत्थरों और घास पर दौड़ रही थी।

मई की शुरुआत। जंगल में रइया गा रहे थे या यूँ कहा जाए कि ऑर्केस्ट्रा की तरह बजा रहे थे, क्योंकि वे अपने पैरों से आवाज निकालते हैं। सीटी बजाती हुई गाने वाली चिडियाँ एक-दूसरे का वृक्षों के ऊपर पीछा कर रही थी। एक तरह से हवा में प्रेमी-उड़ान कभी-कभी लंगूर भी ओक के पेड़ों पर चले जाते थे। पतियों का भोजन करने। जैसे ही मैं नीचे उतरकर नदी की ओर बढ़ा तो फिर से वही गाने की आवाज आने लगी, और जब मैं अचानक झाड़ियों के बीच साफ जगह पर पहुँचा तो देखा कि वही लड़की पत्थर पर बैठे अपने पैरों को बहते पानी में डाले बैठी थी—वही लड़की जिसने मुझे बिलबेरियाँ दी थीं। अजीब बात है कि मैं अंदाज नहीं लगा पाया कि यह वही लड़की थी जिसने मुझे बिलबेरें दी थीं। मेरी कल्पना में एक जंगलों की मत्स्य- कन्या, एक नाजुक सुंदर और शालीन देवी की तरह की प्राणी, न कि एक नटखट, आँखोंवाली गोल चेहरेवाली, बेरी के जूस के धब्बेवाली हो थोड़ी सी गाँव की अनगढ़ी परी। उसकी खुरदरी हाथ की बनी धोती, जिसका रंग उड़ गया था और फटी हुई थी; एक अव्यावहारिक परिधान मैंने सोचा, खासकर पहाड़ों पर इधर-उधर दौड़ने के लिए। पर गाँव के लोग अपनी लड़कियों को 12 साल की होते-होते धोती पहना ही देते थे। उसने उसके साथ एक प्रक्रम से समझौता कर लिया था। अपने कमर में फेटा बाँधकर और धोती को ऊपर उठाकर बाँधने और चलने से उसके लिए मेरे खयाल से कुरता सलवार की ड्रेस ज्यादा अच्छी रहती, जो आगे पहाड़ों में पहनी जाती थी।

मुझे कोई भ्रम नहीं था। उसके भोले-भाले और खुले व्यवहार ने मुझे आकर्षित कर लिया था और उसकी मधुर आवाज ने उसकी सुंदरता में चार चाँद लगा दिए थे।

मैं नदी के तट से उसको देखता रहा था। अब उसने मुँह उठाकर देखा, थोड़ा सिसियाई और फिर मुझे अपनी जुबान बाहर निकालकर स्वागत किया।

"यह बड़ा अच्छा तरीका है मेरा स्वागत करने का।" मैंने कहा।

"क्या मैंने तुम्हें नाराज कर दिया?"

"तुमने मुझे चौंका दिया। आपने मुझे बुलाया क्यों नहीं?"

"क्योंकि मैं तुम्हारा गाना सुन रहा था। मैं तुमसे तब तक नहीं बोलना चाहता था, जब तक कि तुम्हारा गाना खत्म न हो जाए।"

"वह केवल एक गाना था।"

"तुम बहुत मीठा गा रही थीं।"

वह मुसकराई, "क्या तुम कुछ खाने के लिए लाए हो?"

"नहीं। क्या तुम्हें भूख लगी है?"

"इस समय मुझे भूख लग जाती है। जब तुम मुझसे मिलने आओ तो कुछ खाने को ले आया करो।"

"मैं तुमसे मिलने नहीं आया था, मुझे पता नहीं था कि तुम यहाँ होगी।"

"आप मुझसे मिलना नहीं चाहते हैं?"

"मेरे कहने का मतलब यह नहीं था। तुमसे मिलकर अच्छा लगा।"

"यदि आप जंगल में आते रहेंगे तो मुझसे मिलते रहेंगे, इसलिए हमेशा कुछ-न-कुछ खाने के लिए ले आया करें।"

"अगली बार मैं ऐसा ही करूँगा। क्या मैं तुम्हारे लिए कुछ बेरें तोड़ूँ?"

"आपको किंगोरा झाड़ियों के लिए फिर से पहाड़ पर जाना पड़ेगा।"

"मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। अगर तुम भूखी हो तो मैं कुछ बेरें ले आता हूँ।"

"ठीक है।" उसने कहा और फिर से अपने पैरों की ओर देखने लगी, जो अभी भी पानी में थे। मैं एक शूरवीर की तरह मेहनत करके पहाड़ पर चढ़ गया और बिलबेरी झाड़ियों में से बेरें तोड़कर जेबों में भरकर लौटा तो वह वहाँ से जा चुकी थी। दूर पहाड़ों पर गाय की घंटियों की आवाज (टन-टन) आ रही थी।

अँधेरे में जुगनू जब-तब चमक रहे थे। रात तरह-तरह की आवाजों से भरी हुई थी। एक छपका कहीं टोंक-टोंक कर रहा था। साही की सरसराहट की आवाज हिरन के चिल्लाने की आवाज और खिड़की से आकर टकराते हुए कीड़ों की थप-थप की हलकी आवाज घाटी के उस पार पहाड़ों में दिए टिमटिमा रहे थे—कैरोसीन लालटेन जो अँधेरे में झूल रहे थे।

"तुम्हारा नाम क्या है?" मैंने उससे पूछा, जब हम अगली बार चीड़ के जंगलों के रास्ते में मिले।

"बिन्या," उसने कहा, "और तुम्हारा क्या नाम है?

"मेरा कोई नाम नहीं है।"

"ठीक है, श्रीमान अनाम।"

"मेरे कहने का मतलब है, मैंने अपने लिए नाम नहीं अर्जित किया है। हमें अपना-अपना नाम कमाना चाहिए, तुम्हारा क्या खयाल है?"

"बिन्या मेरा नाम है, मुझे और कोई नाम नहीं चाहिए। तुम कहाँ जा रहे हो?" "कहीं नहीं।"

"अनाम (आदमी) कहीं नहीं जा रहा है। तब तुम मेरे साथ नहीं जा सकते, क्योंकि मैं घर जा रही हूँ और मेरी दादी माँ ने तुम्हें देख लिया तो फिर तुम्हारे पीछे गाँव के कुत्ते दौड़ा देंगी। और नहीं के साथ-साथ नीचे जाते हुए रास्ते पर वह दौड़ गई। उसको पता था मैं उसे पकड़ नहीं सकता था।"

सफेद गाय को पुकारते हुए जैसे वह खड़ी चढ़ाई पर से पहाड़ पर चढ़ रही थी, उसके चेहरे पर ग्रीष्म की बरसात का पानी धारा बनकर टपक रहा था। हवा से बुहारी हुई पहाड़ी पर वह बहुत छोटी सी दिख रही थी। उसके बालों की एक लट उसके माथे पर पड़ी हुई थी। उसकी फटी नीली धोती उसकी मजबूत जाँघों से चिपक रही थी। मैं उसको बारिश से बचाने के लिए छाता लेकर गया। वह मेरे साथ मेरे छाते के नीचे खड़ी हो गई और उसने मुझे अपनी कमर में हाथ डालने दिया। फिर उसने कुछ सोचते हुए अपना मुँह मेरी ओर किया और मैंने जल्दी से उसके होंठों पर हलके से चुंबन कर लिया। उसके होंठों से बारिश की बूँदों और पुदीने की खुशबू आ रही थी। और फिर वह मुझे उसी बारिश में भीगते हुए छोड़कर भाग गई। वह घर हँसते हुए वापस चली गई। मुझे भीगना अच्छा लगा।

एक अन्य दिन मैंने उसे मुझे पुकारते सुना, "अ-नाम, मिस्टर अनाम। पर मैं उसको देख न सका और उसको कुछ देर ही बाद ढूँढ़ पाया। मैंने उसको पहाड़ी पर आधी दूर पर चेरी के पेड़ पर चढ़े हुए पाया। उसके पैर तने को मजबूती से पकड़े हुए थे। उसने धोती दोनों जाँघों के बीच बाँध रखी थी—धवल, गोल-गोल जाँघें और पाँव बहुत तगड़े व हट्टे-कटटे।"

"चेरी अभी पकी नहीं है। मैंने कहा।"

"वे कभी नहीं पकतीं। मुझे वे हरी (कच्ची) और खटटी पसंद हैं। क्या आप पेड़ पर चढ़कर आ जाएँगे?"

"यदि मैं अभी भी पेड़ पर चढ़ सकता।" मैंने कहा।

"मेरी दादी साठ साल से ऊपर हैं और अभी भी पेड़ पर चढ़ सकती हैं।"

"अच्छा," मैं भी साठ की उम्र पर शायद इतना साहसी हो सकूँ, क्योंकि उस वक्त ज्यादा कुछ खोने का डर नहीं रहता। मैं पेड़ पर बिना ज्यादा दिक्कत के चढ़ गया, जहाँ पर से ऊपर दो शाखाएँ फटती थीं। वहीं पर रुक गया, क्योंकि मुझे डर था कि कहीं मेरे भार से शाखा टूट न जाए। तो फिर मैं वहीं खड़ा रहा, जहाँ से पेड़ दो फाँक हो रहा था, मेरा चेहरा बिन्या के वक्षस्थल तक पहुँच रहा था। मैंने उसकी कमर में हाथ डाला और उसकी कोमल बाँहों पर चूम लिया। उसने कुछ नहीं कहा।

उसने मेरा हाथ पकड़कर मुझे और ऊपर चढने में मदद की और मैंने अपना हाथ उसकी गरदन में डाल दिया। अपने को गिरने से बचाने के लिए और उसके नजदीक रहने के लिए भी।

पूर्ण चंद्रमा ऊपर उठ आया है। लंबे ओक के पेड़ों के बीच से मेरी खिड़की से चमकता हुआ दिख रहा था। रात तरह-तरह की आवाजों से भरी है। झींगुरों की, छपका की टोंक-टोंक से और तुम्हारे गाँव से होकर घाटी में आ रही है। लोगों के गाने और ढोल बजने की आवाज भी आ रही है। आज कोई त्योहार है और तुम्हारे घर में भी पकवान बनेंगे, दावत होगी। क्या आज रात को भी तुम गाना गा रही हो?

क्या तुम जब गा रही हो, नाच रही हो, अपने दोस्तों के साथ और हँस रही हो, उस वक्त मेरे बारे में भी सोच रही हो। मैं यहाँ पर अकेला बैठा हूँ, अतएव मेरे पास तुम्हारे बारे में सोचने के अलावा और कोई काम नहीं है।

बिन्या...मैं तुम्हारा नाम बार-बार ले रहा हूँ—जैसे कि नाम लेने में मैं अपनी आवाज तुम तक पहुँचा सकता हूँ। मेरे पास चाँदनी रात से आलोकित पहाड़ पर चलकर...।

आज रात आत्माएँ बाहर चारों ओर निकली हुई हैं। वे चुपचाप पेड़ों पर चल रही हैं। वे उस खिड़की के पास मँडरा रही है, जहाँ मैं बैठा हूँ; वे हवा के साथ घर के चारों ओर दौड़ रही हैं। पेड़ों की आत्माएँ पुराने घर की आत्माएँ। एक वृद्ध महिला पिछले साल यहाँ मर गई थी। वह इस घर में तीस साल तक रही थी। उसके व्यक्तित्व का कुछ हिस्सा अभी भी यहाँ अवश्य ही रहता है। जब मैं पुराने लंबे दर्पण में देखता हूँ, तो कभी मुझे उसके पीले चेहरे और लंबे सुनहरे बालों की एक झलक दिखती है। मेरे खयाल से वह मुझे पसंद करती थी। यह घर मेरे ऊपर कृपालु है। क्या वह तुमसे ईष्र्या करेगी, बिन्या?

नाच-गाने की आवाज तेज होती जा रही है। मैं कल्पना कर सकता हूँ कि तुम्हारा चेहरा आग की रोशनी में चमक रहा है। तुम्हारी आँखें भी हँसी से चमक रही हैं। तुम्हारे पास तमाम लोग हैं। मेरे पास तारे, छपका और शीशे में भूत है।

मैं दूसरे दिन सुबह जल्दी उठ गया, जबकि अभी भी घास पर ताजा ओस थी, और पहाड़ से नीचे उतरकर नदी पर पहुँच और फिर एक टीले पर जहाँ पर एक चीड़ का पेड़ अकेला ही शानदार तरीके से खड़ा था, उसकी पतली शाखाओं में से हवा हू-हू करके गुजर रही थी। यह मेरी प्रिय जगह थी, मेरी शक्ति की जगह, जहाँ मैं अपने आपको तरोताजा करने के लिए समय-समय पर आता था। मैं घास पर लेट गया, सपने देखने लगा। मेरे ऊपर नीला आसमान था। एक गरुड़ दूर आसमान में ऊँचे उड़ रहा था। मैंने उसकी आवाज दूर पेड़ों के बीच से सुनी या ऐसा सोचा कि मैंने उसकी आवाज सुनी, पर जब मैं वहाँ उसे देखने के लिए गया, मैं उसको कहीं ढूँढ़ नहीं पाया।

मुझे अपनी बुद्धिमत्ता और विवेक पर घमंड था। मैंने अपने आपको सिखाया था कि मुझे भावुक स्थितियों 'जैसे प्यार में पड़ जाना जो कि बहुत भ्रामक तथा क्षण भंगुर होती है, उनसे बचना चाहिए। यद्यपि मैंने स्वयं को बार-बार बताया था कि आकर्षण केवल शारीरिक होता है, मेरे लिए भी और उसके लिए भी। मुझे यह मानना पड़ेगा कि बिन्या के प्रति मेरी भावनाएँ अन्य लोगों की भावनाओं से कुछ अलग थी;

जबकि सेक्स मेरे लिए आनंद-उत्सव होता था, पर इससे अन्य दावतों की तरह बहुत शीघ्र परितृप्ति हो जाती थी। अब एक परिवर्तन की इच्छा भूलने की ख्वाहिश...। बिन्या एक दूसरी चीज को चित्रित करती थी, स्वामिल परी की तरह वह उन पहाडियों से होकर गुजरती थी, जहाँ आत्माएँ भटकती रहती थीं, पुराने वृक्ष ताजा घास उन सबसे उसने कुछ-कुछ ग्रहण कर लिया था—एक आदि गुण सरलता था। सीधापन, समय गुजरने और घटनाओं के बीतने से कोई सरोकार नहीं, जंगलों और पहाड़ों से एक प्रकार की निकटता। इन सबसे वह बहुत विशेष तथा जादुई या सम्मोंहक बन गई थी।

तब जब तीन-चार-पाँच दिन हो गए और वह मुझे नहीं मिली तो मुझे निराश प्रेमियों की तरह पीड़ा सताने लगी। क्या वह मुझे भूल गई थी या कहीं और उसे घर पर ही बंद कर के रखा हुआ था? क्या वह बीमार थी? या वह आत्मा की तरह हवा में विलीन हो गई थी?

मैं उसके बारे में गाँव में जाकर पूछ भी नहीं सकता था। मैं गाँव से भगा दिया जाऊँगा। उसका गाँव सामने पहाडियों में फैला हुआ था। स्लेट की छतवाली घरों का एक झुंड छोटे-छोटे, सीढियों की तरह के खेत। दूर मैदानों में खेतों में कुछ आकृतियाँ देख पा रहा था। वे बहुत ज्यादा दूर थीं, बहुत छोटी थीं। अतएव उसमें से किसी को पहचान पाना असंभव था। एक छोटे से लड़के ने बताया कि वह अपनी माँ के घर, जो वहाँ से 100 मील दूर है, चली गई है।

तब मैं चिंता में डूब गया। ओक के जंगलों में उदास-निराश घूमता बिना चिडियों की आवाज सुने-मीठे गलेवाली सीटी बजाती थ्रश चिडिया या चीखती आवाज निकालती बारबेट (बसंता) या मधुर आवाज वाली फाक्ता प्रसन्नता हमेशा मुझे प्रकृति के प्रति संवेदी बना देती थी। बहुत दु:खी होकर मेरे विचार अंतर्मुखी हो गए। मैं समय और परिस्थितियों के बारे में विचारमग्न हो गया। मैं अनुभव कर रहा था कि वर्ष बीतते जा रहे थे। वे वैसे गुजर गए थे जैसे घटती हुई ज्वार की लहरें किसी बीच पर से कूड़ा- कचरा छोड़ती चली जाती हैं। उसी तरह का हाल था मेरा। उसी समय में सीटी बजाती हुई कस्तूरिका मुझको चिढ़ाते हुए तरसाते हुए खाइयों की छाया में से कह रही हो, 'यह वक्त नहीं है, जो गुजर रहा है। यह तुम और मैं हैं, यह तुम और मैं...

फिर मैंने अपनी उदासी तोड़ने पर जोर दिया। मैं पहाडियों और जंगलों से दूर रहने लगा। मैंने गाँव की तरफ मुड़कर नहीं देखा। मैंने अपने आपको अपने काम में डुबो दिया और तटस्थता से सोचने लगा। फिर मैंने एक लेख लिखा—'कलसी के लौह-स्तंभ पर उत्कीर्ण लेख।बहुत बुद्धिमत्तपूर्ण बहुत शुष्क, पर समझदारी भरा। रात में मुझे रह-रहकर बिन्या का खयाल सताता। मैं सो नहीं पाया। मैंने लाइट को जला दिया और वह वहाँ पर थी, दर्पण में मुसकराती हुई मेरी ओर देखती हुई। उस वृद्ध महिला की छवि की जगह, जो मुझे इतने लंबे समय से देखती आ रही थी।

# प्रेम और क्रिकेट

"यह दिल्ली में एक बहुत शांत दिन था। सब लोग घर के अंदर बंद भारत पाकिस्तान का क्रिकेट मैच टी.वी. पर देख रहे थे। यहाँ तक कि होटल में भी बहुत कम कर्मचारी नजर आ रहे थे। कई सालों तक छुटमलपुर क्लब टीम के लिए बारहवें खिलाड़ी के रूप में बेकार सा काम करते-करते मैंने कई साल पहले क्रिकेट खेलना छोड़ दिया था। दूसरे खिलाडियों के लिए मैदान में पेयजल लेकर जाना था। दूसरे खिलाडियों की जगह तेज धूप में खड़े होकर फील्डींग करते-करते मेरा मन खेल की तरफ से खटटा हो गया था। अब मुझे सबसे ज्यादा आनंद आता था कि मैं एक छायादार जगह में बैठ जाऊँ और एक युवा फुरतीला वेटर मेरे लिए ठंडा कोल्ड ड्रिंक लेकर आए, जो कि इस समय क्रिकेट के मैदान में रहना ज्यादा पसंद करता।"

वह एक बुजुर्ग सा वेटर था, जो मेरे लिए नींबू-पानी लेकर आया। संभवतया युवा वेटर सब किचन में लगे टी.वी. के इर्द-गिर्द इकटठा होकर मैच देख रहे होंगे। होटल के बगीचे में आराम-कुरसी पर पसर के बैठा था। यहाँ पर मैं कभी- कभी आ जाया करता हूँ। स्वीट-पीज फूलों की सुगंध मदमस्त कर देनेवाली हवा में बिखरी हुई थी। मध्य मार्च की फूलों धूप में स्नेप ड्रैगमस से फूट रहे थे। गुलाबी क्लाक्स फूलों से क्यारियाँ भरी पड़ी थीं। दिल्ली में वसंत ऋतु में फूलों की भरमार बहुत होती है।

उस जगह केवल मैं ही था। मुझे बहुत शांति महसूस हो रही थी। गार्डेन में सुकून और आराम था, जब तक कि वहाँ शोर मचाते हुए दो बच्चे नहीं आ गए। एक लड़का लगभग 12 साल का और एक लड़की उससे कुछ छोटी— छाया में से भागते हुए और एक रबर की बॉल को किक करते हुए निकले। मैं खुद भी कभी फुटबॉल खेलता था, अतएव मैं उनका खेल मंद-मंद मुसकराते हुए देखने लगा, सहनशीलता से उस वक्त तक जब तक कि लड़के ने बेरहम की तरह झुककर एक किक लगाई और फुटबॉल मेरी टेबल पर नींबू पानी को गिराते हुए क्रैश कर गई।

बुजुर्ग वेटर दौड़कर मुझे बचाने के लिए आया। बच्चे भागकर कुछ ताड़ के पेड़, जो बड़े गमलों में लगे थे, के पीछे छिप गए। उनकी माँ बच्चों को जोरजोर से डाँटती हुई सीढियों पर आई। वह मेरे पास चलकर आई और माफी माँगने लगी।

"मुझे बहुत अफसोस है, ये बच्चे बड़े शैतान हैं।"

"ठीक है, कोई बात नहीं।" मैंने कहा, "उनमें जोश भरा है। और वैसे भी आजकल बॉल खेलने का मौसम भी है।"

मेरी आँखों में सूर्य की किरणें सीधे पड़ रही थीं, अतएव मैं उसका चेहरा ठीक से नहीं देख

सका। उसकी उम्र लगभग चालीस वर्ष की रही होगी, थोड़ी मीठी साँवला रंग, पर काफी आकर्षक।

"यह बिलकुल ठीक है।" मैंने दुबारा कहा, जब वेटर मेरे लिए फिर से नींबू-पानी लेकर आया।

वह वहीं पर खड़ी रही—मुझे घूरती हुई।

"क्या आप रस्टी तो नहीं हैं?"

तब मैंने उसको और ध्यान से देखा। बहुत समय हो गया था, जब मुझे किसी ने रस्टी कहकर पुकारा था। मैं आँखों में सूरज की सीधी आती हुई रोशनी से बचने के लिए उठकर खड़ा हो गया। उसकी आँखों के बारे में कुछ था, मृदुल और मुलायम और उसके बाल अभी भी चमकदार और मुलायम और हाँ, उसके होंठ उससे याद आया—

"सुशीला मैंने हिचकिचाते हुए कहा। क्या वास्तव में वही हो सकती थी, मध्य आयु की, फूले-फूले गाल और मातृत्व झलकता हुआ। सुशीला—मेरा बीस साल से ज्यादा पहले का पुराना प्रेम।"

"हाँ, मैं सुशीला ही हूँ। और तुम रस्टी हो।" थोड़े बड़े अब और पिछले कई वर्षों में थोड़ा रस्टी भी। मैंने उसका हाथ पकड़कर अपने साथ बैठने को कहा, "बच्चों को भी यहीं बुला लो। पर बच्चे इधर-उधर भाग गए थे। मिल नहीं रहे थे।"

"वे वीडियो गेम खेलने चले गए होंगे।" उसने कहा और बिना किसी हिचकिचाहट के बैठ गई, "आपसे बातचीत करके अच्छा लगेगा। इन बड़े होटलों में ठहरना बड़ा बोरिंग होता है।"

मैंने वेटर को बुलाया और उसने एक संतरे के पेय का ऑर्डर दिया। मैंने अपना गिलास उठाया और उसके दूधिया पानी से देखा। वह अपनी उम्र के हिसाब से काफी अच्छी दिख रही थी। मुझसे बेहतर, यद्यपि जवानी विदा हो चुकी थी। पर उसकी डिंपलवाली मुसकराहट भरे होंठ और सुंदर चितवन में वह अभी विद्यमान थी। उसके कभी दुबले-पतले हाथ अब काफी गुदाज हो गए थे, पर उसे पकडऩा अच्छा लगेगा और मैंने ऐसा ही किया। मैंने अपनी उँगलियों को उसके हाथ पर हलके से रखा। उसने अपना हाथ खींच लिया। पर बहुत जल्दी नहीं।

"तो अब तुम दो बच्चों की माँ हो।" मैंने बातचीत शुरू करने के इरादे से कहा।

"तीन।" उसने कहा, "मेरा सबसे बड़ा लड़का बोर्डिंग स्कूल में है। वह पंद्रह साल का है। तुमने शादी नहीं की?

"जब तुमने मेरे प्रस्ताव को ठुकरा दिया, उसके बाद नहीं।"

"मैंने तुम्हें नहीं मना किया।" वह मेरे माता-पिता की इच्छा थी।

"मुझे पता है, वह तुम्हारी गलती नहीं थी। और यह उनकी गलती भी नहीं थी। मेरे पास कुछ भी धन नहीं था, और कोई भविष्य भी सामने नहीं था। यह तुम्हारे लिए अच्छा नहीं होता। मुझे अपना लेखन छोड़कर कोई बेकार सा काम करना पड़ता।"

"क्या तुम मेरे लिए ऐसा करते?"

"बेशक, मैं तुम्हें प्यार जो करता था।"

"पर अब तुम सफल हो। यदि तुमने मुझसे शादी कर ली होती तो शायद तुम्हारा इतना नाम नहीं होता।"

"कौन जानता है। तुम्हारे पति काफी सफल होंगे, जो इस (इतने महँगे) होटल में ठहरे हैं।"

"ओह, पर वे एक बिजनेसमैन हैं।" बॉम्बे में एक स्टॉक-ब्रोकर, मुझे इसके बारे में कुछ भी पता नहीं है। मैं तो बस केवल एक गृहिणी हूँ।

"अच्छा, तीन बच्चे तुम्हें खूब मस्त रखते होंगे।" कुछ वक्त के लिए हम चुप रहे पास जनपथ से ट्रैफिक की आवाज आ रही थी, पर गार्डन में शांति थी। मुझे याद आया कि बीस साल पहले हम मासी झरने के सामने वाली पहाड़ी पर नंगे पाँव घास पर हाथ में हाथ डाले घूम रहे थे। मेरे पास अभी भी वे फोटो सुरक्षित रखी हैं,जो हमने खींचे थे। उसका चचेरा भाई नीचे नदी में नाव चलाने चला गया था। वह वहाँ रंगीन छोटे-छोटे पत्थर ढूँढ़ने गया था। इस मौके का फायदा उठाकर मैंने उसको पहले गालों पर और फिर अचानक ओंठों पर चुंबन कर लिया।

अब वह भी इस घटना को याद कर रही थी, क्योंकि उसने कहा, "तुम काफी रोमांटिक थे, रस्टी।"

"मैं अब भी रोमांटिक हूँ। आधुनिक दुनिया में रोमांस के लिए समय नहीं है। अब सबकुछ कंप्यूटर्स पर होता है। लोग ई-मेल द्वारा प्रेम करते हैं। यह अधिक सुरक्षित है।"

"और तुम्हें चाँदनी रातें पसंद थीं।"

"ओह, वह चाँदनी रातें क्या तुम्हें याद हैं?" लैडाउर के ऊपर चढ़ता हुआ चाँद और मेपल कुड के पेड़ों से छनकर आती हुई चंद्र किरणें—तुमने अपना सिर मेरे कंधों पर रख दिया था। मैं तुम्हें तब तक पकड़े रही जब तक बादलों का एक टुकड़ा आकर चाँद को न ढक गया। फिर तुमने मुझे हर जगह चुंबन लेने दिया।

"मुझे यह याद नहीं है।" "नहीं, ऐसा नहीं हो सकता, तुमको जरूर याद है।"

"तुम्हारी उस साइकिल का क्या हुआ। जिसके बारे में तुम गाना गाया करते थे?"

"मशीनों की तरह साइकिल भी चली गई। साइकिलें आईं। पर वह गाना अब भी मेरे बाबाजी, मेरी दादी के लिए गाते थे। अपनी शादी से पूर्व। यह रहा...।" मैंने उसे धीमे से

गाना शुरू किया। पीछे बैठा वृद्ध वेटर भी उसे ध्यान से सुन रहा था—

डेजी, डेजी तुम अपना जवाब दो, दो!

मैं तुम्हारे प्यार में पागल हूँ।

यह बहुत स्टाइलिश शादी नहीं होगी।

क्योंकि मैं घोड़ा-गाड़ी का प्रबंध नहीं कर सकता।

पर तुम एक साइकिल की सीट पर अच्छी लगोगी, जो दो आदमियों के लिए बनी हो।

सुशीला हँसी और अपने हाथों से तालियाँ बजाई।

"और तुम्हारे दादा-दादी, क्या वे साइकिल से खुश थे?"

"बहुत ज्यादा। कई साल तक उनके पास वही साइकिल थी। पर मैंने देखा कि तुम्हारे पास एक नई बलेरो है। बहुत बढ़िया।"

एक गाड़ी जो खड़ी हुई थी, उसमें से उसके बच्चे उसको हाथ हिला रहे थे।

"हमें शॉपिंग करने के लिए जाना है।" उसने कहा।

"पर जब तक मैच समाप्त न हो जाए, हम जा नहीं सकते।"

"अच्छा, अभी तो लंच टाइम है। खेल तो 5 बजे तक समाप्त होगा।"

उसके हैंड-बैग में कुछ बजा और उसने उसे खोला और एक मोबाइल निकाला। हाँ मेरी प्यारी सुशीला मेरी युवावस्था की सीधी-सादी सुशीला अब लेटेस्ट टेक्नोलॉजी से लैस थी। उसने ध्यान से सुना जो कर रहा था, फिर निराश होकर उसे स्विच ऑफ कर दिया।

"अब कोई शॉपिंग नहीं।"

"कोई शॉपिंग नहीं।"

"उसने शर्त लगाई थी कि तेंदुलकर जीरो पर आउट हो जाएगा।"

"और उसका स्कोर क्या रहा?"

"पूरे सौ और मेरे पति एक लाख रुपए हार गए। यह कुछ भी नहीं है। क्या तुम हमारे साथ लंच करना पसंद करोगे? यहाँ बहुत बोरिंग है।"

"नहीं," मैंने कहा, "मुझे वापस जाना है।"

"पहाड़ों में अपने सूने कॉटेज में ?"

"हाँ, आखिर में। कभी-कभी मैं यहाँ पर आता हूँ।"

जब मैं दिल्ली में होता हूँ, मुझे फूलों का बगीचा बहुत पसंद है। मैं अपने दोस्तों के साथ ठहरा हूँ। जब मैं जाने के लिए उठ खड़ा हुआ तो उसने अपना हाथ बढ़ाया मेरे हाथों में दिया।

"क्या तुम फिर आओगे?"

"मैं कह नहीं सकता। तुमसे मिलकर बहुत अच्छा लगा। सुशीला, तुम पहले से कहीं ज्यादा अच्छी लग रही हो। जब तुम बोर हो रही हो तब भी।"

मैंने वेटर को अच्छी-सी टिप दे दी। वह मुझे पार्किंग तक छोड़ने आया और बहुत सम्मान से मेरी साइकिल की सीट झाड़ दी। मैं जनपथ की सड़क पर गीत गुनगुनाते हुए चल पड़ा।

# हमें किसी-न-किसी को प्यार करना चाहिए

यदि हमें इस पृथ्वी पर अपना रहना उचित लगता है।

हमें हर दिन किसी को, कोई भी कहीं पर हो

प्यार करना चाहिए अपने अलावा।

क्योंकि सारस भी अपनी साथी के बिछुड़ जाने पर

शोक मनाती है।

और सील भी अपने साथी के लिए दु:खी होता है।

कोई तो ऐसा होना चाहिए'

जो दिन भर की थकान और गरमी के बाद

आपका हाथ पकड़े और अपना दु:ख-दर्द बाँटे।

बिना प्यार के स्पर्श के

कोई जीवन नहीं है, और हम धूमिल पड़ जाएँगे।

# दादाजी और शुतुरमुर्ग की लड़ाई

"मेरे दादाजी इंडियन रेलवे में काम करने से पहले कुछ साल ईस्ट अफ्रीकन रेलवे में भी काम कर चुके थे। यह उन्हीं दिनों की बात है, जब उनकी वह मशहूर लड़ाई शुतुरमुर्ग के साथ हुई थी। यह कहानी मैंने कई बार उनकी जुबानी बचपन में सुनी थी, और अब यह कहानी उन्हीं के शब्दों में, जहाँ तक मुझे याद है, आपको सुना रहा हूँ।"

जब हम वहाँ रेलवे लाइन बिछा रहे थे तो उन्हीं दिनों मैं एक भयानक मृत्यु से चमत्कारी रूप से बचा। मैं एक छोटे से शहर में, जो हमारे काम की जगह से 12 मील दूर था, वहाँ रहता था और घोड़े द्वारा वर्क-साइट पर जाता था।

एक दिन मेरे घोड़े का छोटा सा एक्सीडेंट होकर वह चोटिल हो गया। अतएव मैंने उस दिन काम पर पैदल जाने का निश्चय किया, क्योंकि उन दिनों मैं काफी पैदल चल लेता था। मुझे पहाड़ों के अंदर होकर जानेवाला रास्ता भी पता था, जिससे मैं 6 मील का रास्ता भी बचा सकता था।

यह शॉर्टकट एक शुतुरमुर्ग फार्म—या कैंप, जैसा वह कहलाता था—वहीं से होकर जाता था। यह उनके प्रजनन का समय था। मैं शुतुरमुर्गों के स्वभाव व तौर तरीकों से काफी परिचित था। मुझे पता था कि प्रजनन के मौसम में नर चिडिया (शुतुरमुर्ग) बहुत आक्रामक हो जाती हैं। जरा सा भी छेड़ने पर वे हमला बोल देती हैं। मुझे विश्वास था कि मेरा कुत्ता भी शुतुरमुर्ग या पक्षी को, जो मुझ पर हमला बोलेगा, खदेड़ देगा। हालाँकि यह अजीब लगेगा, पर बड़े-से-बड़ा शुतुरमुर्ग भी (कई बार वे 9 फीट तक ऊँचे होते थे।) कुत्ते को देखकर, छोटे-से-छोटा कुत्ता भी बड़ी तेजी से रेस के घोड़े से भी तेज भाग जाते थे। अतएव मैं अपने कुत्ते के साथ अपने को बहुत सुरक्षित समझ रहा था।

कैंप में पहुँचने के बाद मैं तारों की बाड़ सी फाँदकर अंदर पहुँच गया और चारों तरफ से देखते हुए कँटीली झाड़ियों के बीच से रास्ता बनाते हुए जा रहा था। जबतब मुझे कुछ दूर पर खाना खाती हुई शुतुरमुर्ग दिख जाती थी।

अभी मैं आधा मील ही चल पाया था कि रास्ते में एक खरगोश दिख गया और मेरे कुत्ते ने उसे दौड़ाना शुरू कर दिया। मैंने उसको वापस बुलाना चाहा, पर सब व्यर्थ। खरगोशों का पीछा करना उसका बहुत बड़ा शौक जो ठहरा।

मुझे पता नहीं कि वह कुत्ते का भौंकना था या मेरा खुद का चिल्लाना था, जिस चीज से मैं बचना चाहता था, वह एकदम हो गई। शुतुरमुर्ग चौंक गए और वे इधर- उधर भागने लगा। अचानक मैंने देखा कि एक नर शुतुरमुर्ग लगभग 100 गज दूर झाड़ियों के अंदर से निकल आया। वह शांत खड़ा कुछ देर तक मुझे देखता रहा। मैंने भी उसकी तरफ घूरकर

देखा, फिर उसने अपने छोटे पंखों को फैलाकर और पूँछ को सीधे करके मेरी तरफ कूद-कूदकर भागने लगा।

चूँकि मेरे पास छड़ी वगैरह कुछ नहीं था, जिससे मैं अपनी रक्षा कर सकता, मैं बाड़ की तरफ भागा; पर यह रेस बराबर की नहीं थी। कहाँ मेरे 2-3 फीट के कदम और कहाँ उसके 16-20 फीट के कदम केवल एक ही तरीका था कि किसी बड़ी झाड़ी के पीछे छिप जाऊँ और जब तक कोई मदद न आए, मैं उससे बचता रहूँ। उसको धोखा देकर बचते रहने के अलावा और कोई उपाय नहीं था।

अतएव मैं दौड़कर कँटीली झाड़ियों के समूह के पीछे छिप गया और अपना पीछा करने वाले का इंतजार करने लगा। वह विशाल पक्षी बिना कोई वक्त गँवाए तुरंत ही मेरे पीछे आ गया।

फिर सबसे विचित्र युद्ध चालू हुआ। मैं कभी इधर जाता, कभी उधर भागता, और यह कोशिश कर रहा था कि उसकी मारक किक के सामने किसी तरह न पड़ूँ। शुतुरमुर्ग बहुत जोर से लात मारते हैं। वे भी आगे की तरफ और इतनी जोर से कि उनकी छेनी की तरह पैने बड़े-बड़े नाखून आपको बुरी तरह चोट पहुँचाते हैं।

मैं बिलकुल ही नि:सहाय था। मेरी साँस फूलने लगी थी और जोर-जोर से सहायता के लिए चिल्ला रहा था। झाड़ियों के चारों ओर चक्कर लगाते-लगाते मेरी ताकत भी घटती जा रही थी। कितनी देर मैं उससे जूझ सकता था? मैं थककर चूर होकर गिरने वाला था।

मेरी इस स्थिति को भाँपकर क्रुद्ध चिडिय़ा ने अपनी स्पीड और बढ़ा दी। सीधे मेरे ऊपर हमला बोला। मैं लाचार होकर किसी तरह एक तरफ को हो गया। मुझे पता नहीं कैसे चिडिय़ा का एक पर, जो उसके शरीर के नजदीक था, हाथ में आ गया। मैंने उसे कस के पकड़ लिया।

अचानक ऐसा होने से शुतुरमुर्ग घबराकर डर गया। वह घूमने लगा और अपने पैरों पर एक प्रकार से नाचने लगा। इतनी तेजी से घूमने लगा कि मेरे पैर जमीन पर से उठ गए । मैं चक्कर-घिन्नी की तरह जमीन के समांतर घूमने लग गया। इस पूरे समय शुतुरमुर्ग अपनी चोंच खोल रहा था, बंद कर रहा था और जोर-जोर से चिल्ला रहा था।

मेरी स्थिति की कल्पना कीजिए, जब मैं निराशा से उस क्रोधित पक्षी के पंख को पकड़े हुए था। वह मुझे डिस्कस फेंकनेवाले की तरह घुमा रहा था। मैं एक डिस्कस की तरह गोल-गोल घूमे जा रहा था। उसके तेज-तेज और लगातार घुमाने की वजह से तनाव से मेरे हाथ में दर्द होने लगा था और सिर में चक्कर आने लगा था। मुझे पता था कि यदि मैंने जरा भी अपनी पकड़ ढीली की तो मेरा हश्र क्या होगा?

हम एक बड़े सर्कल में गोल-गोल घूमते रहे। ऐसा लगता था कि वह विदेशी चिडिय़ा कभी थकेगी ही नहीं। मुझे पता था कि अब मैं उसके पंख को ज्यादा देर तक पकड़े नहीं रख सकता था। अचानक ही उस शुतुरमुर्ग ने उल्टी दिशा में घूमना शुरू कर दिया। उसकी इस अप्रत्याशित चाल से मेरी पकड़ ढीली पड़ गई और मैं जमीन पर चारों खाने चित

गिर पड़ा। मैं कँटीली झाड़ियों के पास एक गठरी की तरह गिर पड़ा। इसके पहले कि मैं समझ पाता कि क्या हुआ, वह विशाल पक्षी मेरे ऊपर ही आ गया। मैंने सोचा कि अब मेरा अंत नजदीक है।

सहज ज्ञान से मैंने अपने हाथ ऊपर उठाए अपना चेहरा ढाँपने के लिए, पर शुतुरमुर्ग ने मुझे मारा नहीं।

मैंने अपना हाथ चेहरे से हटाया और वह प्राणी अपना एक पैर उठाए मुझे मारने को खड़ा था। एक मारक किक मैं वहाँ से हिल नहीं सका। क्या मेरा मानसिक कष्ट बढ़ाने के लिए मेरे साथ चूहे-बिल्ली का खेल-खेल रहा था?

मैं डरकर और अचंभित होकर उसको देख रहा था। शुतुरमुर्ग ने अपना सिर तेजी से बाईं ओर को घुमाया। एक सेकंड बाद वह कूदकर पीछे मुड़ा और जितनी तेजी से हो सकता, भागा। मैं स्तंभित होकर सोचने लगा कि वह क्यों इस प्रकार अप्रत्याशित रूप से भागा? शुतुरमुर्ग के भाग जाने से मैं अचंभे में पड़ गया।

पर इसकी वजह जल्द ही समझ में आ गई। मुझे बहुत ही खुशी हुई। जब मेरा प्यारा कुत्ता, जो इधर-उधर चला गया था, वह भौंकता हुआ आ पहुँचा था और मेरे सामने घूम-घूमकर कूद रहा था। यह कहने की जरूरत नहीं है कि मैंने भी लाड़ से उसको सहला-सहलाकर खुश किया। मैंने इस बात का खूब खयाल रखा कि जब तक हम शुतुरमुर्ग के कैंप से बाहर न निकल जाएँ, वह हमारे साथ रहे।

# टेढ़े-मेढ़े रास्तों से सबक

"अंकल केन हमेशा कहते थे कि जीवन में सफलता हासिल करने के लिए सबसे अच्छा उपाय है—टेढ़े-मेढ़े रास्तों पर चलना।"

"अगर तुम नई-नई दिशाओं में आते रहोगे तो नई-नई नौकरी या काम के मौके मिलते रहेंगे।"

हाँ, अंकल केन के रास्ते में कई मौके तो आते रहे। लेकिन वह उस मायने में सफल नहीं हुए, जिसे एक सफल आदमी के लिए डेल कार्नेगी या दीपक चोपड़ा परिभाषित करते हैं।

उन्होंने अपने लंबे जीवन में रिश्तेदारों और परिवार के लोगों की मदद से कई कामों में हाथ डाला, पर सफलता उनसे दूर ही रही। उनकी एक मुख्या योजना थी एक मुरगी-पालन का विकास करना, जैसाकि पी.जी. वोडहाउस की किताब 'लव एमंग दि चिकन में डकरिज ने बनाया था। उनका दूसरा प्रोजेक्ट मिनरल वाटर बाटलिंग प्लांट का था। इस दूसरे प्रोजेक्ट के लिए उन्होंने देहरा से 5 मील दूर एक झरने के गंधकवाले पानी को भरकर बेचना शुरू कर दिया। गंधक का पानी यदि थोड़ी मात्रा में लिया जाए तो अच्छा होता है। यदि पूरी बोतल एक बार में पी ली जाए तो यह संक्षरण करता है—'गंधक और गंधकारम एक ग्राहक ने उसका ऐसे विवरण दिया। क्रुद्ध खरीदारों ने हमारी दादी माँ के बगीचे में खाली बोतलें फेंक-फेंककर प्रदर्शन किया।

दादी माँ बहुत ज्यादा गुस्सा थीं, केन अंकल से बहुत ज्यादा और प्रदर्शनकारियों से कम। उन्होंने केन अंकल से उन लोगों के पैसे लौटवाए।

उन्होंने समझाया कि, "गंधक का पानी पीने के लिए आदमी को स्वस्थ और मजबूत होना चाहिए।"

"मेरा खयाल था कि इसको पीने से आदमी सेहतमंद और ताकतवर होता है।" मैंने कहा।

दादाजी ने कहा कि सादा सोडा-वाटर, जो व्हिस्की में मिलाया जाता है, वह इससे कहीं बेहतर है। "तुम केवल सोडा-वाटर क्यों नहीं बोतल बंद कर बेचते जिसकी माँग भी कहीं ज्यादा है।"

पर अंकल केन का यह मानना था कि उन्हें हर काम में मौलिक होना चाहिए।

"टेढ़े-मेढ़े रास्ते से चलना, काम करना ही सफलता का राज है। वे कहते थे।"

"तुम अवश्य ही गार्डेन में टेढ़े-मेढ़े रास्तों पर चल रहे थे। जब तुम्हारे ग्राहक तुम्हारे ऊपर बोतलें फेंक रहे थे।" दादी माँ ने कहा।

जिग-जैग रास्तों पर चलना भी अंकल केन का आविष्कार था।

किसी जगह को आप अच्छी तरह तभी जान पाएँगे जब आप वहाँ अव्यवस्थित रूप से इधर-उधर घूमते रहें। जिग-जैग वाक के लिए पहले आप बाएँ और फिर दाएँ मुड़ें आदि-आदि। यदि आप अपने गंतव्य पहुँचने के लिए किसी जल्दी में नहीं हैं, तो यह काफी मनमोहक साबित हो सकता है। मुसीबत यह थी कि केन अंकल को यदि ट्रेन भी पकडऩी होती थी तो यही, 'टेढ़े-मेढ़े रास्तेवाला तरीका अपनाते थे।

जब दादी ने उनसे कहा कि ऑट मेबल बच्चों के साथ लखनऊ से आ रही हैं और उन्हें स्टेशन पर जाकर मिलकर ले आए तो भी उन्होंने यही टेढ़े-मेढ़े रास्ते अपनाए। पहले पश्चिम में बोटैनिकल गार्डेन चले गए, फिर पूरब में चूने की फैक्टरी पर फिर मालगोदाम की तरफ से स्टेशन पहुँचे, "जिससे कि वह सबको अचंभे में डाल दें।"

किसी को भी अचंभा नहीं हुआ, और सबसे कम तो आंट मेबल को, जो ताँगा लेकर घर आ गईं। जबकि अंकल केन वहाँ पर बैठे लखनऊ से आनेवाली दूसरी गाड़ी का इंतजार करते रहे। मुझे भेजा गया कि मैं उन्हें वापस लेकर आऊँ। "चलो, हम बाजारों से हो करके घर चलते हैं।" उन्होंने कहा।

"एक शर्त पर कि हम हर 15 मिनट पर चाट खाएँगे।" मैंने कहा।

तो साहब हम लोग तमाम बाजारों से टेढ़े-मेढ़े रास्तों से होते हुए चले। उत्तर भारत के बाजार वैसे ही टेढ़े-मेढ़े से होते हैं। कई चाटवालों एवं हलवाई की दुकान पर चाट-मिठाई खाते हुए। जब तक कि अंकल केन के पैसे बिलकुल खत्म नहीं हो गए। हम काफी देर से घर पहुँचे। घर पर हमें सब लोगों ने खूब डाँटा। जैसा अंकल ने कहा, हम जिग-जैगिंग के अग्रणी थे और यह आशा करनी चाहिए थी कि लोग हमें गलत समझें और निंदा भी करें। भावी पीढिय़ाँ हमारी 'जिंग-जैगिंग तरीके का महत्व समझेंगी।

'जिग जैगिंग उन्होंने कहा, "दिल और दिमाग के बीच में एक कर्ण है। हमारे ज्यादा परेशानीवाले समय में यदि वह एक प्रवचन देते तो तमाम लोग उनकी क्लास से भाग जाते। अंकल केन मौलिक ड्राप-आउट थे। वह किसी अन्य को बरदाश्त नहीं कर पाते।"

यदि वह एक अंतरिक्ष-यात्री होते तो वह आकाशगंगा में एक तारे से दूसरे तारे तक जाते। इस प्रकार से आकाशगंगा के सारे तारों की सैर कर लेते।

अंकल केन कहीं भी शायद बहुत शीघ्रता से नहीं पहुँच सकते थे। उन्होंने कम-से-कम एक आदमी को अपने मत में परिवर्तित कर पाने (मुझे) में सफल रहे। मैं उनकी दृष्टि "जब आप टेढ़े-मेढ़े रास्तों से चलते हैं, तो आप यह नहीं चुनते कि आप क्या देखेंगे, पर आप दुनिया को एक मौका देते हैं कि वह आपको देख सके जिससे मैं सहमत था।"

# चाचा केन के साथ समुद्री यात्रा

"चा चा केन के साथ आप कभी भी किसी अप्रत्याशित घटना की उम्मीद रख सकते थे। यहाँ तक कि तमाम सामान्य परिस्थितियों में उनके साथ और जो उनके आस-पास होते थे, असाधारण घटनाएँ घट सकती थीं। वह भ्रामक स्थितियाँ पैदा करने के उत्प्रेरक थे।"

मेरी माताजी को बेहतर पता होना चाहिए था। जब उन्होंने मेरी हाई स्कूल परीक्षा खत्म होने के बाद उनसे कहा कि वह मेरे साथ इंग्लैंड चले जाएँ। उनका मानना था कि सोलह साल का एक लड़का इतनी लंबी यात्रा अकेले करने के लिए काफी छोटा था। शायद मैं खो जाऊँ या मेरे पैसे-रुपए गुम हो जाएँ या मुझे कोई भयानक बीमारी पकड़ ले। उनको यह अच्छी तरह समझ में आ जाना चाहिए था कि अंकल केन जो पाँच बहनों में अकेले थे, इन सब लाड़-प्यार से काफी बिगड़ गए थे। वह इन सब (उलटे-सीधे) कामों को करने में समर्थ थे।

खैर, जो भी हो, उन्हें निर्देश दिया गया कि वह मुझे इंग्लैंड में मेरी चाची के सुपुर्द कर दें और फिर उनकी इच्छा हो तो वे वहाँ ठहरें, नहीं तो भारत वापस लौट आएँ। मेरी नानी ने उनके टिकट का भी प्रबंध कर दिया था। तो एक तरह से यह उनके लिए एक मुफ़्त छुट्टियाँ थीं। इसमें बढ़िया (पी.ऐंड ओ.) लाइनर द्वारा समुद्री यात्रा शामिल थी।

हमारी बंबई की ट्रेन यात्रा बिना किसी घटना के संपन्न हो गई। यद्यपि उन्होंने किसी तरह अपना चश्मा गुमा दिया, और जब वे स्टेशन पर उतरे तो किसी और का चश्मा पहने हुए थे जिससे उन्हें दूर की चीज साफ नहीं दिखती थी और शायद इसी वजह से उन्होंने स्टेशन मास्टर को कुली समझकर उससे कहा कि वह हमारे सामान की देखभाल करे।

बंबई में हमारे पास दो दिन थे। इससे पहले कि हम शिप (एस.एस.) स्ट्राथनवर बोर्ड करते चाचा केन ने कहा, "ये दो दिन हम खूब मस्ती करेंगे। उनके पास सीमित बजट होने की वजह से हम मिल्टन रोड पर एक बेकार से होटल में ठहरे, जहाँ पर हमें 20 अन्य लोगों के साथ एक टॉयलेट शेयर करना था।"

"कोई बात नहीं।" उन्होंने कहा, "हम ऐसी जगह में ज्यादा देर नहीं ठहरेंगे। अत: वे हमें मैरीन ड्राइव और फिर गेटवे ऑफ इंडिया ले गए, उसके बाद हम कोलाबा में एक ईरानी रेस्त्राँ में गए। वहाँ हमने प्रान की कढ़ी और सुगंधित चावल का खाना खाया। मुझे पता नहीं कि यह कढ़ी, प्रान था या वह सुगंध थी। अंकल रात भर दौड़-दौड़कर पाखाने जाते रहे। इससे किसी और को टॉयलेट जाने का मौका ही नहीं मिला और उन्होंने अपनी खिड़कियाँ खोलकर मल-मूत्र विसर्जित कर दिया। और साथ ही अंकल केन को गालियाँ देते रहे।"

सुबह होते-होते वह काफी स्वस्थ हो गए थे। उन्होंने एलीफेंटा गुफाएँ जाने का प्रस्ताव रखा। हमने ब्रेकफास्ट में मछली का अंचम मालाबार की चिली (मिर्च की चटनी और कुछ गुजराती पूडिय़ाँ) खाईं तथा उसके बाद हम एक मोटरलॉञ्च में चढ़ गए। बड़ी मोटर-बोट जिसमें तमाम और टूरिस्ट थे। हम एक छोटी, समुद्री यात्रा क्रूज पर निकल पड़े। चाचा केन ने अपना ब्रेकफास्ट समुद्री मछलियों के साथ बाँटने का निश्चय किया (उन्हें उलटी होने लगी)। जब हम तट पर पहुँचे तो उनका रंग सी-वीड की तरह हरा पड़ गया था। अंकल केन रेत पर ही धराशायी हो गए और फिर आगे नहीं चल पाए। मैं उनके लिए नारियल पानी ले आया, जिसे पीकर वह कुछ स्वस्थ हुए। उन्होंने फिर ऐलान किया कि जब तक हमारे शिप का वापस जाने का समय नहीं होगा, वह कुछ नहीं खाएँगे।

दूसरे दिन सुबह हम बैलार्ड पायर बॉम्बे से अपने जहाज में सवार हो गए तथा शिप शानदार तरीके से समुद्र में चल पड़ा। भारत दूर होता गया और दूर से छोटा दिखने लगा। मुझे लगा कि संभवत: मैं यहाँ से हमेशा के लिए बिछुड़ रहा हूँ और शायद ही फिर कभी वापस आऊँ। समुद्र में हलचल थी और अभी हम थोड़ी दूर ही गए थे कि समुद्र ने मेरा मन मोह लिया और मैं सारे दिन डेक पर ही रुका रहा, छोटेछोटे जहाजों को आते-जाते देखते हुए। स्टीमरों को और समुद्री चिडिय़ा को, सुदूर समुद्र तट, नमकीन पानी की महक और लहरों का मचलना तथा सह-यात्रियों को देखते हुए दिन कब बीत गया, पता ही नहीं चला। मैं अच्छी तरह समझ सका कि कोनरैड, स्टीवंशन, मोघम और अन्य लेखक समुद्र से कैसे सम्मोहित थे।

हालाँकि अंकल केन अपने केबिन में हीन बने रहे। शिप के हिलने-डुलने से वह बहुत अस्वस्थ अनुभव कर रहे थे। यदि वह बंबई में हरे पड़ गए थे, तो यहाँ समुद्र में पीले पड़ गए थे।

मैं अपना खाना डाइनिंग हॉल में खाता था। वहाँ पर मेरी दोस्ती एक हस्तरेखा विशेषज्ञ से हो गई। उसने बताया कि मैं कभी अमीर नहीं हो पाऊँगा, पर दूसरों को अमीर बनने में मदद करूँगा।

जब यात्रा के तीसरे दिन चाचा केन थोड़ा ठीक हुए तो वे डेक पर आए और समुद्री हवा का लुत्फ लिया तथा एक कुरसी में पसर गए। वह दिन भर वहीं उघते रहे। अचानक उनमें जान आ गई जब हमारे सामने से एक ब्लाड (सुनहरी बालों वाली गोरी लड़की) गुजरकर लाउंज में गई। थोड़ी देर बाद हमने पियानो से निकलती एक धुन सुनी। अंकल केन अपनी जगह से उठे और लडख़ड़ाते हुए लाउंज में गए। वही लड़की पियानो पर कुछ शास्त्रीय संगीत बजा रही थी। जो कि चाचा केन आमतौर पर पसंद नहीं करते; पर वह तो उसकी सुंदरता पर मुग्ध हो गए थे। वहाँ सम्मोहित-से खड़े थे। आँखें चमक रही थीं और जबड़े थोड़े लटक रहे थे। उनकी नाक लाउंज के ग्लास डोर से चिपकी हुई थी और मुझे देखकर याद आई वह गोल्ड फिश, जिसके टैंक में एक एंजेल फिश आ गई है, वह उसके प्यार में पड़ गई है।

"वह क्या बजा रही है?" उन्होंने मुझसे धीरे से पूछा, यह जानते हुए कि मैं अपने पिताजी के क्लासिकल गानों के रिकॉर्ड सुनकर बड़ा हुआ हूँ।

"रशमिनॉआफ" मैंने अनुमान लगाया, "या रिमसकी को रसा कोव।"

"अरे, कुछ आसान से नाम बताओ, जो बोला जा सके।" उन्होंने याचना भरे स्वर में कहा।

"चॉपिन।" मैंने कहा।

"और वह किस 'कंपोजिशन (धुन) के लिए ज्यादा प्रसिद्ध है?"

"पोलानाइस-ई-फ्लैट में या फिर ई-मॉइनर।"

उन्होंने धक्का देकर लाउंज का दरवाजा खोला, अंदर गए और जब उस लड़की का पियानो वादन खत्म हुआ तो खूब जोर से तालियाँ बजाई। उसने उनकी तालियों को सिर झुकाकर मुसकराकर स्वीकार किया और फिर कुछ और बजाने लगी। जब उसने बजाना खत्म किया तो उन्होंने तालियाँ बजाई और कहा, "वंडरफुल चॉपिन इससे बेहतर कभी नहीं लगा।"

"वास्तव में यह शायको वस्की है। उस लड़की ने कहा। पर इस बात का उसने बुरा नहीं माना।"

अंकल केन उसके हर प्रैक्टिस सेशन पर मौजूद रहते और शीघ्र ही वे अच्छे दोस्त बन गए दोनों डेक पर साथ-साथ घूमते थे। वह एक ऑस्ट्रेलियन थी। लंदन कंसर्ट में पियानो बजाने की शिक्षा लेने जा रही थी। पता नहीं उसने अंकल केन में क्या देखा, पर ऐसा लगता था कि जैसे अंकल हर सही आदमी को जानते थे।

यद्यपि वह कमजोर थे, पर काफी खूबसूरत दिखते थे।

मैं चूँकि अब अकेला पड़ गया था, अतएव मैं अपने पामिस्ट (हाथ देखने वाले) दोस्त के साथ-साथ उसके सहयात्रियों के हाथ देखते हुए घूमता रहता था।

वह लोगों को रोमांस, यात्रा, सफलता, खुशियाँ-प्रसन्नता, सेहत, धन और उनके आयु के बारे में बताया करता था, पर कभी भी किसी को ऐसी बात नहीं बताता था जिससे वह परेशान हो या चिंता में पड़ जाए। चूँकि वह किसी से कोई पैसा नहीं लेता था (अंतत: वह छुटटी पर था), वह पूरे जहाज में बहुत लोकप्रिय हो गया था। बाद में वह एक प्रसिद्ध हस्त-रेखा देखनेवाला और लोगों का मन पढ़नेवाला हो गया। एक तरह का भारतीय कीरो, जिसकी यूरोप की राजधानियों में काफी माँग थी।

यह यात्रा अठारह दिन चली, जिसमें यात्रियों व सामान उतारने-चढ़ाने के लिए जहाज अदन पोर्ट सैद और मार सेल्स में उसी क्रम में रुका। पोर्ट सैद पर अंकल केन और उनकी मित्र जहाज से उतरकर बाहर के दृश्य और बाजार देखने के लिए चले गए।

"तुम जहाज पर रुको," अंकल ने मुझसे कहा, "पोर्ट सैद लड़कों के लिए ज्यादा सुरक्षित नहीं है। दरअसल वह उस लड़की के साथ अकेले ही घूमना चाहते थे। मेरे साथ शायद वह अपनी शेखी न बघार पाते। मेरी उपस्थिति में शायद वह अपना मर्दानापन (मैन ऑफ

द वल्र्ड) न दिखा पाते।"

शिप उसी दिन शाम को रवाना होने वाला था। यात्रियों को जहाज के छूटने के समय से 1 घंटे पहले पहुँचना था। मेरे लिए तो शिप पर चंद घंटे आसानी से बीत गए, क्योंकि मैं लाइब्रेरी में किताबों में व्यस्त हो गया। यदि मेरे आस-पास किताबें होती हैं तो मैं कभी बोर नहीं होता। शाम को मैं डेक पर गया और दूर से देखा कि अंकल केन की दोस्त गैंगवे पर से होकर आ रही थी; पर अंकल केन कहीं नजर नहीं आ रहे थे।

"अंकल कहाँ पर हैं?" मैंने उससे पूछा।

"क्या वह अभी तक वापस नहीं आए?" हम एक भीड़भाड़ वाले मार्केट में बिछुड़ गए और मैंने सोचा कि वह अब तक यहाँ लौट आए होंगे।

हम रेलिंग पर खड़े होकर पायर की ओर देखते रहे, पर अन्य यात्रियों के बीच में वह कहीं नहीं दिखे।

"मेरे खयाल में वह तुम्हें खोज रहे होंगे। यदि उन्होंने जल्दी नहीं की तो वह कहीं शिप मिस न कर दें।" मैंने कहा।

शिप का हूटर, जोर से बजा। कैप्टन ने अपने मेगाफोन पर आवाज लगाई "सब लोग जहाज पर चढ़ गए? धीरे-धीरे जहाज बंदरगाह से निकलने लगा। हम चल पड़े थे। दूर हमें एक आकृति दिखाई पड़ी, जो अंकल केन की तरह लग रही थी, जो पायर पर जोर-जोर से दौड़ रहे थे और घबराहट से अपने हाथ तेजी से हिला रहे थे, पर शिप वापस नहीं मुड़ा।"

कुछ दिनों बाद टिलबरी डॉक (बंदरगाह) पर मेरी चाची मुझे मिली।

"तुम्हारे चाचा कहाँ हैं?" उन्होंने पूछा।

वह पोर्ट सैद पर छूट गए। वह शिप से बाहर तट पर चले गए थे, समय से वापस नहीं आ पाए।

"बिलकुल केन की तरह और मेरे खयाल से उसके पास ज्यादा पैसे भी नहीं होंगे? यदि वह संपर्क करेगा तो फिर हम उसे पोस्टल ऑर्डर से पैसे भेज देंगे। सोलह साल की अवस्था में मैं एक ऑफिस में काम करने लगा और अपनी छोटीमोटी तनख्वाह से अपनी चाची को घर-खर्च चलाने में मदद करने लगा। अब अंकल केन के गायब हो जाने की फिक्र करने के लिए समय नहीं था।"

मेरे पाठकों को पता है कि मैं भारत लौटने के लिए कितना बेचैन था। यह चार साल बाद ही संभव हो सका। अंततोगत्वा मैं घर वापस आ ही गया और जैसे ही मेरी गाड़ी देहरा स्टेशन पर पहुँचने वाली थी, मैंने खिड़की से बाहर झाँककर देखा, और वहाँ प्लेटफॉर्म पर एक चिर-परिचित आदमी का चेहरा दिखा। वे अंकल केन थे।

उन्होंने पोर्ट सैद पर गायब हो जाने का कोई जिक्र नहीं किया। ऐसे मिले जैसे हम कल

ही मिले थे।

"मैं तुम्हारे लिए एक साइकिल किराए पर लाया हूँ। उस पर चढ़कर घर चलोगे?" अंकल केन ने कहा।

"पहले हम लोग घर चलेंगे और फिर मेरे पास इतना सामान है।" मैंने कहा।

हमने सारा सामान ताँगे पर लादा और उसी के ऊपर मैं भी बैठ गया और हम लोग टक-टक करते हुए, लीची के पेड़ों के बीच से (मेरे खयाल से अब सब खत्म हो गए) होते हुए घर पहुँचे। अंकल केन पीछे-पीछे साइकिल पर मजे से सीटी बजाते हुए चले आ रहे थे।

"आप देहरा कब वापस आए?" मैंने पूछा।

"ओह, कुछ साल पहले। मुझे अफसोस है कि मैं जहाज नहीं पकड़ पाया। क्या वह लड़की परेशान हो गई थी?"

"वह कह रही थी कि वह आपको कभी माफ नहीं करेगी।"

"ओह अच्छा, मेरे खयाल से वह मेरे बिना ज्यादा अच्छी तरह रह रही है।"

बहुत अच्छी पियानो-वादक, चॉपिन और इसी तरह की धुनें।

"क्या नानी ने आपको घर वापस आने के लिए पैसे भेजे?"

"नहीं, मुझे नौकरी करनी पड़ी, पहले एक ग्रीक रेस्त्राँ में वेटर की, फिर मैं टूरिस्ट गाइड का काम करने लगा और टूरिस्टों को पिरामिड दिखाने ले जाता था। मिस्र एक बहुत महान जगह है। फिर मुझे मिस्र छोडऩा पड़ा, क्योंकि मेरे पास न कोई पेपर्स थे और न ही परमिट। मुझे अदन जाती हुई एक जहाज पर चढ़ा दिया। अदन में मैं छह महीना रहा, एक शेख के लड़के को अंग्रेजी पढ़ाया, फिर शेख का लड़का इंग्लैंड चला गया और मैं भारत वापस आ गया।"

"आजकल क्या कर रहे हैं आप," अंकल केन?"

"मैं एक पोल्ट्री फार्म शुरू करने की सोच रहा हूँ। तुम्हारी नानी के घर के पीछे बहुत जगह है। तुम भी मेरी मदद कर सकते हो।"

"मैं कुछ ज्यादा पैसे नहीं बचा पाया, अंकल।"

"हम एक छोटी सी शुरुआत करेंगे। तुम्हें पता है, आजकल अंडों की बहुत माँग है। हर आदमी अंडा चाहता है—स्क्रैंबल्ड, फाइड, पोच्ड, बॉयल्ड। लंच के लिए एग-करी, डिनर के लिए ऑमलेट, चाय के लिए एग सैंडविचेज। तुम्हें अपना अंडा कैसे पसंद है?"

"फ्राइड, फनी साइड अप।" मैंने कहा।

"हम ब्रेकफास्ट में फ्राइड अंडा खाएँगे, फनी साइड अप की तरह।"

पोल्ट्री फार्म कभी नहीं बन पाया। देहरादून वापस आकर अच्छा लगा, जहाँ अंकल केन के साथ जगह-जगह साइकिल से सैर पर जाने की संभावना भी थी।

# मेरा विफल ऑमलेट और अन्य बरबादिया

"अपने पचास साल के लेखकीय जीवन में मैं कभी कोई बेस्ट-सेलर नहीं लिख पाया। मैं अब इसका कारण जान गया हूँ, क्योंकि मैं खाना नहीं पका सकता।"

यदि मैं ऐसा कर पाता तो मैं एक बढ़िया जिल्दवाली मोटी सी कुकरी बुक (पाक-कला की किताब) लिख डालता, जो कि बुक-स्टोर की शो-विंडो को सजाने में काम आती हैं। जो उन लोगों द्वारा फटा-फट खरीद ली जाती हैं, जिन्हें मेरी तरह खाना बनाना नहीं आता।

जो भी हो, यदि मुझे कोई कुकरी बुक लिखने को बाध्य करता तो शायद मैं किताब लिखता, जिसका शीर्षक होता—'अंडे को उबालने के पचास अलग- अलग तरीके और अन्य बरबादियाँ।

मैं सोचा करता था कि अंडा उबालना एक बहुत मामूली सा काम होता है। पर जब मैं हिमालय की तराई में 7,000 फीट की ऊँचाई पर रहने लगा तो पता लगा कि पानी उबालने जैसा मामूली काम भी एक बड़ी उपलब्धि है। मुझे पता नहीं कि वह ऊँचाई का मसला है या पानी के घनत्व का, पर मेरे ब्रेक- फास्ट के समय तक पानी कभी उबाल ही नहीं देता था। परिणामस्वरूप मेरे अंडे हाफ-ब्वायल्ड (आधे-उबले) ही रह जाते थे। कोई बात नहीं, मैं अपने को यह कह समझ लेता था कि 'हाफ-ब्वायल्ड अंडे उबले अंडों की अपेक्षा ज्यादा पोषक हैं।

"उनको उबाले ही क्यों? मेरा पाँच साल का पोता गौतम, जो मेरा मि. डिक है, कहता था, कच्चे अंडे शायद ज्यादा स्वास्थ्यवर्धक हों।"

"बस, तुम जरा प्रतीक्षा करो और देखो।" मैंने उससे कहा।

"मैं तुम्हारे लिए ऐसा चीज आमलेट बनाऊँगा, जो तुम कभी भूलोगे नहीं।" और मैंने बनाया। वह गड़बड़ा गया, क्योंकि मैंने उसमें टमाटर मिला दिया था।

पर मुझे तो वह अच्छा लगा। गौतम ने,प्लेट खिसकाते हुए कहा, "इसमे अंडा डालना तो भूल ही गए।"

फिर मैंने अपनी 'बेस्ट सेलर किताब का नाम '101 फेल्ड ऑमलेटस रखने का निश्चय किया।

मुझे दूसरे लोगों को खाना बनाते हुए देखना बहुत अच्छा लगता है—यह आदत मुझे बचपन में ही पड़ गई थी। जब मैं अपनी नानी को किचन में स्वादिष्ट करी कोप्ता और कस्टर्ड बनाते देखता था, मैं उनकी मदद करने की कोशिश किया करता था; पर जल्द ही यह सब बंद हो गया। एक बार उन्होंने बहुत सारी करी बनाई थी, उसमें एक कप मसाला

डालने को कहा, पर प्रयोग धर्मी बनते हुए मैंने उसमें एक कप चीनी डाल दी। फलत: एक बहुत मीठी करी बन गई। मेरा एक और आविष्कार।

मुझे नानी की रसोईवाली कहावतें अच्छी तरह याद हैं। उसमें से कुछ पेश हैं—

"हर चीज बनाने में एक प्रकार की कला चाहिए। चाहे वह दलिया बनाना क्यों न हो?"

"घर की आधी रोटी विदेश की पूरी से बेहतर है।"

"खाना-पीना आदमियों को सोचने से अलग नहीं रखना चाहेगा।"

"एक खाली तश्तरी बेहतर है। उसमें छोटी सी ही मछली हो।"

और उनकी प्रसिद्ध उक्ति, जिससे वह सबको डाँटती थी। जब भी हम ज्यादा खाना खाते थे, वह कहती थी—अपनी जीभ को अपना गला मत काटने दो।

जहाँ तक दलिया बनाने का सवाल था। यह भी कोई आसान काम नहीं था। मैंने कुछ प्रयास किए, पर वे हमेशा ही कुछ गुठली-गाँठे बनकर रह गई।

"यह क्या है?" गौतम ने जरा संदेह से पूछा, जब हमने उसे थोड़ा सा दलिया दिया।

"दलिया।" मैंने कहा, "यह उन बहादुर स्कॉटिश हाइलैडास द्वारा खाया जाता है, जो हमेशा अंग्रेजों से लड़ते रहे।"

"और क्या वे जीत गए?"

"वेल...अरे," अमूमन नहीं। पर वे संख्या में कम थे।

उसने फिर दलिया की ओर देखा और कहा, "कभी और खाएँगे।"

अतएव थ्योरी की सलाह क्यों न मानें और जीवन को सरल बनाएँ। सरलीकरण। सरलीकरण या साधारण सैंडविचेज।

इनको (सैंडविचेज) बनाना, ज्यादा कठिन नहीं होना चाहिए। मैंने तय किया यह तो केवल ब्रेड और बटर था, पर क्या तुमने उनको स्लाइसों में काटने की कोशिश की। कभी मत करना, यह बहुत खतरनाक है। अगर आप पियानिस्ट हैं, तो आप अपना पूरा कैरियर (जीवन) दाँव पर लगा रहे हैं।

आप अपनी ब्रेड स्लाइस तैयार करिए, उसमें अच्छी तरह मक्खन लगाइए। उसके ऊपर चीज, टमाटर, लेटूस, खीरा और जो चाहिए रखिए। जोश में यह मैं तह पर लगाए जा रहा हूँ। अब उसके मुँह में पानी लानेवाले चीज पर एक और मक्खन लगा ब्रेड रखिए और उसे दो हिस्से में काटने की कोशिश कीजिए। नतीजा हर चीज फिसल जाती है और टेबल पर बिखर जाती है।

"अब देखिए, आपने क्या कर डाला।" गौतम ने ओलिक हार्डी के अंदाज में कहा।

"कोई बात नहीं।" मैंने उससे कहा, प्रैक्टिस मेक्स परफेक्ट (अभ्यास करने में कुशलता आती है।)

और अगले कुछ ही दिनों में आप बॉण्ड की सैंडविचेज बनाने की पुस्तक को बेस्ट सेलर की लिस्ट में पाएँगे।

# खून का प्यासा अदभुत प्राणी

"ल गभग 15 साल पहले मैंने राजपुर में एक पोखर ढूँढ़ निकाला। वह खूब घने साल के पेड़ों से ढका हुआ था। ठंडा और आमंत्रित करता हुआ लग रहा था। मैं कपड़े उतारकर उसमें कूद गया। मेरी आशा के विपरीत पानी बहुत ठंडा था। वह बर्फ की तरह ठंडा था और ऐसा लग रहा था जैसे कि ग्लेशियर से सीधा आया हो। मेरे खयाल से वहाँ धूप बहुत कम देर तक पड़ पाती थी। तेजी से हाथ-पैर मारता हुआ तैरकर मैं दूसरे किनारे पर पहुँचा और बाहर निकलकर पत्थरों पर आ गया—काँपते हुए।

मेरा तैरने का मन था, अतएव मैं धीरे-धीरे बेस्ट स्ट्रोक करते हुए मध्य पूल तक पहुँचा। मुझे लगा कि मेरे पैरों के बीच में कुछ लिजलिजी, चिकनी चीज आ गई है। मुझे न कुछ दिखाई पड़ा और न कुछ सुनाई पड़ा। मैं उससे दूर तैरकर आ गया। वह चिकनी लिजलिजी चीज मेरे पीछे-पीछे आ गई। मुझे यह पसंद नहीं आया कि कोई चीज मेरे पैरों में लिपट गई। मुझे यह अच्छा नहीं लगा। वह मेरे पैरों को चूसने लगी। एक लंबी सी जीभ मेरी पिंडलियों को चाटने लगी। मैंने जोरों से अपने पैर झटके, जिससे कि वो जो भी जानवर था, मुझसे दूर चला जाए। कोई अकेला प्राणी जो छाया में थी और अपना शिकार ढूँढ़ रही थी। एक डरे हुए सूंस की तरह, जो गहरे पानी से डरती है। मैं जोरों से पैर मारता हुआ, पानी उछालता हुआ उस भयानक चीज से दूर तैरकर आने के लिए तैरा।

पानी से सुरक्षित बाहर निकलकर मैंने एक धूपवाला गरम पत्थर ढूँढ़ा और उस पर खड़ा हो गया तथा पानी की ओर देखने लगा।

कोई भी चीज वहाँ हिली नहीं। तालाब की सतह बिना हलचल के और शांत थी। बस कुछ पत्तियाँ उसमें तैर रही थी, न ही कोई मेंढक था, न ही कोई मछली थी और न ही कोई पानीवाली चिडिय़ा थी वहाँ। वह भी अपने आप में बड़ी अजीब थी, क्योंकि आप किसी भी पोखर में कुछ जलज (पानी में रहनेवाला) प्राणियों की अपेक्षा कर सकते थे। पानी के अंदर कुछ-न-कुछ तो था। इस बात का मुझे पक्का यकीन था। कुछ ठंडे खून वाला जीव, जो कि पानी से ज्यादा गीला और ठंडा था, क्या वह कोई शव था, जो झाड़-झंखाड़ में फँसा था। मैं यह नहीं जानना चाहता था, अतएव कपड़े पहने और जल्दी से वहाँ से चल पड़ा।

कुछ दिनों बाद मैं दिल्ली आ गया और एक विज्ञापन एजेंसी में काम करने लगा, जहाँ पर मुझे लोगों को बताना था कि कैसे कोल्ड ड्रिंक्स (कोला) आदि पीकर गरमी का सामना करें, जो कि और प्यास बढ़ा देती है। जंगल में जो तालाब था वह तो भूल ही गया। अगली बार जब मैं राजपुर गया तो दस वर्ष बीत गए थे। अपना छोटा सा होटल, जहाँ मैं ठहरा था। मैं फिर घूमते-फिरते उसी पुराने साल के पेड़ों के जंगल में पहुँच गया। उसके बाद उसी पोखर के पास खिंचा चला गया। जहाँ वह पोखर था और जिसमें मैं पिछली बार

तैर नहीं पाया था। मैं वहाँ पर दुबारा तैरने के लिए ज्यादा इच्छुक नहीं था; पर यह जानने की उत्सुकता अवश्य थी कि वह पोखर अभी वहाँ पर है या नहीं?

वेल, वह वहाँ पर अभी भी था, पर उसके आस-पास की जगह काफी बदल गई थी। उसके आस-पास कई नए घर और बिल्डिंगें बन गई थीं, जहाँ पर कभी वीराना जंगल था। पूल के आसपास भी तमाम काम चल रहा था। कई मजदूर बालटी लिये और रबड़ के पाइप द्वारा उस तालाब को खाली करने में लगे थे। उन्होंने उस छोटी सी नदी की धारा को भी बाँध बनाकर रोक दिया था तथा धारा को दूसरी तरफ मोड़ दिया था, जिससे उस तालाब में पानी आता था।

एक आदमी सफेद सफारी-सूट पहने इस सब काम को देख रहा था। मैंने एक बार सोचा कि शायद यह कोई ऑनरेरी फॉरेस्ट ऑफिसर हो, पर बाद में पता चला कि वह पास में ही बने एक नए स्कूल का मालिक था।

"क्या आप राजपुर में रहते हैं?" उसने पूछा।

"किसी समय में..." मैं यहाँ रहता था, पर अब नहीं। आप इस तालाब को क्यों सुखा रहे हैं?"

"यह बहुत खतरनाक है।" उसने कहा, "हमारे स्कूल के दो लड़के यहाँ डूब चुके हैं। दोनों ही बहुत सीनियर स्टूडेंट थे। यह तालाब उनकी सीमा से बाहर है और वे यहाँ बिना किसी अनुमति के तैर रहे थे। पर आपको पता है, लड़के कैसे होते हैं। आप कोई भी नियम बनाइए, वे उसको तोडऩा ही अपना कर्तव्य समझते हैं। उन्होंने अपना नाम कपूर बताया और मुझे अपने नए बने बँगले में ले गए, जिसमें अभी हाल ही में रंग-रोगन हुआ था। उनका नौकर हमारे लिए ठंडा शरबत लेकर आया। हम एक बेंत की कुरसी पर बैठ गए, जहाँ से वह तालाब और जंगल दिखता था। एक जगह झाड़-झंखाड़ काटकर स्कूल जाने के लिए एक पथरीला रास्ता बनाया गया था। स्कूल की भी सफेदी की हुई बिल्डिंग सूरज की रोशनी में चमक रही थी।"

"क्या वे दोनों लड़के एक ही समय में वहाँ गए थे?" मैंने पूछा।

"हाँ, वे दोनों दोस्त थे। उन पर किसी पिशाच ने आक्रमण किया होगा।"

उनके हाथ-पैर तोड़े-मरोड़े हुए थे, चेहरे भी विकृत किए गए थे; पर मृत्यु डूबने की वजह से हुई थी—ऐसा मेडिकल रिपोर्ट परीक्षक का कहना था।

हम उस छिछले तालाब की ओर देख रहे थे, जहाँ पर अभी भी एक-दो मजदूर काम कर रहे थे। बाकी सब दोपहर का खाना खाने गए थे।

"शायद यह बेहतर होगा कि आप इस जगह को ऐसे ही रहने दें। इसके चारों तरफ एक कँटीले तार की बाड़ लगा दें, जिससे आपके लड़के इससे दूर रहें।"

"हजारों साल पहले यह घाटी एक जमीन से घिरा हुआ समुद्र था। अब उसमें से कुछ

तालाब और नदियाँ ही बची हैं।"

"मैं इसको भरवाकर यहाँ कुछ और बनाना चाहता हूँ।" हो सकता है, एक खुला हवादार थियेटर। हम कहीं और एक कृत्रिम तालाब बना सकते हैं।

अब तालाब पर केवल एक ही आदमी रह गया था। वह घुटने-घुटने कीचड़ में, जो मथकर ऊपर आ गया था, खड़ा था। अब जो आगे हुआ, उसे मैंने और मि. कपूर दोनों ने ही देखा।

तालाब के तले में से कुछ उठकर ऊपर आया। वह एक बहुत बड़ी जोंक की तरह लग रहा था, पर उसके सिर का कुछ हिस्सा मनुष्यों की तरह था और उसका धड़ कुछ स्क्विड या आक्टोपस (समुद्री जीव की) की तरह था। एक भीमकाय पिशाचिनी सक्कूबस। एक मुलायम और गीला-चिकना प्राणी, जो हमारे आदि काल से बचकर आया था।

एक महान चूसनेवाली क्रिया से उसने उस आदमी को चारों ओर से लपेट लिया। केवल उसके हाथ और पैर दिख रहे थे। जिन्हें वह बहुत जोरों पर निष्फल रूप से चला रहा था। सक्कूबस ने उसे खींचकर पानी के अंदर ले गया। कपूर और मैंने बरांडा छोड़कर उसकी ओर दौड़ने की कोशिश की और तालाब के सिरे पर पहुँच गए। तालाब के ऊपर जो हरी-हरी काई थी, उसमें से हवा के बुलबुले उठे। अत: ऐसे जैसे कि किसी ने बबलगम की तरह चूसकर उसने बुरी तरह क्षतविक्षत और तोड़ा-मरोड़ा और शरीर पानी के बाहर घुमाकर हमारी ओर फेंक दिया।

मृत और डूबा हुआ और उसके शरीर से सारे द्रव चूसे हुए। जाहिर है, अब उसके बाद पूल पर और आगे कोई काम नहीं हुआ लोगों को यह बताया गया कि एक मजदूर फिसलकर गिर गया था, और पत्थरों पर गिरने से उसकी मृत्यु हो गई थी। कपूर ने मुझे कसम दिलवाई की इस घटना के बारे में मैं किसी को कुछ नहीं बताऊँगा। इसका स्कूल बंद हो जाएगा, यदि इस तरह की अजीब घटनाएँ डूबना और दुर्घटना द्वारा मृत्यु उसके आस-पास और हुई, पर उसने उस जगह को अच्छी तरह चारदीवारी से घिरवा दिया, जिससे उसके स्कूल या बँगले से वहाँ कोई पहुँच ही न सके। अब जंगली पेड़ों, झाड़-झंखाड़ों ने उस जगह जानेवाले रास्ते को पूरी तरह ढक लिया है।

मानसून की बरसात में वह तालाब फिर भर गया। यदि आप जाना चाहते हैं तो मैं बता सकता हूँ कि वहाँ कैसे पहुँच सकते हैं, पर मैं आपको सलाह दूँगा कि आप वहाँ तैरने का प्रयास कभी न करें।

# एक क्रिस्टल बॉल में : मसूरी का एक रहस्य

"शरलक होम्स के रचयिता कानन डॉयल को असाधारण आपराधिक मामले में जीवन-पर्यंत दिलचस्पी रही और दुनिया भर से उनके दोस्त बहुधा अपराध और उसकी खोज के बारे में उनके दिलचस्प विवरण से अवगत कराते रहते थे। इसी तरीके से उन्हें मिस फ्रांसिस गारनेट ओरमे के भारतीय हिल स्टेशन मसूरी में अजीब हालात में हुई मृत्यु के बारे में पता चला। यहाँ पर ऐसी हत्या थी, जो कि तंत्र-मंत्र और आपराधिक रहस्य का अनोखा मिश्रण था। (ऐसा ना समझाया जानेवाला, जैसाकि कानन डॉयल ने अपने आप कोई बुना हो।)

अप्रैल 1912 में (जहाज 'टाइटेनिक के डूबने से कुछ पहले) अपने ससेंक्स के पड़ोसी रुडयार्ड किपलिंग का एक पत्र मिला—

"प्रिय डॉयल"

भारत में एक हत्या हुई है। मसूरी में सुझाव द्वारा हत्या, जो कि अपने समय की बहुत ही अनोखी चीज है, जो कि कभी रिकॉर्ड की गई है। इसमें हर चीज ऐसी होने की संभावना नहीं है और इस मामले में भी पहली नजर में असंभव है।

किपलिंग को इस केस के विवरण अपने एक दोस्त, जो इलाहाबाद में 'पॉयनियर में काम करता था। जहाँ वह 1880 के दशक में काम करते थे, उससे मिला था। किपलिंग ने इस पत्र के अंत में डॉयल को लिखा था—

"केवल मनोविज्ञान विवरण से परे है।"

डॉयल इस केस में कुछ और जानने को उत्सुक थे, क्योंकि भारत से अपनी कहानियों के लिए पहले भी काफी सामग्री मिली थी। जैसे 'साइन ऑफ फोर और अन्य कहानियों के लिए किपलिंग का कामी अपराध और उसकी खोज की ओर झुकाव था। जैसाकि उनकी शुरुआत कहानी भारतीय पुलिस का स्ट्रलैंड दोनों लेखक इकटठा हुए या जुड़े और इस केस पर वाद-विवाद या चर्चा की, जो कि वाकई में बहुत चौंकानेवाला था।

इस हत्या का सीन मसूरी था, जो हिमालय की तलहटी में एक लोकप्रिय हिल स्टेशन था। वह शिमला (जहाँ पर वाइसराय और उनके अनुचर ठहरते थे) जैसा विशाल तो नहीं था, पर बहुत मोहक तथा दोस्ताना जगह थी। यहाँ कई होटल थे। बोर्डिंग हाउस थे, छोटा सा मिलिट्री कैंटूनमेंट और यूरोपियन बच्चों के लिए कई प्राइवेट स्कूल थे।

1911 के गरमी के 'सीजन में मिस फ्रांसिस गारनेट ओरमे मसूरी में रहने के लिए आई और उन्होंने होटल सेवॉय में एक सुइट लिया। यह एक बहुत लोकप्रिय रिजॉर्ट होटल था। 28

जुलाई को उन्होंने अपनी उनचासवाँ जन्मदिन मनाया। वह जॉर्ज गारनेट ओरमे, जो स्किपटन इन क्रेवेन यॉर्क शायर के थे और कंट्री कोर्ट में डिस्ट्रिक्ट रजिस्ट्रार थे, की पुत्री थी। यह एक बहुत महत्वपूर्ण परिवार था, जिसकी गिनती जमींदारों और कुलीन परिवारों में होती थी।

वह सन 1893 में भारत इस इरादे से आई कि वह जैक ग्रांट जो यूनाइटेड प्रॉविसेंज पुलिस में थे, उनसे शादी करेंगी। 1894 में उनकी (मि. ग्रांट की) मृत्यु हो गई। वह इंग्लैंड वापस चली गई। अपने पिता की मृत्यु के शीघ्र ही बाद उसकी मृत्यु से दु:खी, मिस अरनेट ओरमे अध्यात्म की ओर झुकी, इस आशा में कि शायद वह उनसे कोई संपर्क स्थापित कर सकें। हमें यह याद रखना चाहिए कि इस शताब्दी (20वीं सदी) की शुरुआत में अध्यात्म का बहुत जोर था। सी एन्सेज और टेबल-रैपिंग सामाजिक परिवेश (दृश्य)का एक हिस्सा था। दोनों जगह इंग्लैंड और भारत में भी मैडम क्लाविसकी, जो आध्यात्मिकता की मुख्य प्रतिपादक थीं। वह इस काल में अपने लोकप्रियता की चरम सीमा पर थी, और अपना सीजन पड़ोस में शिमला में बिताती थी। जहाँ उनके कई अनुगामी थे।

मिस गारनेट ओरमे का जीवन अस्त-व्यस्त-सा हो गया था। वह भारत की ओर फिर खिंची और 1901 में वापस लौटकर लखनऊ में जो यूनाइटेड सर्विसेज की क्षेत्रीय राजधानी थी, रहने के इरादे से आई। वह जैक सीट के परिवार से अभी भी संपर्क में थी और उनके भाई से कभी-कभी मिलती थी। 1907 की गरमियाँ उन्होंने नैनीताल, जो लखनऊ-वासियों का प्रिय हिल स्टेशन था में बिताया। यहीं पर वह इवा माउंट स्टीफेन से मिली, जो एक गवर्नेंस थी।

इस माउंट स्टीफेन को भी आध्यात्मिकता में दिलचस्पी थी। ऐसा लगता था कि उन्होंने अपनी कई सहेलियों को बताया था (एक सीयेन्स के दौरान) कि 1911 में उनके पास काफी धन आ जाएगा।

हमें बताया गया कि मिस माउंट स्टीफेन की ज्याति कुछ ज्यादा अच्छी नहीं थी, या यूँ कहा जाए कि युद्ध जैसी भयानक बातें थीं। वह 'क्रिस्टस गेजिग में कुशल थी, और वह जो कुछ उसमें देखती थी वह एक हिंसक रूप से घटित हो जाता था। उनकी आत्माओं के संसार में कनेक्शन या केट्रोलर एक मृत दोस्त मिसेज विंटर थी।

उन दोनों को गुप्त विद्याओं में रुचि के कारण मिस मिस गारमेट और वे (मिस स्टीफेन) जब लखनऊ जाड़ों में लौटकर आई, अपनी साथिन के तौर पर रख लिया।

वहाँ पर वे इकटठे ही रहने लगी, पर गरमियों में वे लोग किसी-न-किसी हिल-स्टेशन में चले जाते थे। क्या उन लोगों में कोई गुप्त समलैंगिक रिश्ता था? यह एक बेचैनीवाला जड़हीन जीवन था, पर एक-दूसरे से तीव्र सयिन्स टेबल और क्रिस्टल-बॉल से जुड़ी हुई थी।

1911 के ग्रीष्म के मौसम में वे दोनों मसूरी, जो एक छोटा सा हिल-स्टेशन था और जहाँ

'मौसमी प्रेम-प्रसंग का प्रचलन था, जाकर ठहर गए। उन्होंने होटल में कमरे ले लिये थे। मसूरी में अभी बिजली नहीं पहुँची थी और अभी भी मोमबतियों, कैंडलबास और सड़कों पर गैस-लाइट का जमाना था। प्रत्येक घर में एक बड़ा सा पियानो होता था और यदि आप बॉल-डांस में कहीं नहीं गए तो घर पर ही गाते-नाचते थे। मिसेज गारनेट और मेरी आध्यत्मिक गतिविधियाँ इन सब मामूली मनोरंजन के साधनों से ऊपर थी। गरमी का मौसम पहाड़ों पर खत्म होने के समय 12 सितंबर को मिस माउंट स्टीफेन लखनऊ लौट आई। वे वहाँ से सब सामान समेटकर झाँसी जाने की योजना बना रही थी, जहाँ वे जाड़ा बिताना चाहती थी।

19 सितंबर की सुबह, जब मिस माउंट स्टीफेन अभी भी बाहर थी, मिस गारनेट अपने बिस्तर में मृत पाई गई। दरवाजा अंदर से बंद था। बेड के सिरहाने जो साइड टेबल थी, उस पर एक गिलास था। वह बिस्तर पर ऐसी स्थिति में लेटी थी, जिससे लगता था कि वह किसी नर्स या अंडरटेकर द्वारा इस स्थिति में लिटाई गई हैं।

इन पहेली की तरह परिस्थितियों के कारण इंडियन मेडिकल सर्विस के मंजूर बर्ड बुक, जो मसूरी के सिविल सर्जन भी थे। उनको बुलाया गया। उन्होंने शव का पोस्टमार्टम करवाया। यह आश्चर्यजनक तथ्य सामने आया कि मिस गारनेट ओरमे को प्रसिद्ध एसिड द्वारा जहर देकर मारा गया था।

प्रसिद्ध एसिड का जहर बहुत जल्दी काम करता है और यह नामुमकिन था कि 'शिकार अपने आपको इस प्रकार से व्यस्थित कर सके जिस हालात में वह पाया गया था। आया ने बताया कि वह आदमी, जो किसी के दफनाने का प्रबंध करता, उसने किसी को बड़ी रोशनदान से निकल छत पर जाते-भागते देखा था।

"हिल-स्टेशन अफवाहों और षडयंत्रों का केंद्र था और इस मामले में भी तरह-तरह की अफवाहें उड़ती रहीं। मिस गारनेट ओरमे अपच से पीड़ित रहती थी और वह अकसर सोडियम बाइकार्बोनेट की बोतल से दवा लेती रहती थी। जो कि बीच-बीच में भरवाई जाती थी। यह कहा जा रहा था कि बोतल से किसी ने छेडख़ानी की है, और उसमें कोई सफेद पाउडर मिलाया गया था। इसके डॉक्टर से अच्छी तरह पूछताछ की गई। उन्होंने एक मि.अल्फ्रेड कैपरा जो मस्तिष्क पढऩे वाले थे, उनसे भी पूछताछ की गई। उन्होंने बताया कि मिस माउंट-स्टीफेन का जब नाम आया तो वह झपटकर तेजी से कमरे से बाहर चली गई। इससे पहले कि वह उसका माइंड पढ़ते।"

कई हफ़्ते बाद पुलिस ने मिस माउंट स्टीफेन को गिरफ्तार कर लिया। यद्यपि उनके पास बहुत मजबूत सफाई थी कि वह झाँसी में थी। पुलिस ने यह सिद्ध किया कि उन्होंने मिस गारनेट पर बुरा प्रभाव डाला था कि वह एक खास समय पर अपनी दवाई लें। इस प्रकार से वह हत्यारा वहाँ न होते हुए भी उन पर सुझाव द्वारा उनकी हत्या कर सकता था। मिस अगाया क्रिस्टी ने अपने पहले 'उपन्यास द मिस्ट्रीरियस अफेयर्स ऐट स्टाइल्स (1920) में जिसमें भी जहर देने वाला अपराध की जगह से दूर था, जबकि उसका शिकार उस दवा का मारक मात्रा लेता है। संभवत: मिस क्रिस्टी ने गारनेट ओरमे केस का विवरण ब्रिटिश प्रेस में पढ़ा होगा। यहाँ तक कि हत्या का उददेश्य मोटिव भी वही

था।

मसूरी में कोई हरक्यूल पोइराट नहीं था और कचहरी में यह थ्योरी पक्की तरह से साबित नहीं की जा सकी। पुलिस का केस कभी भी बहुत मजबूत नहीं था। बेहतर होता, यदि वह आया के द्वारा बताई गई सूचना के बिनाह पर काम करते। ऐसा लगता है कि उन लोगों द्वारा ऐसा इसलिए किया, क्योंकि मिस माउंट स्टीफेन के खिलाफ मसूरी में बहुत दुर्भावना थी।

जब इलाहाबाद में 1912 में यह केस सुनवाई के लिए आया तो शहर में बहुत ज्यादा सनसनी मची। अपराध की दुनिया में रिमोट कंट्रोल द्वारा हत्या बिलकुल नवीन चीज थी, पर कई दिनों की सुनवाई के बाद और उन लेडीज के रहने के तौर-तरीके पर और क्रिस्टल गेजिंग तथा मृत्यु के साक्षय के बाद कोर्ट ने मिस माउंट स्टीफेन को निर्दोष पाया।

चीफ जस्टिस ने अपना फैसला सुनाते समय टिप्पणी की कि मिस गारनेट ओरमे की मृत्यु के सही परिस्थितियों का संभवतया कभी पता नहीं चल पाएगा। और वह सही थे।

मिस माउंट स्टीफेन ने अपने दोस्त की वसीयत के प्रॉबेट के लिए अर्जी लगाई, पर गारनेट ओरमे की फैमिली ने इंग्लैंड से उनके भाई को मुकदमा लड़ने के लिए भेजा। केस मिस्टर गारनेट ओरमे के पक्ष में गया। डिस्ट्रिक्ट जज मि. डब्ल्यू. डी. बरकिट ने मिस माउंट स्टीफेन की अर्जी यह कहते हुए खारिज कर दी कि वह धोखा था और उन्होंने मिस गारनेट ओरमे पर आध्यात्मिकता और क्रिस्टल गेजिंग के संबंध में बेजा प्रभाव डाला था। उन्होंने हाई कोर्ट में अपील की, पर हाई कोर्ट ने लोवर कोर्ट के फैसले को सही ठहराया।

मिस माउंटस्टीफेन भी इंग्लैंड वापस आ गई। हमें उनकी मानसिक स्थिति का पता नहीं; पर यदि वह निर्दोष थी तो उनके अंदर काफी कड़वाहट भर गई होगी। मिस गारनेट ओरमे के डॉक्टर की मसूरी में खूब चली हुई प्रैक्टिस भी खत्म हो गई और वह भी भारत छोड़कर चले गए। ऐसी अफवाह थी कि वह और मिस माउंट-स्टीफेन ने मिलकर साजिश रची थी कि मिस गारनेट ओरमे की तमाम संपत्ति हथिया ली जाए।

इस केस का एक और बहुत चकरा देनेवाला पहलू था—मि. चार्ल्स जैकसन इस केस से जुड़े कई लोगों के पेंटर मित्र की मिस गारनेट ओरमे की मृत्यु के दो माह बाद अचानक मृत्यु हो गई, ऊपरी तौर पर कॉलरा से। पुलिस ने उनकी इस प्रकार की अचानक मृत्यु में दिलचस्पी ली और 23 दिसंबर को उनकी लाश को कब्र से बाहर निकाला। उनका शरीर अच्छी तरह से संरक्षित पाया गया। वह संखिया के जहर द्वारा मरे थे।

यह हत्या थी या आत्महत्या थी। यह गुत्थी कभी सुलझाई न जा सकी। क्या इसका मिस गारनेट ओरमे की मृत्यु से कोई संबंध था? यह भी हमें कभी पता नहीं चल पाएगा। यदि कानन डॉयल, किपलिंग की सलाह पर यह केस ले लेते जैसे और कई केसेज लिये (इंग्लैंड में) तो शायद इसका नतीजा कुछ और होता।

अब जैसा है, हम केवल कुछ कयास लगा सकते हैं।

# अच्छा काम किया

"गार्डन के बीचोबीच कुएँ का होना बहुत खतरनाक है।" मेरे सौतेले पिता ने कहा था, इसको मेरे लौटने में पहले अच्छी तरह भर देना।

धुकी को उस पुराने कुएँ को ढकना बिलकुल पसंद नहीं था। यह वहाँ पर पचास साल से ज्यादा से है। घर बनने से भी बहुत पहले से कुएँ की दीवारों में कबूतरों की एक पूरी कॉलोनी बसी हुई थी। उनकी मुलायम गुटर-गूँ की आवाज सारे गार्डन में भर जाती थी और गरमी के सूखे दिनों में जब पानी की किल्लत होती थी, तब कुआँ एक बहुत अच्छा और भरोसेमंद पानी का स्रोत था।

भिश्ती अभी भी उसका पानी इस्तेमाल करता था। अपनी मशक को उसके पानी से भरकर यह गार्डन में जो रास्ते बने थे, उस पर छिड़काव करता था, जिससे कि धूल-मिटटी नीचे बैठी रहे, ऊपर नहीं उड़े। धुकी ने मेरी माँ से पैरवी की कि वह मेजर साहब से कहें कि कुएँ को ऐसे ही रहने दें, बिना ढके।

"कबूतरों का क्या होगा?" उसने पूछा।

"अरे, जरूर ही वे कोई और कुआँ खोज लेंगे।" मेरी माँ ने कहा, "जल्द ही इसे बंद कर दो, धुकी। मैं नहीं चाहती कि साहब आएँ और पाएँ कि तुमने इसके लिए कुछ नहीं किया।

मेरी माताजी मेजर साहब से थोड़ी डरती थीं। हम कैसे किसी से डर सकते हैं, जिन्हें हम प्रेम करते हैं। यह सवाल मुझे हमेशा परेशान करता रहेगा।

मेजर साहब की गैर-हाजिरी में जिंदगी एक बार फिर से खुशनुमा हो गई थी। मैं फिर से किताबें पढने लगा था। अपने प्रिय बरगद के पेड़ पर घंटों बैठा रहता था। बालटी-बालटी भर आम खाया करता था और गार्डन में धुकी से बातचीत करते हुए डोलता रहा था, टाइम पास करता रहता था।

न तो वह और न ही मैं मेजर साहब के वापस आने की तमन्ना रखते थे। धुकी माँ के दूसरे विवाह के बाद माँ के प्रति अपनी वफादारी और मेरे प्रति प्यार की वजह से टिका हुआ था; वास्तव में वह मेरे पिताजी का आदमी था। पर मेरी माँ हमेशा ही बहुत कमजोर और नि:सहाय-सी लगती थीं, और ज्यादातर आदमी मेजर समरस्किल के सहित उनकी ओर बहुत संरक्षा की दृष्टि से देखते यानी कि उनकी देखभाल करनी है। उसको भी वे लोग ज्यादा पसंद थे, जो उसके लिए काम करते थे।

"तुम्हारे पिता को यह कुआँ पसंद था।" धुकी ने बताया, "वह अकसर शाम को यहाँ बैठते थे। एक नोट-बुक लिए हुए जिसमें वह फूल-पत्तियाँ, पक्षियों और कीड़ों की ड्राईंग चित्र

बनाया करते थे।"

मुझे वे चित्र याद थे, और वह भी याद था कि कैसे मेजर साहब ने उन चित्रों को, नोट बुकों को अपने घर से बाहर फेंक दिया था। धुकी को भी यह सब पता था। धुकी से मैं कुछ नहीं छिपाता था।

"इस कुएँ को बंद करना एक दु:खद काम है।" धुकी ने फिर कहा, "कोई बेवकूफ या मदहोश (पियक्कड़) ही उसमें गिरेगा।"

उसने सारी तैयारी कर ली थी। साल की लकड़ी के पटरे, ईंटें, सीमेंट सब लाकर उसने कुएँ के चारों तरफ ठीक से रख दिया था।

"कल," धुकी ने कहा, "यह काम मैं कल करूँगा। आज नहीं, चिडियों— कबूतरों को उसमें एक दिन रहने दो। सुबह बाबा तुम चिडियों को कुएँ से भगाने में मेरी मदद कर देना।"

जिस दिन मेरे पिताजी वापस आने वाले थे, मेरी माताजी ने एक ताँगा किया और सामान लेने बाजार चली गईं। उन दिनों कुछ ही लोगों के पास कार थी। यहाँ तक कि कर्नल लोग भी ताँगे में आते-जाते थे। आजकल एक क्लर्क भी ताँगे में बैठना अपनी तौहीन समझता है, क्योंकि मेजर साहब शाम से पहले नहीं लौटने वाले थे। तो मैंने निश्चय किया कि मैं अपनी खाली सुबह का पूरा सदुपयोग करूँगा। मैंने अपनी सब प्रिय किताबें उठाकर आउटहाउस में ले जाकर रख दी। जिससे समय-समय पर आकर उन्हें पढ़ सकूँ। फिर मैंने अपनी जेबें आम से भर ली और बरगद के पेड़ की एक डाल पर थककर बैठ गया। जून की गरमी वाले दिनों में यह सबसे ठंड़ी और अँधेरी जगह थी।

पत्तियॉं के बीच में से मैंने देखा कि धुकी कुएँ के चारों ओर घूम रहा है। वह कुएँ को ढकने का काम करने के लिए बिलकुल अनिच्छुक था।

"बाबा, बाबा!" उसने कई बार पुकारा, पर मैं बरगद के पेड़ से हिलने को बिलकुल तैयार नहीं था। उसने कुएँ के सिरे पर लकड़ी का पटटा रखकर उसे हथौड़ी से ठोकना शुरू कर दिया। मैंने उसको बरगद के पेड़ से देखा। वह बहुत झुका हुआ और बुडढा लग रहा था।

ताँगे की घंटियों की आवाज और उसके बिना तेल लगे पहियों की आवाज से पता चल गया कि गेट पर कोई ताँगा आ रहा था। मेरी माताजी के आने का समय अभी नहीं हुआ था। मैंने घनी चिकनी पत्तियॉं के बीच से झाँककर देखा और अचंभे से टाल से लगभग गिर ही गया था। अरे, यह तो मेरे सौतेले पिता मेजर साहब थे। वह अपने आने के समय से पहले ही आ गए थे।

मैं पेड़ से नीचे नहीं उतरा। मैं अपनी माँ के आने से पहले मेजर साहब के सामने नहीं पडऩा चाहता था।

मेजर साहब ताँगा से उतरकर अपना सामान वरांडे में रख रहे थे। उनका मुँह लाल रंग का हो रहा था और उनकी हैंडल-बार मूँछे चमक रही थी और कड़ी भी थी। धुकी ने थोड़ी

अनिच्छा से उन्हें सलाम किया।

"ओह, तो तुम यहाँ हो," बुडढे बदमाश मेजर ने थोड़ा मजाक से कहा, ऐसे कि जैसे वह बहुत दोस्ताना और मजाकिया हैं, "मुझे यह गार्डेन तो बगीचे से ज्यादा जंगल दिख रहा है, धुकी समय हो गया है कि तुम रिटायर हो जाओ। और मेम साहब कहाँ है?

"वह तो बाजार गई हैं।" धुकी ने बताया।

"और वह लड़का कहाँ है?"

"आज मैंने उसे देखा ही नहीं, साहब।" धुकी ने कंधे उचकाते हुए कहा।

"डैमन।" मेजर ने कहा, "एक अच्छा घर लौटना हुआ। "वेल, कुक को जगाओ और उससे कहो हमें कुछ सोडा दे।"

"कुक लड़का तो चला गया है।"

"वेल, तब तो मेरी दुगुनी मुसीबत आ गई है।"

ताँगा वापस चला गया और मेजर साहब बगीचे की पगडंडी पर आगे-पीछे चहलकदमी करने लगे। फिर उन्होंने कुएँ पर धुकी का आधा-अधूरा काम देखा उनको मुँह बैजती पड़ गया। कुएँ तक गए और धुकी को डाँटने-डपटने लगे।

धुकी ने बहाने बताना शुरू कर दिया। उसने ईंटों की कमी के बारे में कुछ कहा, अपनी भतीजी की बीमारी के बारे में बताया और सीमेंट अच्छा नहीं था। मौसम अनुकूल नहीं था। ईश्वर भी उसके पक्ष में नहीं थे। जब इसमें से किसी आदमी थे, जो हमारे रास्ते में कभी नहीं आए और घर में जहाँ-तहाँ चॉकलेट छोड़कर चले जाते थे।

"एक अच्छे साहब," धुकी ने कहा, जब मैं उसके बगल में बुगेमविलिया के पीछे खड़ा था और उस वक्त कर्नल साहब सीढियाँ चढ़कर वरांडे में जा रहे थे। "देखो वह कितनी अच्छी तरह अपना सोला हैट पहनते हैं। उनका सिर पूरा ढका रहता है।"

"वह गंजे हैं, उसके नीचे।"

"कोई बात नहीं। मेरे खयाल से वह ठीक रहेंगे।"

धुकी ने अपने होज पाइप का सिरा नीचे गिरा दिया और पानी तेजी से मेरे पैरों के ऊपर से बह निकला। वहा मुझे हाथ से पकड़कर उस बंद कुएँ के पास ले गया, जिसके ऊपर उसने तीन मंजिला गोल-गोल सीमेंट प्लेटफॉर्म बना दिया था। जो कि अब बड़ा सा वेडिंग केक लगता था।

"हमें अपना पुराना कुआँ भुला देना चाहिए।" उसने कहा और इसे खूबसूरत बनाना चाहिए, शायद कुछ फूलों के गमलों द्वारा।

हम दोनों मिलकर फूलों के गमले लाए और उसे अच्छी तरह फर्म और जेरैनियम द्वारा सजाया और ढक दिया। हर व्यक्ति ने धुकी को उसके काम करने पर बधाई दी। मुझे केवल इस बात का अफसोस था कि कबूतर वहाँ से चले गए थे।

# भूचाल

"अगर कभी भी कोई विपत्ति आई में दादी माँ कहा करती थीं, "तो वह दादाजी को अपने बाथ-टब में पाएगी। दादाजी स्नान बहुत पसंद करते थे, जो वह एक बड़े से अलयुमिनियम के टब में करते थे और कभी- कभी तो वह एक घंटा तक लगा देते थे। जिसको वह मस्ती करना या गुलछर्रे उड़ाना कहते थे और बच्चों की तरह छप-छप करते थे।"

जब 12 जून, 1897 को वहा अपने स्नान-टब में ही थे तो बहुत बड़ा भूचाल आया, जिसने आसाम और बंगाल को हिलाकर रख दिया। इतना तीव्र भूचाल कि अभी तक ब्रहमपुत्र नदी की बेसिन (घाटी) स्थिर नहीं हो पाई है। बहुत दिन नहीं हुए, जब यह रिपोर्ट आई थी कि शिलांग का पठार जियोलॉजिक सर्वे ऑफ इंडिया से काफी दूर आगे खिसक गया है। यह शिफ्ट पिछले 80 सालों में धीरे-धीरे हो रहा है।

यदि मेरे दादाजी अपनी भूचाल वाली स्क्रैप बुक में एक और क्लिपिंग (न्यूज पेपर कटिंग) लगा देते तो एक रिकॉर्ड और दर्ज हो जाता। परंतु क्लिपिंग अभी भी लगा दी गई, क्योंकि वह स्क्रैप-बुक अब बच्चों के पास है। इस विपदा के अखबारों में विवरण, उनके अपने पत्र और संस्मरण, भूचाल की अभी हाल की घटना और उसका विस्तृत विवरण देते हैं, क्योंकि दादीजी और उनके दो बच्चे (उसमें से एक मेरे पिताजी) उस वक्त शिलांग में जो एक छोटा सा पर बहुत खूबसूरत आसाम में हिल-स्टेशन था, वहाँ रहते थे। जब भूचाल आया था और पहाड़ हिल गया था।

जैसे कि मैंने उल्लेख किया है। दादाजी अपने स्नानागार में थे, पानी उछालते हुए। जब पहली बार घों-घों की आवाज हुई, उन्होंने सुना ही नहीं; पर दादी माँ गार्डेन में थीं और गीले कपड़े डाल रही थीं या धुले हुए सूखे कपड़े उठा रही थीं। (उनको अब याद नहीं कि वह क्या कर रही थीं।) जब जानवर बड़ी अजीब सी घिनौनी डरावनी आवाज करने लगे। एक जरूरी संकेत कि कोई प्राकृतिक विपदा आने वाली थी, क्योंकि किसी भी आनेवाली प्राकृतिक आपदा का पता जानवरों को आदमियों से जल्दी हो जाता है।

कौए आसमान में काँव-काँव करते हुए उड़ने लगे। मुरगियाँ अपने पंख फडफ़ड़ाने लगीं जैसे उनका कोई पीछा कर रहा हो। दो कुत्ते, जो वरांडे में बैठे थे, एकदम से उठे और दुम दबाकर एकदम से भाग लिए दादी माँ के जानवरों की अजीबो-गरीब आवाजें सुनने के आधा मिनट बाद ही उन्हें खडख़ड़ाहट और घों-घों की आवाज सुनाई पड़ी, जैसे कोई ट्रेन आ रही हो।

शोर लगभग एक मिनट तक बढ़ता रहा और उसके बाद फिर पहली बार पृथ्वी में कंपन हुआ। इस समय तक सारे जानवर लगभग एकदम पागल-से हो गए। पेड़ों के ऊपरी हिस्से

झुले की तरह इधर-उधर जोर से हिल रहे थे, दरवाजे खट-पट कर रहे थे और खिड़कियाँ भी हिल रही थीं। दादी माँ ने बाद में बताया कि सारा घर उनके सामने झूल रहा था। उनको सीधे खड़े होने में परेशानी हो रही थी, यद्यपि यह उनके घुटने की कंपन की वजह से ज्यादा और जमीन हिलने की वजह से कम था।

पहला झटका लगभग डेढ़ मिनट रहा।

"मैं अपने टब में था। दादाजी ने अपनेवाली पीढ़ियों के लिए लिखा।

जो मैंने पिछले दो महीने में पहली बार दोपहर में लिया था। बजाय कि सुबह के एक मेरी पत्नी, बच्चे और मेरी नौकरानी सब उस वक्त नीचे थे। जब झटका आया और एक भूचाल जो हर सेकंड बढ़ रहा था। ऐसा लग रहा था, कि बहुत सारे सीपियों को एक टोकरी में रखकर तेजी से एक तरफ से दूसरी तरफ छलनी की तरह चलाया जा रहा हो। पहले तो मेरी समझ में नहीं आया क्यों मेरा टब हिल रहा है, और पानी छलककर बाहर आ रहा है। मैं उठकर खड़ा हुआ, और पाया कि धरती हिल रही है। जबकि वाश-स्टैंड बेसिन, घड़ा, कप और ग्लासेज बड़े भयानक रूप से नाच रहे थे। मैं अंदर के दरवाजे की ओर बढ़ा उसे खोलकर अपनी पत्नी और बच्चों को खोजने के लिए पर वह दरवाजा तो खुल ही नहीं रहा था, क्योंकि उसके सामने बक्से, फर्नीचर और पलस्तर सब खिसककर आ गए। पिछला दरवाजा ही बाहर निकलकर भागने का एक ही रास्ता था। मैं उसको खोलने में सफल रहा और भगवान का शुक्र है, बाहर निकल गया। छप्पर वाली छत का हर हिस्सा गिरकर मलबे के ढेर में बदल गया था। जैसे ताश के पत्तों का घर एकदम से गिर जाता है और बाहर जाने और भीतर आने के सब रास्ते बंद हो गए थे।"

"कमर में केवल तौलिया लपेटे मैं किसी तरह घर के बाहर निकलकर आया। पर वहाँ पर केवल मेरी पत्नी थी। घर का सारा सामने का हिस्सा छप्पर की छत गिर जाने से रुक गया था। इसके अंदर लोहे की रेलिंग के अंदर घुसकर मैंने घर के अन्य लोगों को बाहर निकाला। नौकर ने अपनी पीठ पर छत का भार लेकर बच्चों और मेड को बचा लिया था और वे लोग छत के नीचे दबकर मर जाने से बच गए।"

जब मुख्य भारी भूचाल खत्म हो गया तो थोड़ी-थोड़ी देर में पाँच-पाँच मिनट में छोटे-छोटे कई झटके रात भर आते रहे, पर पहले ही बड़े झटके में शिलांग शहर बिलकुल ध्वस्त हो गया था और खँडहरों तथा मलबे के ढेर में तब्दील हो गया था। कोई भी इमारत जो ईंट-गारे से बनी थी, सब नीचे आ गई थी। गवर्नमेंट हाउस, पोस्ट ऑफिस, जेल गिरकर ढेर हो गए थे।

जब जेल की बिल्डिंग गिर गई, तो सारे कैदी बजाय भागने के सड़क के मध्य इकटठे होकर बैठ गए कि सुपरिंटेंडेंट आएगा और उनकी मदद करेगा। "धरती ऊपर उठने लगी और जोर-जोर से हिलने लगी। एक छोटी सी लड़की ने, 'दि इंग्लिश मैंने अखबार में लिखा—मैं एक सेकंड तक तो अपनी साइकिल पर बनी रही, पर फिर गिर पड़ी और दौड़ने की कोशिश की, पर मेरे पाँव सड़क पर इधर-उधर कभी इस तरफ तो कभी दूसरी तरफ पड़ रहे थे। मैंने अपनी बाईं ओर बड़े-बड़े धूल के बादल देखे, जो बाद में मैंने पाया कि गिरते

हुए घर थे और मिटटी पहाड़ों पर से फिसलकर नीचे आ रही थी। मैंने अपनी दाईं ओर देखा कि जो छोटा सा बाँध टूट गया है, इस झील के अंत में उसमें से पानी तेजी से बहकर बाहर निकल रहा है। झील पर जो छोटा सा लकड़ी का पुल था, वह भी दो हिस्सों में टूट गया था और लेक के किनारे भी ढहकर नीचे गिर रहे थे और मेरे पैरों के नीचे जमीन फट गई थी। मैं डर के मारे बुरी तरह घबरा गई थी और समझ में नहीं आ रहा था कि किधर जाऊँ?"

झील एक पहाड़ की तरह ऊपर उठी और फिर एकदम से गायब हो गई। और उसके बाद एक लाल-लाल मिटटी का दलदल वहाँ बन गया। कोई भी घर पूरा साबुत नहीं बचा था। लोग इधर-उधर भाग रहे थे। पत्नियाँ अपने पतियों को खोज रही थीं, माता-पिता अपने बच्चों को ढूँढ़ने में लगे थे। उनको यह भी नहीं पता था कि उनके प्रिय जन जीवित बचे हैं या मर गए हैं। लोगों की भीड़ क्रिकेट-ग्राउंड में इकटठा हो गई थी जो कि सबसे सुरक्षित जगह मानी जा रही थी, पर मेरे दादाजी और दादीजी ने सड़क के पार एक छोटी सी दुकान में शरण ली। यह दुकान पुरानी सी जीर्ण-शीर्ण लकड़ी की थी, जो कि लगता था, कभी भी तेज हवा में उड़ जाएगी। किसी तरह से वह भूचाल को झेल गई थी।

तब फिर बारिश आई और मूसलधार यह भी बहुत असाधारण था, क्योंकि भूचाल के पहले बादलों का कहीं नामोनिशान नहीं था, पर भूडोल के 5 मिनट बाद ही असम-बंगाल रेलवे पर 100 मील की दूरी तक झटके महसूस किए गए। एक ट्रेन रामशेरनगर में पलट गई थी। एक और ट्रेन मनटोला में पटरी से उतर गई थी। चेरापूँजी पहाड़ों में हजारों लोगों की जान चली गई। अन्य क्षेत्रों में भी भारी तादाद में लोग मारे गए।

ब्रह्मपुत्र नदी का तट टूट गया और अधिकतर किसानों ने अपनी जान गँवाई। एक बाघ भी डूबा हुआ पाया गया और नॉर्थ भागलपुर में जहाँ से भूचाल शुरू हुआ था, दो हाथी बाजार में बैठ गए और दूसरे दिन सुबह तक वहाँ से हटने को तैयार नहीं थे।

शिलांग के गवर्नमेंट प्रिंटिंग प्रेस में उस समय 100 से ज्यादा आदमी काम कर रहे थे। जब कि वह इमारत भूचाल से गिर पड़ी और वे लोग उसी में फँस गए थे। यद्यपि गोरखा रेजीमेंट के लोगों ने उन्हें बचाने में काफी बढ़िया काम किया, उसमें से कुछ ही लोग जिंदा निकाले जा सके। शिलांग में जो लोग मारे गए थे। उसमें से एक ब्रिटिश अधिकारी मि. मैककाबे थे। दादाजी ने उनके ध्वस्त घर का इस प्रकार से वर्णन किया था; एक टूटी डेस्क या टूटी कुरसी, फटे हुए कालीन का एक टुकड़ा, एक जाना-पहचाना हैट जिसमें इंडियन सिविल सर्विस का प्रतीक बना था। फटी हुई किताबें यह सब उस आदमी की याद दिला रही थी, जिसके लिए आज हम शोक मना रहे थे।

जबकि ज्यादातर घर जहाँ पर खड़े थे वहीं धराशायी हो गए। गवर्नमेंट हाउस लगता है, पीछे की ओर गिरा। चर्च लाल ईंटों-पत्थरों का एक बदरूप ढेर। पियानो (ऑर्गन) भी बुरी तरह नष्ट हो गया था।

कुछ दिनों बाद हमारा परिवार कुछ अन्य शरणार्थियों के साथ कलकत्ता अपने मित्र या रिश्तेदारों के साथ ठहरने के इरादे से चल पड़ा था। यह बहुत धीमी और कठिन यात्रा

थी, जिसमें बहुत सारी रुकावटें या बाधाएँ आईं। क्योंकि सड़कें और रेलवे-लाइन बहुत ज्यादा क्षतिग्रस्त हो गई थी, और यात्रियों को कई बार सामान के ट्रॉली में ले जाना पड़ा। दादाजी एक असिस्टेंट इंजीनियर द्वारा प्रदर्शित आत्म संयम से बहुत ज्यादा प्रभावित हुए। एक स्टेशन पर उस इंजीनियर को एक तार दिया। जिसमें उसे सूचित किया गया था कि उसका बँगला बुरी तरह नष्ट हो गया है, "क्या पाशविक वाहियात काम!" उसने दु:खी होते हुए कहा, "एक तूफान में मैंने उसे ढहते हुए देखा है; पर इस बार तो भूचाल ने कमाल ही कर दिया है।"

अंततोगत्वा हमारा परिवार कलकत्ता पहुँच गया, जहाँ के निवासी संत्रास की अवस्था में थे; क्योंकि उन्होंने भी भूकंप के झटके महसूस किए थे और उन्हें डर था कि दुबारा भूचाल आ सकता है।

कलकत्ता में अन्य जगहों के मुकाबले कम नुकसान हुआ था और लोग खुले में या घोड़ा गाडियों में सोते थे। कई इमारतों की दीवारों में क्रैक आ गई थी या फट गई थी और मेरे दादाजी भी उन लोगों में से थे, जो इस बात से चिंतित थे कि जुबली डे (क्वीन विक्टोरिया की डायमंड जुबली) पर 60 तोपों की सलामी दी जाए या न दी जाए। उनको डर था कि तोपों की आवाज से तमाम कमजोर इमारतें गिर जाएँगी। जाहिर था कि दादाजी नहीं चाहते थे कि वे फिर उस वक्त बाथ-टब में स्नान ले रहे हों। तथापि क्वीन विक्टोरिया को उनको तोपों की सलामी से वंचित नहीं रखा गया। तोपें दागी गईं और कलकत्ता अपनी जगह पर ठहरा खड़ा रहा।

*Published by*

**Prabhat Prakashan**

4/19 Asaf Ali Road, New Delhi-2

e-mail: prabhatbooks@gmail.com

ISBN: 978-93-5048-973-4

**Rang-Birangi Kahaniyan**

*by* Ruskin Bond

*Edition*

First, 2012